Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Ja

सफ़र के पड़ाव

रति सक्सेना

ndation Ch

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सफ़र के पड़ाव

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No. 4153
Dated 12-12-2023

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

रति सक्सेना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ISBN : 978-81-944492-6-3

प्रकाशक :

कलमकार मंच

3, विष्णु विहार, अर्जुन नगर,
दुर्गापुरा, जयपुर-302 018

सफ़र के पड़ाव
संस्करण : प्रथम
सितम्बर, 2019
मूल्य : एक सौ पचास रुपए

© रति सक्सेना

आवरण : निशांत
कम्प्यूटर कम्पोजिंग : मीडिया चक्र
मुद्रण : गोयल ऑफसेट प्रिन्टर्स, जयपुर

प्रथम सैट में प्रकाशित किताबें :

सब कुछ जीवन (डॉ. सत्यनारायण), आवाज़ों के आस-पास (नन्द भारद्वाज), लाल बजरी की सड़क (ईशमधु तलवार), अरे भानगढ़ (कैलाश मनहर), मैं बीड़ी पीकर झूँठ नीं बोलता (चरणसिंह पथिक), मेरा हाथ छोड़ देना (बहादुर पटेल), सिनेमाई कबीर (प्रदीप जिलवान), किस्सागोई (उमा), तुरपाई (ओम नागर), दास्तान-ए-हज़रत (तसनीम खान), वह अमर कृति (भागचंद गुर्जर), द ट्रुथ बिहाइंड ऑन एयर (पुष्पेन्द्र वैद्य), अनुभूतियाँ (शकुन्तला शर्मा), दुक्के चौक्के छक्के (ओमप्रकाश नौटियाल), ये दरिया इश्क का गहरा बहुत है (पुरू मालव), कछु अकथ कहानी (कविता वर्मा), निथरा हुआ प्रेम (अंजू मोटवानी), चित्रकूट देवदत्त (कैलास), चेहरों की तन्हाइयां (ओमवीर करन), सफ़र ज़िन्दगी का (सुन्दर बेवफ़ा), टैरो ज्ञान (हिमानी अज्ञानी)

द्वितीय सैट में प्रकाशित किताबें :

हम उत्तर मुक्तिबोध हैं (ऋतुराज), तुम जैसे फूल हो कोई (चन्द्रभानु भारद्वाज), आश्रम (हबीब कैफ़ी), इंद्रधनुष (महेश कटारे), सफ़र के पड़ाव (रति सक्सेना), जमा रसीदें (मनीष वैद्य), ख़्वाब ही बस देखते रह जाएं क्या (रियाज़ रहीम), हाँ, हम राजनीति नहीं कर रहे (सेवाराम त्रिपाठी), उम्मीद के अश्वारोही (प्रेमचंद गांधी), गीतिल रातें (पंखुरी सिन्हा), हमसफ़र (मुकेश पोपली), अनुभूति (कुसुम आचार्य), भीतर कोई बंद है (क्षमा सिसोदिया), लाइलाज़ (रवीन्द्र कुमार यादव), कुछ तो कहो गांधारी (लोकेन्द्र सिंह कोट), प्रवाह (ज्ञानवती सक्सेना), ख़्वाबों में वो (प्रकाश प्रियम), वर्तिका (सुनीता बिश्नोलिया), हम्म्म...! (ज्योति विश्वकर्मा), चंद कतरे ज़िन्दगी (अलख सहगल)

SAFAR KE PADAV
by RATI SAXENA

Published by : **KALAMKAR MANCH**
Mob. 09887600026
email : kalamkarmanch@gmail.com

कलमकार मंच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

1. सिकंदर के देश में, स्त्रुगा की काव्य संध्या – 09
2. कविता के देश मेडेलिन में – 23
3. शायराना घरौंदे में एक पंछी – 39
(तुर्की के डेंजिली प्रांत से प्राचीन संस्कृति की ओर)
4. अस्मिता की लड़ाई और भाषाई भूमिका
वैल्श से ज़्यादा कौन सिखा सकता है – 64
5. एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड – 80

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सफ़र के पड़ाव

उगते सूरज के ऐन नीचे
तीन परिंदे
डैने पसार छूट चले हैं
खुले आसमान में
खुलते, सिकुड़ते
फिर खुल जाने को फड़फड़ाते

समझ लिया डैनों ने दिशाओं का विस्तार
मुड़ गए पंजे बिछुड़ी दिशा की ओर
पंखों ने समझ लिया
सफ़र का पड़ाव

लक्ष्य की ओर
मुड़ गया समूचा आसमान
तभी टपक पड़ा नन्हा सा पर
जड़ में खूनी रंगत लिए

सफ़र की सफलता का
क्या कोई और सबूत चाहिए?

पंखों में फड़फड़ाहट तो बहुत छोटी उम्र से थी। वह वक़्त था जब लड़कियों का देहरी पार करना, छज्जों से टंगना, दुपहरी में छत पर जाना वर्जित था, ख़ासतौर से उस परिवार में, जहाँ पाँच-पाँच बेटियों का जत्था हो और परिवार पर आन की तलवार लटकती रहती हो, लेकिन पंखों को खुलने के लिए बस एक अदद आसमान की ज़रूरत होती है। सफ़र से कुछ परिचय बचपन में हो गया था, जब छुट्टियों में जयपुर से मामा के घर जाना होना था, महिला डिब्बे की ठेलमठेल में खुली खिड़की से डिब्बे में होल्डाल बक्सों के साथ सरकाया जाता था। पच्चीस की सीट वाले डिब्बे में चालीस औरतें और उनके कुल मिलाकर कम से कम साठ बच्चे अंदर कर दिए जाते थे,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोयले वाले इंजन धुआँ उगलते, कोयला थूकते खरामा-खरामा चला करते थे, फिर भी बक्सों, होल्डालों पर सिकुड़ कर अपनी माँ और बहनों को देखती बच्ची के लिए यह यात्रा भी मज़ेदार थी। खिड़की पर अधिकार किसी बच्चे को मिल नहीं सकता था, लेकिन दूर से भी खिड़की की उलटी दिशा में जाते दरख़्त और खेत-खलिहान मन को मोह लेते थे। कसम लो, कि किसी बच्चे को शिकायत होती।

दूसरा अनुभव पिता के तबादले के बाद सामान सहित नए ठिकाने पर फर्स्ट क्लास के डिब्बे में जाना ही सफ़र का कारण था, दोनों तरह के सफ़र में बेहद अंतर था। मामा के घर जाने के लिए हम सब ठूसम-ठूस होते, चिल्ल-पौं मची रहती, लेकिन आपस में पूरी-पराठा बाँटते हुए, अचार की फाँक चूसते हुए सब बच्चे दोस्त भी हो जाया करते थे, इस घुटन में सफ़र की आज़ादी महसूस होती थी। पिता के तबादले के वक़्त हम लोग पहली श्रेणी के डिब्बे में जाते, फिर भी पिता की घूरती आँखों के सामने चुप बैठे रहने से यह सफ़र बेहद फीका हो जाता, क्योंकि हर वक़्त लगा रहता कि हम हर क्षण देखे परखे जा रहे हैं। जब पहली-पहली बार साइकिल पर कैंची चलाना शुरू किया तो उड़ने का सा एहसास होने लगा था। यह उड़ान काफ़ी वर्षों साथ-साथ चली। फिर कुछ और सफ़र भी हुए, जैसे कि गाइडिंग के कैम्पों में टीचर के साथ जाना, इनमें ख़ास था गाइडिंग की एक महीने की जम्बूरी के लिए स्पेशल रेल से यात्रा। अन्ततः सफ़र का दायरा छोटा होता गया, यूनिवर्सिटी में पढ़ते वक़्त बस से जाना शुरू किया, तो हमेशा चक्कर लगा कर जाने वाली बस को ही पकड़ा, कारण बड़ा अजीब था कि मुझे खिड़की पर बैठना इतना सम्मोहित करता था कि बखान नहीं किया जा सकता। बस ऐसे ही पलों में कहीं मन में एक इच्छा जगी कि एक ऐसी रेलगाड़ी में बैठूँ, जो कभी चलना बंद ही ना करे। ईश्वर ने भी न जाने कैसे मन की बात सुन ली, शादी हुई तो धुर केरल में, जहाँ जाने के लिए मद्रास से रेल बदलते हुए तीन-चार दिन लगा करते थे। उन दिनों न तो एयरकंडीशन डिब्बे होते थे और न ही फर्स्ट क्लास में जाने की औकात, लेकिन उन दिनों सैकंड क्लास के डिब्बे में भरी गर्मी में भी खटर-खटर सफ़र करना भी मज़ेदार ही लगा, बाद में तो बच्चे भी इस सफ़र के आदी बन गए।

लेकिन अब वक़्त बदल गया। खिड़की से बाहर झाँकते हुए हम अपने भीतर झाँकने लगते हैं। दृश्य कुछ समय तो आकर्षित करते हैं, किन्तु ज्यों ही उनकी पुनरावृत्ति होने लगती है, हम अपने भीतर झाँकने लगते हैं, अपने से बतियाने लगते हैं। मेरे साथ तो अकसर ऐसा होने लगा है, मैं बार-बार अपने को झंझोड़ती कहती हूँ- अरे! क्या सोच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रही हो, इन दरख़्तों से संवाद करो, इन बादलों को निहारो। कालिदास ने हिमालय से निहारा... तुम रेल की खिड़की से निहारो..., लेकिन मैं बार-बार अपने भीतर सरक जाती हूँ... बाहर सब का आना-जाना चलता रहता है, मैं अपने आप से बतियाती रहती हूँ। फिर मुझे ऐसा लगता है कि बादल भी मेरे संवाद में शामिल हो जाते हैं और बच्चों की तरह दौड़ते मेरा पीछा करते हैं। मैं खिलखिला उठती हूँ और उन्हें अपनी बातों में शामिल कर लेती हूँ। आज मैं सोच रही हूँ संबंधों के बारे में... समाज ने ना जाने कितने संबंध बनाए या फिर कहें तो उन्हें खानों में रख कर नाम दे दिए, लेकिन क्या संबंधों का कोटा खत्म हो गया? मैंने बादलों से पूछा... क्या तुम लोग भी इसी तरह संबंधों को नाम देते हो और बाकी संबंधों को खारिज कर देते हो? उन्होंने कहा- नहीं, हमारे आसमान में हर पल संबंध जगते हैं और बुझते हैं, जब एक परिंदा हमारे बीच में से गुज़रता है, तो हम उसके पंखों से यह पता लगा लेते हैं कि कहाँ है हमारी यात्रा, परिंदे के पंखों का हमारे जल कणों से संबंध उतना ही स्थिर है, जितना कि तुम लोगों का ज़मीन से।

मैंने कहा- अरे! कहाँ? हम लोग ज़मीन से प्यार करते ही कहाँ हैं? हमेशा तुम्हारी तरह आसमान में दौड़ लगाने का सपना देखते रहते हैं।

बादलों ने कहा- तभी तो तुम लोग ख़ुश नहीं रहते... जो होता है, उससे भागते हो और जो नहीं होता, उसके सपने देखते हो।

मैंने भी पलट कर कहा- तभी तो हम आदमी हैं... बादल नहीं।

बस इसी कल्पना ने साहित्य दिया और साहित्य ने भ्रमण, सबसे पहले अपने देश का भ्रमण करवा दिया, उत्तर, दक्षिण, पूरब सभी जगहों में संक्षिप्त सफ़र होते रहे। असम से लेकर जम्मू तक, त्रिवेन्द्रम, मद्रास, बेंगलूरु के साथ-साथ छत्तीसगढ़ तक की यात्रा हो गई, लेकिन साहित्य के माध्यम से परदेस का सफ़र 2009 से ही शुरू हुआ, उसका माध्यम भी कविता बनी। वह भी इसलिए कि दक्षिण में होने के कारण अपनी कविताओं को अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ ब्लॉग में डालने का काम सन 2000 के आस-पास ही कर लिया था, जिन पर एक इतालवी कवि की नज़र पड़ी, उन्होंने अनुवाद की पेशकश की तो बात को गंभीरता से नहीं लिया, लेकिन कवि को कविताएँ बेहद पसन्द आईं, तो उन्होंने न केवल उन्हें इतालवी में अनूदित किया, बल्कि छोटी-सी किताब के रूप में छाप कर मोंज़ा में होने वाले कविता फ़ेस्टिवल में नाम दिया। वहीं से विदेशी सफ़र की तैयारी हुई। कविता की दुनिया ऐसी ही है कि एक कवि दूसरे कवि का नाम देता जाता है और इस तरह कड़ी से कड़ी जुड़ती जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ यादगार यात्राओं का ताना-बाना पिछली किताब 'चींटी के पर' में बुना था, कुछ को अब लेकर आ रही हूँ, हालाँकि यह सफ़र का पड़ाव है, भ्रमण की इच्छा ज़िंदा है, आस्ट्रो अर्थराइटिस से जूझते हुए भी, दर्द को साथी बनाते हुए भी, यह सफ़र का पड़ाव होगा, अगला सफ़र जल्दी शुरू होगा, इसी आशा से।

पंख थक जाए उससे पहले, पहले का हिसाब तो कर ही लेना चाहिये।

- रति सक्सेना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिकंदर के देश में, स्त्रुगा की काव्य संध्या

(स्त्रुगा पोइट्री इवनिंग)

20 अगस्त 2010

ज़्यादातर आक्रमणकारी दुश्मनी के दायरे में आ जाते हैं, लेकिन कुछ ऐसे हैं, जो दिलों के तार जोड़ते जाते हैं। सिकंदर संभवतया उन कतिपय योद्धाओं में अग्रणी माना जा सकता है। पता नहीं ये सिकंदर की आत्मा है या फिर इस देश की मिट्टी, जो आज भी पुरातन कलाओं और संस्कृति के प्रति जागरूक है। सिकंदर की जन्मभूमि मेसीडोनिया के एक छोटे से प्रांत में, नदी और झील के संगम में कविता की जो लहर 1962 में शुरू हुई, वह आज भी बह रही है। इसे स्त्रुगा पोएट्री इवनिंग के नाम से जाना जाता है। मेसीडोनिया की ख़ूबसूरत झील है ओहरिड, और इसे काटती हुई एक नदी है ड्रिन, इसके ऊपर एक सुंदर पुल है, जिस पर हर वर्ष अगस्त महीने में पोइट्री फ़ेस्टिवल मनाया जाता है, जो यहाँ से शुरू होकर मेसीडोनिया के अन्य शहरों में फैल जाता है। सबसे पहले 1962 में मेसीडोनिया के प्रसिद्ध कवि konstantin और Dimitar Milndinar के सम्मान में इस फ़ेस्टिवल की शुरूआत हुई थी। फ़ेस्टिवल के आरंभ में मेसीडोनिया के प्रसिद्ध कवि का लोकप्रिय गीत गाया जाता, T'gaza gug ke ..., जिसे उन्होंने रूस में रहते हुए युवाकाल में लिखा था, इसका अर्थ है दक्षिण की यादें। यह गीत आज तक कार्यक्रम के आरंभ में गाया जाता है। इस वर्ष 49वां पोइट्री फ़ेस्टिवल मनाया गया, जिसमें विश्व के साठ कवियों के साथ मेसीडोनिया के क़रीब पचास कवियों ने भाग लिया, कवियों का चयन पूर्व प्रतिभागियों की सलाह पर किया गया। मेरा नाम मेसीडोनिया के निकोला और वियेना के पीटर ने दिया था। जब मुझे आमंत्रण मिला, तो मैं इसलिए भी उत्साहित थी कि सिकंदर के देश में जाने का मौका मिलेगा। इस बार वीज़ा के लिए ज़्यादा परेशानी नहीं हुई, ट्रेवल एजेंट ने ही वीज़ा का काम करवा दिया, बस समस्या यह थी कि मुझे दो वीज़ा लेने पड़े, क्योंकि पीटर वाग ने वियेना में आयोजित Hofleier Donavweilen फ़ेस्टिवल में भाग लेने के लिए भी आमंत्रित किया, जो स्त्रुगा के तुरंत पश्चात होने वाला था। कृत्या फ़ेस्टिवल की तैयारी ने मुझे ज़्यादा सोचने का समय भी नहीं दिया, बस किसी तरह सामान बाँध-बूँधकर मैं इस्तांबुल के रास्ते स्त्रुगा पहुँच गई। यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आयोजन इतना पुराना है कि आयोजन की रूपरेखा निश्चित हो गई है। आपको रिसीव करने वाले ड्राइवर से लेकर होटल की व्यवस्था तक। नदी और झील के तीर पर एक होटल है, जिसे नदी के नाम पर ड्रिन होटल के नाम से ही जाना जाता है।

इसको फ़ेस्टिवल के लिए ख़ासतौर से बनवाया गया है। बेहद ख़ूबसूरत होटल है यह, गोलाकार, बीच में खुलता-सा आंगन। मेज़बानों के नाम पर ज़्यादातर युवा लड़कियाँ थीं, जो बेहद चुस्ती से काम कर रही थीं। मेरे लिए सब कुछ नया-नया-सा था, भाषा की भी समस्या थी, क्योंकि यहाँ अंग्रेज़ी जानने वाले गिनती के ही लोग थे, हाँ, यदि फ्रेंच और जर्मनी आती, तो शायद काम चल जाता। मैं क़रीब 18 घंटे से घर से बाहर थी, इसलिए कमरे में जाकर नहाना और सोना ही सबसे बड़ा काम लग रहा था। समय का भान मिट गया था, मैं नीचे गई, तो पता चला कि खाना लग गया है, हम जाकर भोजन कर सकते हैं। भोजनशाला में तरह-तरह के यूरोपियन पकवान थे, ज़्यादातर मांसाहारी, लेकिन फल देखने लायक थे। मैंने फलों पर ज़ोर देकर थोड़ा बहुत खाया और कमरे में आ गई, दूसरे दिन हमें क़रीब नौ बजे हॉल में इकट्ठा होने की सूचना दी गई थी। अभी तक सारे कवि नहीं आ पाये थे, लेकिन जो थे, वे सब नदी के मुहाने पर चलते हुए एक उपवन में जा पहुँचे। यहाँ अभी तक के 'golden wreath' सम्मान से सम्मानित कवियों ने पौधे रोपे थे, जिनमें से कुछ अच्छे ख़ासे दरख़्त बन चुके थे। मैं अज्ञेय जी द्वारा रोपा दरख़्त खोजना चाहती थी, लेकिन खोज नहीं पाई। इस वर्ष के विजेता कवि बुल्गेरिया के Lyabomit Levder हैं, जिनकी क़रीब पचास पुस्तकें हैं। पहली बार बुल्गेरिया के किसी कवि को सम्मान दिया जा रहा था, जिसका स्वागत पूरे देश ने किया था। अंतिम कार्यक्रम में तो बुल्गेरिया के प्रेसीडेंट ने शिरकत कर सभी को वाइन पार्टी दी थी। मैं सोच रही हूँ कि हमारे देश के कितने पाठकों या कवियों को जानकारी भी है कि यह पुरस्कार अभी तक मात्र एक भारतीय कवि को मिला है, जिनका नाम अज्ञेय है। हम कितना गर्व कर पाते हैं इस उपलब्धि पर? वस्तुतः गोल्डन रीथ पुरस्कार विश्व का सबसे बड़ा पुरस्कार है, जो मात्र कविता के लिए है। यह सम्मान कवियों के लिए नोबल पुरस्कार से भी बड़ा है। जब Lyabomit Levder ने पौधा रोपा, तो मैंने भी एक फावड़ा मिट्टी अपने देश के नाम से डाल दी। मन में अज्ञेय जी को प्रणाम किया। इसके बाद हम लोगों को नदी के तट पर जलपान के लिए इकट्ठा किया गया, हम ओहरिड झील के नज़ारे का आनन्द लेते हुए चायपान करने लगे। तभी एक टीवी प्रोड्यूसर ने मुझसे कहा कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे उन कवियों का साक्षात्कार करना चाहते हैं, जो दूर के देशों से आए हैं। यूरोपीय कवि तो साधारणतया आते ही रहते हैं, एशिया से किसी का आना मायने रखता है। मुझे अच्छा लगा कि उनकी फिल्म की शुरूआत भारत से हुई। इंटरव्यू अच्छा रहा, दरअसल उन्होंने भारतीय कविता के बारे में पूछा ही नहीं था, वे तो बस अपने देश और धरती के बारे में राय जानना चाह रहे थे। इसके उपरांत प्रेस रिलीज था, जिसमें पुरस्कृत कवि से सवाल किए जाते थे। मैंने भी एक सवाल पूछा कि - इस ज़मीन पर पैर रखते ही मुझे लगा कि यह देश मेसीडोनिया भी अपने पड़ोसी देशों के द्वारा वैसा ही बर्ताव झेल रहा है, जैसा कि भारत। यानी कि विरोध की राजनीति और आतंकवादी समस्या इस देश को भी है, जो एक समय विश्व विजेता सिकंदर की भूमि था, क्या हम सब कभी मिल कर स्नेह और भाइचारे का आह्वान करेंगे?

मेरा सवाल अनुवाद द्वारा सम्मानीय कवि को पहुँचा दिया गया। उनका जवाब काफ़ी कुछ पुस्तकीय-सा लगा... भारत दर्शन की भूमि है, जो प्यार और भाईचारे का संदेश देती है। आपके यहाँ अमृता प्रीतम थीं, जिन्होंने प्रेम की कविताएँ लिखीं। मैं जवाब से संतुष्ट नहीं थी, लेकिन यह जानकर ख़ुश हुई कि अमृता प्रीतम को चाहने वाले यहाँ भी हैं। प्रेस रिलीज़ के बाद वाइन पार्टी थी, जिसमें कुछ उन कवियों से मुलाकात हुई, जिन्हें मैं कृत्या के कारण पहले से जानती थी, लेकिन मिली नहीं थी। वाइन के साथ बहुत मात्रा में चबेना था, वह भी मेवे का, तो चबा लिया और दोपहर के भोजन की छुट्टी कर नींद पूरी करने चली गई। अभी तक हमें मालूम नहीं था कि हमें कब कविता पढ़नी है और कौन-सी। उन्होंने छह महीने पहले ही कविताएँ मंगवा ली थी। मैंने उस वक्त बिना सोचे समझे भेज दी थी, लेकिन अब याद भी नहीं था कि कौन-कौन-सी भेजी गई थीं।

शाम को हमें सूचना मिली कि मेरा नाम भी ओपनिंग सेरेमनी में पढ़ने वालों में है, मैं अपने साथ एक काली साड़ी लाई थी, हालाँकि जेवर कुछ नहीं रखा था, पिछली यात्रा में हुई चोरी से डरी हुई थी, इसलिए काफ़ी कम सामान लाई थी। तब तक पता चला कि मुझे भाषा नामक कविता पढ़नी है। ओपनिंग से पहले फिर से वाइन पार्टी थी, अब तक काफ़ी लोग आ चुके थे, कुछ जाने-पहचाने लोग भी थे, जैसे मरीना, ओदवे आदि। मेसीडोनिया के सांस्कृतिक मंत्री और स्कोपये के मेयर सभी ने कवियों का स्वागत किया। इसके बाद हमारा क़ाफ़िला नदी के किनारे चल दिया। सैकड़ों लोग हमारे साथ थे, हम सब मस्ती में चले जा रहे थे। एक थिएटरनुमा इमारत जिसका नाम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था, हाउस ऑफ पोएट्री, के सामने जाकर हम रुक गए। वहाँ पूरे यूरोप से पत्रकार जुटे हुए थे, हर पल रोमांचकारी लग रहा था। अचानक मेसीडोनिया की मस्त-सी धुन बजने लगी। लाल कफ़्तान पहने क़रीब दस-बीस लड़कियाँ हाथ में मशाल लिए थिएटर की सीढ़ियों पर दोनों ओर खड़ी हो गईं। तभी सांस्कृतिक मंत्री ने जाकर मशाल जलाई। काफ़ी कुछ ग्रीक के ओलंपिक मशाल जैसे ही। मशाल जलते ही पास के ग्राउंड से आतिशबाजी शुरू हो गई। हज़ारों की संख्या में लोग घेरा बना कर खड़े थे, बच्चों से बूढ़े तक। इस उत्सव के प्रति कितना प्यार है यहाँ के आम आदमी के मन में, इसकी जानकारी मुझे सुबह ही मिल गई थी, जब मैंने एक वयस्क व्यक्ति को स्कूल की नोटबुक हाथ में लेकर हम सब कवियों के हस्ताक्षर लेते देखा था। मैं भींज गई थी उस अबोले प्यार से, वे हमारी भाषा नहीं जानते, बस इशारे से कह रहे थे कि हम उनकी नोटबुक में कुछ लिख दें। आधे कवियों को ओपनिंग में भाग लेना था और आधे को अंतिम ब्रिज कविता में। मैंने ओपनिंग को चुना था, जिससे बाद में बेफ़िक्र रहूँ। हाँ, तो मैं बता रही थी कि कविता की मशाल जली, फिर आतिशबाजी। एक पुरुष अभिनेता ने मेसीडोनियन भाषा में, T'gaza gug ke..., गीत गाया, फिर एक स्त्री अभिनेता ने उसका अंग्रेज़ी अनुवाद। भीड़ का एक रेला थिएटर की ओर चल दिया। कवियों को अलग मार्ग से भीतर ले जाया गया। भीतर बेहद ख़ूबसूरत मंच था, जिस पर हम लोगों को बैठा दिया गया। सबसे पहले Jubomir Levcev का सम्मान किया गया। इसके तुरंत पश्चात कवि पाठ आरंभ हुआ। कविता मूल भाषा में पढ़ी गई, उनका अनुवाद मेसीडोनियन भाषा में स्क्रीन पर दिखाया गया। अनुवाद पढ़ने का इंतिज़ाम शायद हो नहीं पाया था। जो भी हो पाठ बेहद उम्दा हुआ, सारे कार्यक्रम का देशभर में सीधा प्रसारण हुआ था। कविता पाठ समाप्त होते-होते आधी रात बीत गई, लेकिन स्त्रुगा अभी जग रहा था, रातभर युवा कवियों का पाठ जो चलना था, जिसका नाम था 'नाइट विदआउट पंक्चुएशन', जिसमें इस्टोनिया के युवा कवि सिम केरा की कविताओं का पाठ था। हर वर्ष एक युवा कवि की पहली पुस्तक को पुरस्कार मिलता है, इस बार इस्टोनिया के युवा कवि को यह सम्मान मिला था, जिसे स्त्रुगा ब्रिज अवॉर्ड के नाम से जाना जाता है। इसके उपरांत संगीत का कार्यक्रम भी था। भारतीय वक़्त के अनुसार सुबह हो चली थी, मैं युवा कवियों को सुनने का लोभ छोड़ कर सोने चली गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

21 अगस्त 2010

दूसरे दिन की शुरूआत सिम्पोजियम से थी। विषय था, मीडिया और कविता। जैसा प्राय: होता है, श्रोताओं की उपस्थिति काफ़ी कम थी। अधिकतर पाठ मेसीडोनियन भाषा में हुआ, जैसा प्राय: भारत में होता है, देशीय भाषा में प्रस्तुत लेख काफ़ी खिंच जाते हैं। मेरा नम्बर काफ़ी बाद में आया। मुझसे पहले आयरलैंड के Gabriel Rosenstock ने लंबे भाषणों पर व्यंग्य कसते हुए कहा- मेरा भाषण भी काफ़ी लंबा था, लेकिन मैंने कल अपनी क़मीज़ धुलने को दी तो भूल से मेरा लेख भी उसकी जेब में रह गया, तो वह भी सिकुड़ गया। उनका यह व्यंग्य हम विदेशी वक्ताओं के कम लंबे भाषण का आधार बन गया। इस उत्सव में मेसीडोनिया के युवा कवियों को बड़ा आयाम देने का काम भी होता है। हर वर्ष उनकी कविताओं का विदेशी भाषा में अनुवाद करवाया जाता है। इस बार सारा अनुवाद Flaman भाषा में करवाया गया था। शाम को चार बजे से उसी अनूदित भाषा में पढ़वाया गया। इसके उपरांत मेसीडोनिया के प्रसिद्ध कवियों का पाठ था। अपनी भाषा और साहित्य के प्रति यह अनुराग मुझे केवल मेसीडोनिया में दिखाई दिया। इस बीच कुछ कवियों ने प्रोग्राम बनाया कि हम सब ओहरिड झील के केन्द्र ओहरिड नामक स्थान पर जाएँ, जहाँ अनेक भग्नावेश हैं, यह यात्रा कुछ अलग थी, क्योंकि हमारा मेसीडोनिया का साथी निकोला हमें उन जगहों पर ले जा रहा था, जो उसके प्रिय स्थान रहे हैं। हम छोटे से नगर में घूमने लगे, यह नगर एक छोटी-सी पहाड़ी पर बसा हुआ है। अधिकतर पुराने मकान, लोग बेहद ही खिले-खिले, हँसमुख। झील के किनारे अनगिनत रेस्तरां, जिनसे गाने की आवाज़ आ रही थी, कहीं-कहीं लोग नाच गा रहे थे, एक अजीब-सी मस्ती, जैसे शाम बस नाचने गाने के लिए है। एयरपोर्ट से आते वक़्त मेरी बातें ड्राइवर से हुई तो मालूम पड़ा कि मेसीडोनिया ग़रीब देश की श्रेणी में आता है। सिकंदर के वक़्त इसकी सीमाएँ ग्रीस, अलबेनिया और बुल्गेरिया के कई हिस्सों तक फैली हुई थी, लेकिन इस वक़्त यह सिकुड़ कर बहुत छोटा-सा रह गया। निकोला बताते हैं कि उसकी माँ का कहना है कि उन्होंने बिना अपनी जगह से हिले कई देश बदल लिए हैं। इस वक्त के मेसीडोनिया के पास काफ़ी कम हिस्सा रह गया है, जितना हिस्सा है, उसमें भी जनसंख्या कुछ ज़्यादा नहीं है, बेरोजगारी और अशिक्षा की भी कमी नहीं। बड़ी उपजाऊ ज़मीन, इतनी कि वे पूरे यूरोप का पेट भर दे, लेकिन लोग ज़मीन से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टूट रहे हैं, सफ़ेद कॉलर नौकरियों की तलाश में दुनिया घूम रहे हैं। राजनीतिक चालाकियाँ यहाँ भी कम नहीं, एयरपोर्ट से आते वक़्त ड्राइवर बता रहा था कि यहाँ दो धर्मों को मानने वाले लोग हैं, जब राजनीतिज्ञ देश की आर्थिक समस्याओं का हल नहीं खोज पाते, तो दोनों धर्मों के बीच आग लगा देते हैं। आम आदमी मेल भाव से रहना चाहता है, इसलिए सोचता है कि पेटभर रोटी मिले या नहीं, कोई बात नहीं, कम से कम लड़ाई-झगड़े तो ना हों। बीच में जिस तरह से लोगों की भीड़ थी, ऐसा लग ही नहीं रहा था कि लोगों को कोई ग़म भी है। कभी दुखों की बहुतायत स्वाभाविक रूप से उत्सव के माहौल की ओर ठेल देती है। रात को हम लौटे तो कार्यक्रम चल रहा था, लेकिन मैं बेहद थक गई थी, तो कमरे में जाकर सो गई।

आज के दिन हम लोग नाश्ते के बाद फिर नदी के किनारे चल दिए, आज पुनः मेसीडोनिया के कवियों की पुस्तकों का विदेशी भाषाओं में अनुवाद का विमोचन था। लेकिन जगह बड़ी दिलचस्प थी, पोएट्री मिल। दरअसल यह मकानों के बीच एक चौराहा था, जिसमें एक बेहद पुराने ज़माने की पनचक्की लगी हुई थी, इसी पनचक्की को चालू करके फूस आदि से सजा रखा था, लोग-बाग इसके चारों तरफ़ बैठे थे, बड़ी ही दिलचस्प जगह थी। स्त्रुगा में मैंने ऐसे प्रयोगों को काफ़ी देखा था, जहाँ पुरातन से जुड़े रहते हुए नवीनतम को स्वीकारने की भावना दिखाई देती है। यहाँ भाषा बाधक बनी, सब कुछ मेसीडोनियन भाषा में चल रहा था, लेकिन अब तक मुझे बिन भाषा जाने बात समझ में आने लगी थी। अंग्रेज़ी का प्रयोग बहुत कम लोग ही कर पा रहे थे, जो कर रहे थे, वे अधिकतर अन्य यूरोपीय देशों के थे, जहाँ कभी अंग्रेज़ों का शासन रहा होगा। इसके उपरांत हम सभी को बसों में भर कर 'courtyard of the Monastery of our Lady in Kalishta' ले जाया गया। हम वक़्त के काफ़ी पीछे चल रहे थे। हम लोगों की गाइड छोटी-छोटी लड़कियाँ थीं, जो अपनी पढ़ाई खत्म करके बिना वेतन के हमारी सहायता में लगी हुई थीं, शायद सर्टिफिकेट आदि के लिए। मेरी उन लड़कियों से बात होने लगी, जो हम लोगों की सहायता कर रहीं थीं। अब मेरी तबियत ख़राब होने लगी थी, पता नहीं पानी का प्रभाव था या भोजन का, मेरा पेट बुरी तरह गड़बड़ा गया था। शायद हम लोग थक भी चले थे। मोनेस्ट्री के अहाते में हम लोगों को काफ़ी इंतज़ार करना पड़ा, फिर काव्य पाठ आरम्भ हुआ, सबको एक-एक कविता पढ़ने का अवसर मिला। इसके उपरांत हम होटल आए और भोजन के बाद थोड़े से आराम के बाद ओहरिड के पुराने शहर की सैर को गए। यहाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पर हमने क़रीब 2000 साल पुराना रोमन ओपन थियेटर देखा, पुराने मकान और कई चर्च, जैसे कि Church of St. John at Kaneo ,Church of St. Panteleimon, लगता है कि सिकंदर के उपरांत रोमन आक्रमणकारियों ने सिकंदर को मिटाने की पूरी कोशिश की थी। चर्च की बनावट में ग्रीक और रोमन, दोनों शैलियों का प्रभाव था। एक जगह हमें किसी पुराने नगर के भग्नावेश भी दिखाई दिए, जो सिंधु घाटी सभ्यता में पाए गए भग्नावेश जैसे थे। एक वृक्ष था, जो कि क़रीब एक हज़ार साल पुराना है। लोगों ने थोड़ी बहुत शॉपिंग भी की। घूम-घाम कर हम लोग Church of St. Sophia में आए, जहाँ सम्मानित कवि Lyubomir Levcev का विशेष स्वागत किया गया। इसके उपरांत प्रसिद्ध गायिका Vesna Gjinovska - Ilkovska द्वारा मेसीडोनियन ओपेरा गायन हुआ। मैंने देखा कि चर्च बेहद पुराना है और उसके पुरानेपन से किसी तरह की छेड़छाड़ नहीं की गई। मुझे तो चर्च में ईसा का चेहरा भी अन्य रोमन चर्चों की अपेक्षा अलग लगा। ओपेरा खत्म होते ही हम सब लोग बाहर निकले तो झील से तैर कर आती गीली हवा ने हमारा स्वागत किया। मन भर आया, कितनी पुरातन ज़मीन है, एक वक़्त कितनी महान, आज उतनी ही निर्धन। सब लोग लौटने लगे तो रास्ते भर लोगों का झुंड दिखाई दिया, हम लोग लौट रहे थे, लेकिन लोग मस्ती की तलाश में झील के क़रीब जा रहे थे, कहीं पर कच्चा मंच लगा कर नाच हो रहा था, तो कहीं पर गायन... ओह कितनी कोशिश करते हैं ये लोग अपने दुखों को गाने-नाचने से ढाँपने की... कोई टीवी के सामने नहीं जमा बैठा है, सैर करना, हँसना, नाचना, गाना मनुष्यता को जीने की एक नन्ही कोशिश है।

22 अगस्त 2010

आज के दिन हमें नौ बजे होटल के निचले हिस्से में इकट्ठा होने के लिए कहा गया था, इस बीच हमारे कमरों में एक बड़े बैग में किताबों के पुलंदे और वाइन की बोतल पहुँच गई थी। ये किताबें मेसीडोनिया के कवियों की कविताओं की थी, जिन्हें पॉकेट बुक साइज में बेहद सुंदर छपाई के साथ चिकने काग़ज़ पर छापा गया था। मैंने शुक्र मनाया कि मैं काफ़ी कम सामान लाई, क्योंकि 20 किलो से ज़्यादा सामान रख ही नहीं सकती थी। पढ़ने का वक़्त तो था नहीं, इसलिए सामान सहेज कर रख लिया। नाश्ता करके होटल के हॉल में आई थी तो आयोजकों का पता ही नहीं था। नौ बज चुके थे, कुछ और देशों के कवि भी थे, जो यहाँ के समय से पिछड़ने वाली बात से नाराज़ थे। आज हमें St Naum Monastery जाना था, रास्ते में वाइन बगीचे था,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहाँ वाइन डोलों में भरी रखी रहती थी, कोई कितनी भी पी सकता था। इस अवसर को कोई भी खोना नहीं चाहता था, इसलिए सभी बताए समय पर नीचे पहुँच गए। कुछ देर में पता चला कि बसें तैयार हैं, लेकिन आयोजकों का पता ही नहीं! बेचारे दिन रात काम कर रहे हैं, थक गए होंगे, लेकिन कवियों का गुस्सा बढ़ने लगा। मैं स्वयं आयोजक के रूप में जानती हूँ कि इस तरह के आयोजनों के लिए घड़ी की सुइयों के साथ चलाना कितना मुश्किल होता है। मेसीडोनिया की घड़ी भी भारतीय घड़ी की तरह चल रही थी। मैं आराम से बैठी थी, पर बहुत से लोग बौखला रहे थे। इस बीच लिथूनिया के कवि कैरी, स्वयंसेविका बनीं छोटी-छोटी लड़कियों से उलझ पड़े। वे कहती रहीं- 'भई हमारी ग़लती नहीं, हम तो वही कर रहे हैं, जो हमसे कहा जा रहा है।' लेकिन लोगों का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। ख़ैर दस बजे की जगह क़रीब साढ़े ग्यारह बजे हमारी बसों का क़ाफ़िला यात्रा पर चल दिया। हमें बताया गया कि पहले यह यात्रा नौका द्वारा की जाती थी, लेकिन पिछले दिनों एक नौका डूब गई, इसलिए आयोजकों ने रिस्क नहीं लिया, हम सब बस से ही चले।

रास्ता झील के किनारे-किनारे चल रहा था, बेहद ख़ूबसूरत प्रकृति, लम्बे चारागाह और विस्तृत भूमि। हम लोग गंतव्य तक पहुँच गए थे। मैंने पानी की बोतल खरीदी...पूरे दो यूरो की यानी कि आधा लीटर पानी 120 रुपए का जबकि मेसीडोनिया की मुद्रा और भारतीय मुद्रा क़रीब-क़रीब एक मूल्य की है। हमारे देश में अब भी कुछ अच्छा है, जिसे हम देख नहीं पाते। भारत में हमारे अतिथियों को हमने पानी खरीदने की ज़रूरत महसूस ही नहीं करने दी, हमेशा उनके लिए पानी मुहैय्या करवाया। सबसे पहले हम वाइन बगीचे में गए, एक बड़ा-सा बगीचा, जिसमें डोलों में वाइन भरी है, बताया गया कि ये डोल खोल दिए जाते हैं, जिसको जितना पीना है, वह पी सकता है। लेकिन कुछ देर में ही पता चला कि कार्यक्रम है।

पहले हम St Naum Monastery की और चले। एक बड़े किले की तरह बनी यह मोनेस्ट्री अंदर से ख़ूबसूरत होगी, लेकिन बाहर का नज़ारा तो बेहद ख़ूबसूरत लगा, झील का पानी इतना नीला कि लगता है कि पेंटिंग है, उसी के किनारे से उगे हल्के नीले बादल, फिर आसमान, वाह! नीले रंग के सारे शेड्स लिए कुदरत। मुझे लगा कि हवा ने प्रकृति के नीलेपन को सोख लिया है और मन के भीतर तक उतरती जा रही है। कुछ लोग मोनेस्ट्री को भीतर से देखने चले गए हैं, पर मैं नदी, पानी और हवा के मोह से मुक्त नहीं हो पा रही हूँ, सबको अपने भीतर खींच लेना चाहती हूँ। मैं युवा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वयं सेविका रेजाटा से मित्रता बना चुकी थी। मुझे पता चला कि नाउम्मीदगी की इस स्थिति में भी ये लड़कियाँ पढ़ने को लालायित हैं, रेजाटा मुस्लिम संप्रदाय की, बड़े सुलझे दिमाग वाली लड़की है। दुनिया जानने की चाह है उसमें, काफ़ी कुछ पढ़ा है। मेसीडोनिया की जनता आज भी भारत के मोह से मुक्त नहीं हो पाई है। आज भी यहाँ हिंदी फिल्में देखी जाती हैं, बंदिनी सीरियल यहाँ काफ़ी लोकप्रिय है। रेजाटा भारत आना चाहती है, आगे पढ़ना चाहती है... क़रीब दो बजे हमें मोनेस्ट्री के रेस्तरां में बुलाया जाता है और वाइन सर्व की जाती है।

मेरी भूख प्यास बिलकुल बंद हो चुकी है, इसलिए मैं अपनी बोतल से घूँट-घूँट पानी पीती रहती हूँ। लोग वाइन पर वाइन चढ़ाते जा रहे हैं, काफ़ी सारे मेसीडोनियन कवि, और कवि के नाम पर मुफ़्त में खाने वाले लोग भी चले आए हैं। सब कुछ गड़बड़ाने लगा है। जब खाना लगता है, तो लोग टूट पड़ते हैं, मुझे अपने देश में होने वाली गोष्ठियों की याद आती है, जहाँ खाने के वक़्त भीड़ संभाले नहीं संभलती। मुझे कुछ खाना नहीं है, इसलिए चुपचाप बैठी हूँ। पास में ही एक बेल्जियम के कवि की ख़ूबसूरत उपन्यास लेखिका पत्नी बड़ी क्रोधित-सी बैठी हैं। वे बड़ी नाराज़ हैं, कहती हैं- 'अपने पति का मन रखने के लिए आ गई, मैं तो ऐसी बदतमीज़ी बर्दाश्त नहीं कर सकती।' मैं मुस्कराती रही, तो पूछने लगी कि मैं किस देश की हूँ, मैंने कहा कि भारत की। 'ओह, तभी बड़े आराम से बैठी हो।' मैं फिर मुस्कुरा दी, तो हमारे देश की ख़बर सब को है।

खाने के बाद वाइन कविता के विजेता की घोषणा हुई, सबसे पहला पुरस्कार मेरी मित्र ओदवे को मिला, उन्होंने अपने पति ब्रेयान के साथ मिल कर अपना वाइन गीत गाया। पुरस्कार में उन्हें वाइन ही मिली। अब हमारे लौटने का वक़्त हो चला था। लौटते वक़्त मैंने सीप से बने कुछ आभूषण खरीदे। यहाँ आभूषण पानी से सस्ते हैं। लौटने की यात्रा में सभी शांत थे, वाइन के नशे में होंगे, खाना भी भर पेट... अब बोल कैसे फूटे...।

शाम को सत्र का बेहद लुभावना कार्यक्रम था। 'पुल पर कविता' (पोएट्री ऑन ब्रिज) नदी और झील के संगम के ऊपर लोहे का एक पुल था, जिस पर लोहे के पाइप डाल कर एक ऐसा मंच बनाया था, जो रोशनी से दिपदिपा रहा था, और उससे कई प्रपात नदी में झर रहे थे। नदी में नौका स्कूल के बच्चे, पाल वाली नौकाओं को लेकर अठखेलियाँ कर रहे थे। पाल पार कविता संध्या का चिह्न अंकित था। नदी के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
किनारे लोग नदी के पानी में पैर डाले कविता पाठ सुन रहे थे, बच्चे खेल रहे थे। हज़ारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। जैसे कि मेला लगा हो। बुल्गेरिया के राष्ट्रपति विशेष रूप उपस्थित थे, उनके देश के कवि को सम्मान जो मिला था। मंच पर वे अन्तरराष्ट्रीय कवि थे, जिन्होंने ओपनिंग में भाग नहीं लिया था। मुझे लगा कि अच्छा हुआ, जो मैंने ओपनिंग में कविता पढ़ ली, नहीं तो इस अद्‌भुत नज़ारे का लाभ नहीं उठा पाती। नीली रोशनियाँ, नीले झरने, खिलंदड़ी नौकाएँ और गहगहाते लोग। यह ज़रूर था कि कविता पर लोगों का ध्यान कम था, लेकिन यह भी सच कि यहाँ कविता को जो ग्लैमर दिया गया, वह अभूतपूर्व था। काव्य संध्या के उपरांत वाइन पार्टी है, बुल्गेरिया के राष्ट्रपति की ओर से। लोग विदा ले रहे हैं या फिर संबंध बना रहे हैं, कौन जानता है! रेजोटा के अंकल आकर मुझसे बात करना चाहते हैं, लेकिन भाषा आड़े आती है, वे कहते हैं कि रेजोटा भारत आना चाहती है, तभी मिसोमा, अल्बेरियन कवयित्री नाचना शुरू कर देती है... मैं बार की छत पर आती हूँ, झील बह रही है... शांत... निस्तब्ध... मैं उसे अपने भीतर भर लेना चाहती हूँ...।

23 अगस्त 2010

आज हमारी 'पोएट्री ऑन द रोड' का दिन है। सभी विदेशी कवियों को छोटे-छोटे समूहों में अलग-अलग शहरों में भेजा जा रहा है, मेरे समूह में मेरी मित्र ओदवे के साथ हनान भी हैं, हम लोगों को दो जिप्सी गाड़ियों में भर कर Gevgelijja के लिए रवाना कर दिया गया। यह नगरी पुरा ऐतिहासिक शहर Pajonia और Gortinia (Vardarski Rid) समेटे हुए ग्रीक देश के पड़ोस में स्थित है। काफ़ी लंबा रास्ता है स्त्रुगा से Gevgelijja तक। बेहद आरामदायक सड़क, लेकिन बहुत कम आबादी, मीलों तक खाली ज़मीन या फिर खेत, इक्के दुक्के गाँव, वे भी भारतीय मोहल्लों से बड़े नहीं। खुली ज़मीन पर आसमान भी विस्तार पा जाता है, ऐसा लगता है कि सब कुछ बेहद विशाल है, धरती से लेकर गगन तक...ओदवे कहती हैं, अरे यह तो काफ़ी कुछ नोर्वे जैसा है... चार घंटों का रास्ता पार करते ही हम लोग एक पेट्रोल पम्प तक पहुँचते हैं, तभी चीन का मस्तमौला कवि बी लिंग हमें अंजीर का पेड़ दिखाता है, हम लोग बच्चों जैसे खिलखिलाते हुए अंजीर तोड़ कर खाने लगते हैं, तभी ताज़ी अंजीर बेचने वाला आता है और हमें पूरी पेटी अंजीर पाँच यूरो में बेचना चाहता है। स्वीडन की बोएल खरीद लेती हैं। हम फिर चल पड़ते हैं, लेकिन यह क्या? पुलिस हमारा रास्ता क्यों रोक रही है? अरे यह क्या कुछ लोग भीतर चले आए...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ओह! ये डायरेक्टर हैं गेवेगेलिज्जा पोइट्री फ़ेस्टिवल के, जो दुभाषिये के साथ हमारा स्वागत कर रही हैं। फूल देकर हमारा स्वागत किया जाता है और पाँच सितारा होटल फ्लामिंगो की ओर ले जाया जाता है।

गाड़ी से उतरते ही हम चमत्कृत रह जाते हैं... एक बाँसुरी वादक पारंपरिक वेषभूषा में बाँसुरी बजा रहा है, एक युवक बड़े से थाल में अंजीर का मुरब्बा लिए खड़ा है और एक गुड़िया-सी ख़ूबसूरत लड़की थाल में रोटी, पानी और नमक लिए खड़ी है। हमें बताया जाता है कि हमें पहले रोटी का टुकड़ा तोड़ना है, उसे पानी में डुबोना है, फिर नमक छुआ कर खाना है, इसके बाद हम अंजीर के मुरब्बे से मुँह मीठा कर सकते हैं। मुझे नमक हरामी का मतलब समझ में आ रहा है, सबसे पहले नमक चखो, फिर मीठा, जिससे पीठ पर छुरी तो नहीं मार सको। हम तो सबको मीठा खिला देते हैं, नमक की बात भूल ही जाते हैं... परिणाम ...सदियों से धोखा खाते रहे हैं। कितना साम्य है हममें और इनमें, हमारी प्राचीनता ही नहीं, संस्कृति भी हमें जोड़ती है। होटल बेहद ख़ूबसूरत, ज़्यादातर यूरोपीय होटलों में आपको सामान उठाने वाला कोई नहीं मिलेगा, लेकिन यहाँ अर्दली वैसे ही तैयार, जैसे कि भारतीय होटलों में। हमें बीस मिनट का वक़्त दिया जाता है कि हम हाथ मुँह धोकर आए, मेयर से मिलने जाना है। मैं तुरंत भारतीय वेषभूषा वाली मुद्रा में आ जाती हूँ, यहाँ पर अंग्रेज़ी की एक प्राध्यापिका हमारी दुभाषिया है। वह हमें ग्रीक और मेसीडोनिया के संबंधों के बारे में बताती है। कहती है कि लोगों में अभी भाईचारा है, पर राजनीतिज्ञ प्रेम पनपने नहीं देते। वह बताती हैं कि उनका मित्र ग्रीकवासी है और वे लोग एक-दूसरे के देश में आराम से आते-जाते हैं। मेयर से मिलने पर हमें फिर से वाइन की बोतल उपहार में मिलती है। हम लोग फोटो खिंचवा कर वाइन फैक्ट्री की ओर चल पड़ते हैं। यहाँ मशीन से बेहद उम्दा वाइन बनवा कर विदेशों में भेजी जाती है, हर काम मशीनों से, दैत्याकार दाँतों में अंगूरों का कटना, पाइपों से मंज़िलों लंबे ड्रमों में इकट्ठा होकर वाइन में परिवर्तित होना... आस-पास के कई गाँवों के अँगूर यहाँ वाइन बनने आते हैं।

लौट कर हम खाना खाते हैं, तो चार बज जाते हैं, मेरी तबियत ठीक नहीं है, लेकिन मैं सब्जियों की शक्ल देख रही हूँ... काफ़ी कुछ पहचाना-सा लगता है... ये सब कुछ तो माँ भी बनाती रही थी, कीमे भरी शिमला मिर्चे, कबाब, शाही मुर्ग आदि... हाँ, उनके नाम अलग हैं। मैं तबियत से फल लेती हूँ और आराम से खाती हूँ... वाह! क्या फल हैं... खाने के बाद कुछ लोग आराम करने चले गए, लेकिन हम कुछ लोग पुरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐतिहासिक शहर Pajonia और Gortinia (Vardarski Rid) को देखने चलते हैं। यहाँ पर पुरातत्वज्ञाता अलेक्जेंडर हमें इस पुराने नगर का इतिहास बताता है- यहाँ सिकंदर का आरामगाह रहा होगा और यहाँ पर उसके साथियों का, ये जगह बाज़ार रही होगी, यहाँ से कई सिक्के मिले। बेहद कीमती चीज़े मिलीं हैं यहाँ से, जो म्यूज़ियम में रखी हैं। म्यूज़ियम बंद है, नहीं तो वह दिखाता। कम्यूनिस्टों के प्रभाव में इस पुरातत्व स्थान से छेड़खाड़ की गई थी। विजय स्तंभ खड़े किए गए, और कई ऐसे चिह्न, जिन्हें साम्यवाद का घोषणापत्र माना जा सकता है। आज फिर सरकार ध्यान दे रही है और पुरातत्व को महत्व मिलने लगा है। अलेक्जेंडर नीली आँखों वाला युवक है, जो कब्र की खुदाई में माहिर है। हम उससे सिकंदर की कब्र के बारे में पूछते हैं, तो वह बताता है कि सिकंदर कहाँ मरा, किसी को ज्ञात नहीं, ऐसा भी माना जाता है कि उसे दफ़नाया नहीं, जलाया गया था। भारतीय दर्शन का उस पर काफ़ी प्रभाव था। वह बताता है कि ग्रीक देश का कहना है कि सिकंदर उनका है, जबकि सिकंदर के पिता मेसीडोनिया, यानी कि स्कोप्जे के आस पास के थे, लेकिन माँ ग्रीकवासी थीं। वह बताता है कि फ़िलहाल ग्रीक के पास पुरातन मेसीडोनिया का काफ़ी बड़ा भाग है, जो उसे मेसीडोनिया से तुर्क के ख़िलाफ़ लड़ाई में सहायता करने की एवज में एक हज़ार साल की लीज़ में दिया गया था, यह लीज़ दो-तीन वर्षों में ख़त्म होने वाली है, संभवत: यही कारण है कि ग्रीस इस तरह के अड़ंगे खड़े कर रहा है। सिकंदर के दो हज़ार साल बाद भी उसके लिए लड़ाई... लड़ाई का बीज नश्वर नहीं होता।

हम लौटे तो मैंने ध्यान से देखा कि ये पाँच सितारा होटल बेहद विशाल कैसिनो भी हैं, हज़ारों की संख्या में कैसिनो लगे हैं, ऊपर से नीचे तक... मुझे आश्चर्य हुआ, इतने सारे लोग कहाँ से आते होंगे, मुझे तो कोई बस्ती दिखाई तक नहीं दी। हमें रात को आठ बजे तैयार होने के लिए कहा गया है। मैं अपनी इकलौती साड़ी पहन कर नीचे आती हूँ, देखती हूँ कि सारा का सारा होटल हज़ारों की संख्या में लोगों से भरा है... बाप रे... मैं घबरा जाती हूँ तो रिसेप्शन में बैठी लड़की मुझे अंडरग्राउंड हॉल में जाने को कहती है। नीचे पहुँच कर मैं दंग रह जाती हूँ, बेहद ख़ूबसूरत हॉल, फूलों से सजा हुआ, मेसीडोनिया की ख़ूबसूरत लड़कियाँ, हॉल खचाखच भरा है और ज़्यादातर छात्र हैं। कुछ छात्राएँ हमारी कविता के अनुवाद पर क़रीब दो सप्ताह से रिहर्सल कर रही हैं। वाह क्या ख़ूबसूरती है यहाँ... अब पता चला कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने क्यों सिल्युकस की बेटी से शादी की...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बीच कुछ गड़बड़ी भी होने लगी, स्वीडन की बौल, हनान आदि ज़िद करते कि उन्हें एक से ज़्यादा कविताएँ पढ़नी हैं, आयोजकों का अपना विचार है, वे इसके लिए तैयार नहीं होते, बात खिंचने लगती है। लेकिन कार्यक्रम आरंभ होता है, यहाँ पर पुनः सांस्कृतिक मंत्री उपस्थित हैं। लगता है कि मेसीडोनिया में महिलाएँ राजनीति में सजग हैं। कार्यक्रम बड़ा सधा है, मंत्रमुग्ध करने वाला, मेसीडोनिया का पारंपरिक संगीत, इसके बाद तीन देशों के तीन कवियों की कविताएँ, अनुवादकों के साथ, हर कवि के साथ पार्श्व में बाँसुरी वादन, पुनः संगीत, पुनः तीन कवि, इस तरह नौ विदेशी कवि, अंत में दो मेकेडोनियन गायक। ऐसा लगा कि फ़िल्म की रील चल रही हो, पूरा कार्यक्रम बिना टेक के बिना रुकावट के बड़ी ख़ूबसूरती से ख़त्म हो गया, अंत में हम सब को सर्टिफ़िकेट दिए गए... फिर तो फ़ोटो सैशन शुरू हो गया... काफ़ी देर बाद हमें एक बैरा भोजन कक्ष में ले जाने आया, दरअसल उस वक़्त तक होटल में हज़ारों की संख्या में कैसिनो खेलने वाले लोग थे... उनमें अधिकतर महिलाएँ थीं, जो खेलती और खाती जा रही थीं। इस भीड़ में जगह बनाना हमारे लिए मुश्किल होता, यदि हमारे साथ बैरा नहीं होता। मैंने पूछा कि ये लोग कहाँ से आए, तो पता चला कि अधिकतर लोग ग्रीस से आए हैं। ग्रीक में जुआ खेलना कानूनी अपराध है, तो लोग यहाँ चले आते हैं। वाह क्या मीठा बदला है, पड़ोसी की कमाई भी आ गई अपनी गाँठ में और अपनी धाक भी...क्या हम ऐसा प्रयोग भारत पाक बॉर्डर पर शुरू कर दें.. ?

रात का खाना...पूरा शाही दस्तरख़ान....वाइन पर वाइन, शैम्पैन...रोज वाइन और फिर एक के बाद एक लज़ीज़ व्यंजनों का परोसे जाना। नोर्वे की ओदवे और उसके पति ब्रेयान को छोड़ कर सभी के हाथ रुके थे। नोर्वे ठंडा प्रदेश है, शायद इसलिए उन्हें इतनी वाइन हजम करने की आदत होगी। ब्रेयान को मैं बताती हूँ कि किस तरह ये सारे व्यंजन भारतीय दस्तरख़ान के अंग भी हैं, तो वे कहते हैं कि ज़रूर, भोजन की यात्रा पर अधिकतर लिखा नहीं गया है, यह भी कम रोचक विषय नहीं है।

मैं सोचती हूँ सिल्युकस की बेटी दासियों के साथ आई होगी, तो साथ में व्यंजन भी लाई होगी, भोजन इतना कि हम उसे देख कर हँस रहे हैं, वाइन इतनी कि सब भीग रहे हैं... कैसिनो अभी भी ठसाठस भरा है।

यह दुनिया ही तो एक जुआ है। कल हमें स्कोप्ये जाना है, जहाँ हमारी कविता यात्रा का आख़िरी पड़ाव है, लेकिन हम कुछ लोग उसमें भाग नहीं ले सकते, क्योंकि हमारी उड़ानें कुछ जल्दी हैं। दूसरे दिन पुरातत्वशास्त्री अलेक्जेंडर कुछ पेम्फलेट लेकर आता है, मुझसे कहता है कि मैं भारत आना चाहता हूँ... ज़रूर ज़रूर...सिकंदर की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ज़मीन को सलाम...।

मैं वियेना के लिए अपनी यात्रा शुरू करती हूँ...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता के देश मेडेलिन में

(मेडेलिन पोइट्री फेस्टिवल, कोलंबिया) 27 जुलाई, 2011

हालाँक, मुझे आज तक नहीं मालूम कि मेडेलिन जैसे मशहूर फ़ेस्टिवल के लिए मेरा नाम आयोजक तक कैसे पहुँचा ? सच बात तो यह है कि मुझे इस फ़ेस्टिवल का महत्व मालूम तक नहीं था। दूसरी समस्या यह थी कि उससे दो महीने पहले ही छोटी बेटी की नवजात बच्ची को लेकर घर आई थी। यूँ मैंने नागपुर के कृत्या फ़ेस्टिवल के दौरान इस फ़ेस्टिवल की काफ़ी प्रशंसा सुनी थी, तो जाने का मन बना लिया। 2011 तक मेडेलिन ही नहीं, पूरा कोलंबिया ही ड्रग अधिकृत देशों में गिना जाता था और वहाँ जाना जोखिम भरा माना जाता था, इसलिए वीज़ा की काफ़ी समस्या थी। यही नहीं, केरल में रहने के कारण कई देशों का वीज़ा पाना बड़ा मुश्किल होता है।

जब टिकिट की बात हुई तो मालूम हुआ कि यदि अमेरिकन वीज़ा नहीं है, तो सफ़र बेहद लंबा पड़ेगा। रास्ते में अनेक पड़ाव... यात्रा की लंबाई अंगद की पूँछ से कम नहीं थी। पूरी दुनिया का चक्कर लगा कर मेडेलिन जाना इतना आसान नहीं था। आयोजकों ने काफ़ी मदद की और एक तरह से फोन पर ही वीज़ा मिल गया। बस पासपोर्ट ठप्पा लगवाने के लिए दिल्ली भेजना पड़ा। छोटी बेटी अपनी नन्ही-सी बिटिया के साथ घर पर ही थी, इसलिए आख़िर तक पशोपेश की स्थिति बनी रही, लेकिन अन्ततः बेटी ने ही मनोबल बढ़ाया और मैं इस नई दुनिया की ओर चल दी।

मेडेलिन, जो साउथ अमेरिका के एक देश कोलंबिया का शहर है। कोलंबिया जो कुछ वर्ष पहले तक ड्रग माफ़िया के लिए इतना कुख्यात था कि अमेरिकावासियों को उस देश में ना जाने की सलाह दी गई थी, मेडेलिन, जो दुनिया का सबसे खतरनाक शहर माना जाता रहा है, उसी शहर में विश्व का सबसे मशहूर कवितोत्सव! मन में उत्सुकता थी। इस बार यानी कि 2011 में विश्व के कविता फ़ेस्टिवल डायरेक्टरों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था, एक विशेष योजना के तहत। दुनिया के किसी भी देश में कविता के प्रति इतना जुनून नहीं देखा गया होगा, जितना इस देश में है। बस उसी जुनून से रूबरू होने में चल पड़ी थी, लेकिन ये यात्रा कम कठिन नहीं, त्रिवेन्द्रम से मुंबई, मुंबई से एम्सटर्डम, एम्सटर्डम से करसावा द्वीप और वहाँ सात-आठ घंटे रुकने के बाद मेडेलिन, वह भी रात के 12 बजे। मैंने घंटे गिनने की कोशिश की, लेकिन जब ज़िंदगी का ही हिसाब नहीं रख पाती, तो समय का कैसे रख पाती ? वैसे भी गिनती उलटी जा रही थी। मेडेलिन भारत से कम से कम ग्यारह घंटे पीछे है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और यह पीछे चलने की यात्रा भी आसान नहीं। इस वक़्त मैंने एक काम किया, जो अकसर ऐसे मौके पर करती हूँ, मैंने अपनी घड़ी उतार कर पर्स के भीतर रख दी। यही यात्रा की मेरी सबसे बड़ी तैयारी थी।

त्रिवेन्द्रम से मुंबई तो अपना घर था, लेकिन मुंबई में इमीग्रेशन आदि का झंझट कम नहीं था, हालाँकि मुझे हर कहीं सहायता मिल ही जाती है। अकेली यात्राएँ अधिकतर अकेली नहीं होतीं। देश से बाहर निकलने से पहले एक दिन तो पूरा हो गया। एम्सटर्डम तक की यात्रा भी ठीक-ठाक ही थी। यात्राओं के दौरान मुझे लगता है कि मैं कहानी लिखना जानती तो कितना अच्छा होता, क्योंकि यात्राओं में अनजाने लोग ना जाने कितनी ज़िंदगी साझा कर लेते हैं। सहयात्री पंजाबी तेल निकालने वाली कम्पनी का कर्मचारी था, उसने पहले अपनी नींद पूरी कर ली, फिर अपनी रामकथा अविराम सुना डाली, कैसे शादी हुई, कैसे बच्चे, कैसे तलाक भी, फिर अपने मोबाइल पर चित्रकथा भी दिखा डाली, अब तो मेरे पास उनकी ज़िंदगी सचित्र थी, बस परेशानी यही थी कि मैं दो घंटे भी नहीं सो पाई थी।

एम्सटर्डम में जो सुरक्षा चौकसी देखी, तो महसूस हुआ कि मुंबई की सुरक्षा कितनी ढीली-ढाली है, लेकिन मुंबई में सुरक्षा एजेंसी में मानवता झलकती है, लेकिन यहाँ सपाट चेहरा लिए, ऊँचे-ऊँचे कुत्तों को थामे पुलिस वेशभूषा के लोग इस तरह से घूरते हैं कि ख़ुद पर से विश्वास उठ जाता है, अनजाना-सा भय रीढ़ की हड्डी पर से दौड़ जाता है।

एम्सटर्डम में मैं दाँत साफ कर मुँह धोना चाहती थी, लेकिन इन यात्राओं में अपने सामान को ढोकर बाथरूम के भीतर रुकना मुझे रुचता नहीं था, तभी वह युवक दिख गया, जो मुंबई में चेकिंग के वक़्त मेरे साथ खड़ा था, बेहद चुप्पा-सा। मैं उस गेट को खोज रही थी, जहाँ के लिए मुझे करसावा के लिए फ़्लाइट लेनी थी। वह पास आकर बोला- 'मैडम, कंफ्यूस्ड हो रही हैं क्या?' मैंने कहा- 'हाँ, वह तो है, फ्रेश भी होना चाहती हूँ।' उस अनजाने ने कहा- 'तो जाइए, पहले मैं आपका सामान देखता हूँ, फिर आप मेरा।' अनजानी जगहों पर अनजाने लोग बड़े अपने से लगते हैं। मैं चुपचाप सामान छोड़कर वॉशरूम चली गई। वापिस आई तो वह भी कुछ वक़्त के लिए गया और बोला कि यह आपका गेट है, आपको यहीं से फ़्लाइट मिलेगी, मैं अब अपने गेट की ओर चलता हूँ। मैं चुपचाप बैठी थी कि कुछ अनाउंसमेंट सुनी, निःसन्देह वह डच भाषा में थी, उसे सुनते ही लोग जल्दी से दूसरी ओर भागने लगे। मैं चौकन्नी तो थी, एक सुरक्षा कर्मचारी से पूछा, तो उसने कहा कि गेट चेंज हो गया है। मैं घबरा गई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और भीड़ का पीछा कर चलने की कोशिश करने लगी। इतनी लंबी यात्रा के बाद पांव सुन्न हो गए थे, चलना भारी लग रहा था। किसी तरह अगले गेट पहुँची, तो फिर वही सुरक्षा की कवायद।

इस बार मेरे साथ एक कॉलेज स्टूडेंट थी, जो एम्सटर्डम में फिजियोथैरेपी की पढ़ाई कर रही थी और अंग्रेज़ी जानती थी। उससे पता चला की करसावा द्वीप मालद्वीप की तरह यात्रियों के कारण जीवित है। यूरोप के क़रीब होने के कारण अधिकतर यूरोपीय यहाँ के सागरी तटों पर सर्दियों से बचने के लिए पहुँचते हैं। मैंने उससे उसके खाने आदि के बारे में पूछा तो कहने लगी कि उसकी माँ सूरीनाम की है, इसलिए वह रोटी-सब्जी खाती है। मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने पूछा कि क्या माँ भारतीय हैं? लेकिन उसे ज़्यादा जानकारी नहीं थी। पिता अफ्रीकन मूल के थे, बाबा चीनी मूल के और माँ सूरीनाम की। मैंने उसे सूरीनाम की कथा सुनाई कि किस तरह भारतीय भी वहाँ कुली के रूप में पहुँचे थे।

करसावा में पहुँचते ही भाषा का झंझट और कड़ा हो गया। अंग्रेज़ी जानने वाले अधिकारी एयरोड्रम पर ना के बराबर थे। मैंने ट्रांजिस्ट की ओर जाने की कोशिश की, बात की तो वहाँ खड़ी अफ्रीकन मूल की ज़बरदस्त महिला ने मुझसे कहा-नो नो..., इमीग्रेशन...।

मैंने कुछ लोगों से बात करने की कोशिश की, लेकिन हर कोई झटक कर चला गया। अंत में एक यूरोपीयन महिला ने कहा कि इमीग्रेशन की लाइन में खड़े हो जाओ, शायद ऑफ़िसर अंग्रेज़ी जानता हो। मुझे लगा कि हमारे देश में इससे ज़्यादा भला व्यवहार होता है, लेकिन आतंकवाद से जितने भयभीत यूरोपीय हैं, उतने भारतीय नहीं।

इमीग्रेशन काउंटर पर पहुँच कर मैंने ऑफ़िसर को अपनी समस्या बताई, तो उसने मुझे बैठने को कहा और ट्रांजिस्ट से किसी महिला को बुलाया, वह मुझसे कहने लगी कि आप केलम की फ्लाइट की बात कर रही हो, लेकिन यह तो कोपा की है, इसलिए लोगों को समझ नहीं आया। दरअसल भारत से केलम ही सारी फ्लाइट डील करता है, दक्षिण अमेरिका की फ़्लाइट के बारे में कुछ जानकारी तो थी नहीं। खैर, इस बार उनके व्यवहार में मानवीयता थी, शायद भाषा भी एक कारण हो सकती है। ट्रांजिस्ट तक मुझे ले जाकर उसने ट्रांजिस्ट फ़ीस भरने को कहा और एक थोड़ी बहुत अंग्रेज़ी समझने वाले आदमी के हवाले कर गई। इस व्यक्ति ने मुझे सुरक्षा चक्र से पार करवाया और एयरोड्रम का नक्शा समझा दिया। इस एयरोड्रम में मुझे सात घंटे गुजारने थे। एक घंटा तो इस गफ़लत में गुज़र गया, अब बाकी वक़्त मैं कभी काउच पर बैठती या

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घूमती रहती। मुझे लगा कि अंग्रेज़ी के अलावा थोड़ी बहुत स्पेनिश, डच आदि भी आये तो कितना अच्छा हो! समय किसी तरह बीतता जा रहा था। मैं फ़्लाइट को लेकर चौकन्नी थी, भूखी भी थी, क्योंकि 250 रुपए की कॉफी और 200 रुपए की आधा लीटर की पानी की बोतल पर गुज़ारा किया था।

मेडेलिन के लिए रवाना होने पर चैन की साँस ली, लगा कि अब तो मंज़िल क़रीब है। जहाज में बैठे यात्रियों का व्यवहार भी यूरोपीय यात्रियों से भिन्न था, ये लोग भारतीयों की तरह ही ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे और हँसी मज़ाक करते सीटें बदल रहे थे। थकावट से मेरी आँखें बंद होने लगीं और जब खुली तो जहाज में तालियाँ बज रही थीं। पूछने पर पता चला कि मेडेलिन आ गया है और यात्री ख़ुशी ज़ाहिर कर रहे हैं। मुझे उनका तालियाँ बजाना बेहद अच्छा लगा। इमीग्रेशन से निकलते-निकलते एक घंटा और बीत गया था। बाहर निकलते ही एक व्यक्ति मेरे नाम का प्लक कार्ड लिए खड़ा दिखा।

यहाँ फिर भाषा की समस्या, किसी तरह से पता चला कि कुछ और लोगों का इंतज़ार किया जा रहा है। करीब एक बजे हम एयरपोर्ट से रवाना हुए, मैं चौकन्नी होकर रास्ते को देख रही थी, बेहद ख़ूबसूरत सरसराती सड़कें, सुंदर वादी, बेहद सुहाना मौसम। रास्ते में चेक पोस्ट आई, तो मैं दंग रह गई कि वहाँ दो लड़कियाँ और एक जवान तैनात थे, रात के दो बजे, चेक पोस्ट पर लड़की!! दिल्ली होती, तो गायब हो गई होती। क्या यह शहर वास्तव में खतरनाक है?

यूँ तो मैं मुंबई से एक जुलाई 2011 को निकली और मेडेलिन एक जुलाई को ही पहुँच गई, लेकिन यह गणित ज़िन्दगी के गणित की तरह पेचीदा था, क्योंकि मुझे घर से निकले करीब पचास घंटे बीत गए थे। ऐसे में मेडेलिन में रात के दो बजे भी अपने कमरे में खाना और जूस देखा, तो मन भर आया। इतने घंटों के बाद बिस्तरा देखा, तो मन खुश हो गया। मेडेलिन का मौसम बेहद हसीन था। न गर्मी, न ठंड, कमरे में पंखा तक नहीं, मेज़ पर एक टेबल फैन रखा था, लेकिन उसकी ज़रूरत कभी नहीं पड़ी।

बिस्तरा तो बढ़िया था, पर नींद का अता-पता नहीं, शायद इतने वक़्त में मैं लग कर सोना ही भूल गई थी। भाषा की समस्या को मेज़बान ने बड़ी कुशलता से सहज करने की कोशिश की थी। एक पैकेट थमा दिया गया था, जिसमें अनुवादक, पाठक आदि के नाम के साथ पूरे दस दिनों का ब्यौरा था। ना जाने कैसे मैं पैकेट में रखे ख़त को देख नहीं पाई और यह समझ ही नहीं पाई कि प्रेस रिलीज़ सुबह दस बजे आरंभ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो गया। हालाँकि होटल की लॉबी में कई युवा अनुवादक चहलकदमी कर रहे थे, जो स्पेनिश ना जानने वाले कवियों को देखते ही सहायता के लिए लपक पड़ते। मैं दो सिम कार्ड मोबाइल साथ ले गई थी, लेकिन एक भी काम नहीं कर रहा था। लैपटॉप शुरू करने की कोशिश की तो देखा कि ना तो यूरोपियन प्लग पॉइंट है, ना ही एशियन। मुझे बताया गया था कि इंटरनेट सर्विस मुफ़्त है, इसलिए उसका प्रयोग करना चाहती थी। होटल के किसी कर्मचारी को अंग्रेज़ी नहीं आती थी, तभी एक युवा लड़का सहायता के लिए आया।

उसने अपना नाम बताया 'जर्मेन' और मुझे बाज़ार ले गया। जर्मेन काजोल का प्रशंसक था और हिंदी बॉलीवुड फिल्मों का दीवाना। उसकी पत्नी आमिर खान की दीवानी। होटल शहर के केन्द्र में स्थित था, अतः दूकानें दूर नहीं थीं। हम कुछ दूर तक गए, जहाँ हार्डवेयर और बिजली के सामान की दूकानें थीं, लेकिन मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि अधिकतर दूकानों पर लोहे की शटर थी, जो ग्राहक और दूकानदार को अलग करती थी। दूसरे शब्दों में दूकानदार कठघरे में बैठ कर दूकानदारी करते थे। संभवतः लूटपाट से बचने का उपाय था। मतलब की यहाँ के लोग बुरे समय की स्मृति से उबर नहीं पाए हैं या फिर आज तक ख़तरा है, तभी तो हमें अकेले बाहर निकलने नहीं दिया जाता है। सड़कें साफ़, लेकिन किनारे पर भिखमंगों की तरह सोये हुए लोग थे, जिनसे लोग बच रहे थे। संभवतया माफ़िया के लोग रहे होंगे, जो इस जीर्णावस्था में पहुँच गए। जर्मेन ने बताया कि उनकी वर्तमान सरकार माफ़िया के प्रति बेहद कठोर है, इसलिए ही मेडेलिन बुरे वक़्त से बाहर निकल पाया है, हालाँकि अभी लोगों के मन में भय है कि कब ये गैंग पुनः सक्रिय हो जाए। दिन में अनुवाद वाचक मेरे कमरे में पहुँची, सुंदर-सी युवा लड़की, अच्छी अंग्रेज़ी जानती थी, उसके हाथ में मेरी क़रीब बाइस कविताएँ अनुवाद के रूप में थी। उसके साथ प्लान बनाया गया कि किस दिन मैं कौन-सी कविता पढ़ूँगी। दस दिन का कार्यक्रम था और मुझे कम से कम आठ दिन कविताएँ पढ़नी थी।

होटल में लौट कर लैपटॉप चालू हो गया, लेकिन प्रेस रिलीज़ में भाग नहीं ले पाई। दोपहर के दो बजे हमें कार्यक्रम के शुभारंभ में भाग लेने के लिए जाना था। कवितोत्सव का शुभारंभ एक खुले ऑडिटोरियम में था, जहाँ हज़ारों की संख्या में दर्शक बैठे थे, यहाँ स्त्रुगा की तरह टीम-टाम तो नहीं, लेकिन भव्यता थी। मंच पर सभी सौ से ऊपर कवि, कलाकार, डायरेक्टर और टीम के कुछ लोग थे। बेहद सादा-सा शुभारंभ। आरंभ में अफ्रीकन लोक गायकों द्वारा प्रस्तुति हुई। डायरेक्टर फ़ेस्टिवल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने संक्षिप्त भाषण पढ़ा और फिर चुने हुए कवियों का कविता पाठ आरंभ हुआ। मैं आश्चर्यचकित थी, ना किसी नेता का भाषण, ना ही कोई अन्य तड़क-भड़क, जनता और कविता के बीच कोई बाधा नहीं। संभवतया यही कार्यक्रम की भव्यता थी। मैं लोगों की भावभंगिमा देखकर आश्चर्यचकित थी। वे हर कविता को ध्यान से सुन रहे थे, दाद दे रहे थे। ऐसा नहीं कि कविताएँ मंचीय थीं, अधिकतर तो उनके पास अनुवाद के जरिये ही पहुँच पा रही थीं, लेकिन फिर भी कविता का मन उनके पास था। मैं कविता के स्तर को देख कर अभिभूत थी, श्रोताओं के चेहरे मुझे यह विश्वास करने ही नहीं दे रहे थे कि ये असली दुनिया का हिस्सा है।

कविता संभवतया उनकी स्मृति पर छपे दागों पर फाहे का काम करती है! पता नहीं... मैंने यह जुनून कहीं नहीं देखा... और अब देखा तो भूल नहीं पाऊँगी।

रात को नाच-गाने और पीने का कार्यक्रम था, मैंने इस वक़्त को सोने के लिए उपयुक्त समझा, लेकिन रात के दो बजे शोर-शराबे से नींद खुली तो भाग कर हॉल में पहुँची... नाच-गाना अपने जुनून पर था। ईरान की रीरा अब्बासी ज़ोरदार ठुमके लगा रही थीं। कारागार में ज़रा-सी भी सेंध मन के पंख खोल देती है...।

दूसरे दिन पोइट्री फ़ेस्टिवल के डायरेक्टरों की मीटिंग होटल के सबसे ऊपर के हॉल में थी। यहाँ अनुवाद का इंतज़ाम भी बेहतर था। क़रीब चालीस-पचास लोग बैठे थे। मैं किसी से परिचित नहीं थी, लेकिन मेरा वाद-विवाद का अनुभव यहाँ काम आया।

क़रीब दस बजे एशिया के कवियों का पाठ म्यूज़ियम पार्क में था। हम लोग दस बजे तैयार होकर निकल पड़े थे। हर कवि के साथ एक अनुवाद पाठक था। जो कवि के साथ स्पेनिश में कविता का अनुवाद पढ़ता था। साथ में एक अनुवादक, जो कि तत्काल अनुवाद कर दर्शकों और कवियों में सूत्र स्थापित करता था। एशिया के हम पाँच कवि थे, जापान, बर्मा, ईरान, अफ़गानिस्तान और भारत से मैं। म्यूज़ियम पहुँच कर हमने देखा कि मंच पर एक टीम थी, जो जोकराना अंदाज़ से कवि सम्मेलन की जानकारी दे रही थी। कुछ लोग थे, लेकिन मैदान खाली ही था। मेरे चेहरे पर प्रश्नचिह्न देखकर अनुवादक डेनियल ने कहा-मेडेलिन के लोग आख़िरी मौके पर ही पहुँचते हैं, जैसे ही कार्यक्रम शुरू होगा, भीड़ आ जाएगी और वही हुआ। हर कवि को अनुवाद सहित बीस मिनट का वक़्त दिया गया था, मैंने पाँच छोटी-छोटी कविताएँ रख ली थी। कविता पाठ में दर्शकों की प्रतिक्रिया बेहद उत्साहवर्धक थी। मज़ा तो तब आया, जब हम लोगों के मंच से उतरते ही हस्ताक्षर लेने वालों की भीड़ उमड़ पड़ी। मैंने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी पूरी ज़िंदगी में कवियों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं देखा। सच मुझे लगा कि मेरी यात्रा सार्थक हो गई।

साधो, रहना बस इसी देस... मेडेलिन,, तुम्हारे जख़्म अभी हरे हैं... संभवतया यही तुम्हें कविता की समझ देता है, काश तुम्हारे जख़्म भरे, लेकिन कविता का जुनून ख़त्म ना हो...।

सुबह का वक़्त फिर फ़ेस्टिवल डायरेक्टरों की मीटिंग के लिए निर्धारित किया गया था। हम लोग सुबह-सुबह नाश्ते के बाद होटल की ऊपरी मंजिल में बने हॉल में पहुँचते, जहाँ काफ़ी उम्दा इंतज़ाम था, ख़ासतौर से अनुवादक बेहतरीन थे। पता पड़ा कि यह पोइट्री फ़ेस्टिवल अपने देश में भी बहुत लोकप्रिय है और छात्र इसमें इंटर्नशिप समझ कर भाग लेते हैं। अनेक छात्र आवेदन देते हैं, जिनमें से कुछ का चुनाव होता है। क़रीब सौ के आस-पास सहायक होते हैं, जिन्हें बड़ी कुशलता से विभिन्न समूहों में बाँटा जाता है। सबसे बेहतरीन बात यह थी कि फरनांडो, फ़ेस्टिवल डायरेक्टर का पूरा परिवार इस काम में ज़मीनी स्तर पर जुड़ा हुआ था। उनकी पत्नी कैमरा और वीडियो संभाले हुए थी, बड़ा बेटा मैनेजमेंट देख रहा था, बहू भी पुस्तकें संभाल रही थी, वे हर तरह का काम करते दिखाई दे रहे थे।

फरनांडो बड़े ड्रीमर हैं, उन्होंने मेडेलिन पोइट्री फ़ेस्टिवल की सोच उस वक़्त रखी, जब मेडेलिन ड्रग माफ़िया का कुख्यात केंद्र बन चुका था, लोग घरों से निकलने में डरते थे। उस वक़्त फरनांडो ने अपने दो मित्रों के साथ पार्क जैसे स्थानों पर बैठ कर कविता पाठ शुरू कर दिया, धीरे-धीरे लोग जुड़ने लगे। चुपचाप बैठ कर कविता पढ़ना एक चुप्पा-सा अनुष्ठान था, जो उन्हें संबल दे रहा था। धीरे-धीरे कविता पाठ शुरू हुए, पहले शहर में, फिर आस-पास के इलाकों में, फिर पूरे कोलंबिया के कवियों के साथ, अंततः यह एक विश्वस्तरीय पोइट्री फ़ेस्टिवल के रूप में उभर कर आया, जिसमें भाग लेना कोलंबिया संस्कृति का अहम हिस्सा बन गया। फरनांडो वहीं नहीं रुके, उन्होंने पोइट्री फ़ेस्टिवल को महाकुंभ-सा रूप दे दिया और उनका स्वप्न था कि वे सभी फ़ेस्टिवल डायरेक्टरों के साथ मिलकर वैश्विक मंच बनाये, जो एक साथ कई देशों में काम करें।

इसमें कोई संदेह नहीं कि फरनांडो की सोच प्रबल है और वे कुशल मैनेजर भी हैं। सबसे पहले सभी को बोलने को कहा गया, अपने-अपने फ़ेस्टिवल के बारे में, इस काम में ही दो तीन दिन गुज़र गये। प्रस्ताव लाए गए और को-ऑर्डिनेटर कमेटी का चुनाव हुआ। मुझे पता नहीं कि क्या कारण था, लेकिन जिस निर्भीकता से मैं अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बात रख रही थी, मेरा चुनाव आराम से हो गया यानी कि विश्व के ग्यारह फ़ेस्टिवल डायरेक्टरों में मेरा नाम था, दरअसल, उस वक़्त तो मुझे मालूम ही नहीं पड़ा कि यह महत्वपूर्ण स्थान है, लेकिन बाद में जब मुझे अनेक फ़ेस्टिवलों में टिकिट सहित आमंत्रण मिलने लगा, तब समझ आया कि इस स्थान ने मुझे अन्य देशों के कवियों के पास पहुँचने में मदद की है।

सुबह की बैठकों के अतिरिक्त हम लोग दिन में कहीं ना कहीं समूह में ले जाये जाते, कभी पुस्तकालय में, तो कभी बगीचे में, तो कभी म्यूज़ियम में। एक दिन हमें बस से नगर दर्शन करवाया गया। मेरा एक कार्यक्रम था, जिसमें मुझे वैदिक कविता के बारे में बोलना था। अनुवादक का काम बड़ा महत्वपूर्ण था, क्योंकि उसे तत्काल अनुवाद करना था। डेनियल नामक युवा मेरे साथ सदैव लगा था। जब मुझे वैदिक पोइट्री के लिए बोलने का मौका मिला, मेरी प्रस्तुति के उपरांत सवालों का सिलसिला शुरू हो गया। दरअसल हॉल पूरा भरा था, शायद वे लोग किसी आध्यात्मिक गुरु के भाषण की उम्मीद कर रहे थे। मेरी प्रस्तुति तकनीकी तरीके से की गई थी। दक्षिण अमेरिका में भारतीय धार्मिक व्यवसायी सजग हैं, हालात ऐसे हैं, तो सामान्य जन किसी ना किसी तरह शांति चाहते हैं। वे लोग भी वेदों को चमत्कारिक ज्ञान मान रहे होंगे, निःसन्देह मेरी प्रस्तुति ने सवालों के लिए रास्ता खोल दिया, परिणाम यह हुआ कि पैंतालीस मिनट का सत्र दो घंटे से ऊपर चला और मेरा दोपहर का भोजन मिस हो गया। डेनियल मुझे पास के चर्च में ले गया और सिद्धार्थ नामक किताब के बारे में चर्चा करने लगा, जिसे उसने अपने कोर्स में पढ़ा था। डेनियल और उसका भाई, दोनों फ़ेस्टिवल से जुड़े थे, दोनों बहुत स्मार्ट, डेनियल मुझे इंडियन मदर कहने लगा। उसने बताया कि उसके पिता और माता का तलाक हो गया है। कहने लगा- मेरे पिता अच्छे हैं, लेकिन अच्छे पति नहीं हैं... शायद। माँ ने पिछले महीने फिर से शादी कर ली... अपने लवर से, जो उन्हें फेसबुक में मिला, अब वे स्पेन में रह रही हैं...। आई एम हैप्पी फ़ोर माय मॉम...।

वह ख़ुशी से कह रहा था। मैं समझ रही थी कि इस देश की पारिवारिक स्थिति बहुत बिखर गई है। यह मेरी मेडेलिन की पहली यात्रा थी, पूरे दस दिन तक हम कहीं ना कहीं कविता पाठ करते, सुबह बैठक में संवाद करते और शाम को सारे लोग नाचना शुरू कर देते। नाच सुबह तक चलता, मुझे नाचना-गाना बिलकुल नहीं आता है, तो मैं अकसर सोने के लिए चली जाती थी।

कोलंबियन जन मयूर की तरह होते हैं, जिनके लिए नाचना साँस लेने-सा सहज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है, क्या बला का नाचते हैं...।

यह यात्रा मुझे पिकनिक-सी लगी, बस कविता पढ़ना, बतियाना, हँसना... खिलखिलाना... इस यात्रा ने मुझे एक अलग ही दुनिया से वाकिफ़ करवाया और अनेक मित्र दिए।

कविता का कुंभ मेडेलिन

पुनः यात्रा मेडेलिन, कोलंबिया 2014

मेडेलिन की पहली यात्रा में कविता को लेकर यादें थीं, हँसी थी, फव्वारे थे, लेकिन इस शहर को तो तभी समझा जब दुबारा 2014 में जाना हुआ, इस बार को-ऑर्डिनेटर कमेटी की मीटिंग थी, फ़ेस्टिवल के साथ। फ़ेस्टिवल का चेहरा पुराना ही था, सिवाय इसके कि अब फ़ेस्टिवल को और अधिक विस्तार मिल गया था और हमारी बैठकों के विषयों में गंभीरता आ गई थी। इस बार मैंने कुछ नोट्स लिखे, जो लोगों से बातचीत के आधार पर थे, और जो कोलंबिया को ज़्यादा समझ रहे थे।

दुनिया धधक रही है...

कल अपनी अनुवादक केतलिना से बातचीत हो रही थी, वह भारतीय अरेंज मैरिज के प्रति बेहद उत्सुक थी। मैं क्या बताती उसे कि हमारे यहाँ शादी एक बहुत बड़ा व्यापार है, जहाँ लड़कियाँ जला दी जाती हैं कि उन्हें और पैसा लाना है, पति पीटता है कि वह घर में एक गुलाम बीवी रखते हुए बाहर मुँह मारना चाहता है, कि माँ-बाप लड़की पैदा होते ही उसकी शादी की चिंता शुरू कर देते हैं, क्या बताती उस ख़ूबसूरत युवा लड़की को?

क्या बताती की शादी की नौटंकी के लिये लोग लाखों रुपए बस फूँक देते हैं, क्या कहती कि जो प्रौढ़ दंपति रोज़ाना लड़ाई से दिन शुरू करते हैं, वे अपनी शादी की वर्षगांठ के नाम लाखों रुपए उड़ा देते हैं!

क्या कहती कि ये शादी बेहद पारिवारिक कार्यक्रम से बेहद भौंडे दिखावटी कार्यक्रम में बदल गया है। मैं उस पीढ़ी की हूँ, जब शादी में परिवार-कुटुम्ब के लोग हँसी-ख़ुशी राज़ी होते, सब मिलकर घरेलू उपकरण जैसे सिलाई मशीन, रेडियो आदि देकर लड़की को विदा करते, ससुराल वाले बहुरानी कहकर सम्मानित करते...। सारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दायित्व सामाजिक हुआ करता था, क्या बताती... ? लेकिन केतलिना ने अपने देश की जो स्थिति बखान की, मेरा दिल दहल गया।

वह बतलाने लगी कि- यह वह जगह है, जहाँ गुरिल्ला लोगों के सिरों से फुटबॉल खेलते हैं, जहाँ ड्रग माफ़िया और गुरिल्ला आमने-सामने खड़े होने की बजाय लोगों के सामने खड़े हो गये हैं। वह बतलाने लगी कि पहले एक ड्रग माफ़िया समूह था, उसके विरोध में दूसरा खड़ा हुआ, और एक के बाद एक खड़े होते गए, अन्ततः वे एक-दूसरे के सिरों से फुटबॉल खेलने लगे, उनके बीच पिसे सामान्य जन, जो गाँवों में रहते थे, जो मजबूर थे। वह कहने लगी कि हमारे यहाँ शादी कोई बंधन नहीं है, आज होती है, कल टूटती है, लेकिन इससे अनेक बच्चे अनाथ हो जाते हैं। यहाँ धर्म केवल एक है, कैथोलिक, तो वह भी बंधन नहीं, फिर भी समाज तरह-तरह की समस्याओं से जूझ रहा है। धधक रही है दुनिया... केतलिना कह रही है, बहुत ग़रीबी है यहाँ और कारण हैं ड्रग माफ़िये, गुरिल्ले, और गुरिल्लो के ऊपर गुरिल्ले... लोग गाँवों से भाग कर आते हैं और पहाड़ों पर टिन के घर बना लेते हैं, छोटी-छोटी चीज़े बेचते हैं, कुछ को भोजन, तो कुछ को वह भी नहीं...। गुरिल्ले पैसों के लिये कुछ भी कर सकते हैं, वे लोगों को मार कर उनके सिरों से फुटबॉल खेलते हैं, वह कहने लगी कि ग़रीबी इतनी है कि कल एक स्त्री मिली, जो कह रही थी कि वह कविता सुनने जगह-जगह जाना चाहती है, लेकिन उसके पास बस के लिये एक डॉलर नहीं है...। कविता यहाँ मन की शांति का ज़रिया है, लोग कविता को बेहद धार्मिकता से सुनते हैं।

पहाड़ और टिन, ग़रीबी के चीथड़े...

मेडेलिन की हैंगिंग ट्रेन एक बड़ा आकर्षण है, जो पहाड़ों से शहर के मैदान तक पहुँचने का ज़रिया है। पिछली बार मैं इसका आनंद लेने से वंचित रह गई थी, लेकिन इस बार मौका मिला। हम लोग मेट्रो से होते हुए हैंगिंग ट्रेन में सफ़र करने को निकले हैं, हमारे सहायक हैं माइन इंजीनियर जर्मेन और उनकी पत्नी, ये युवा दंपति पिछले कई वर्षों से मेडेलिन फ़ेस्टिवल से जुड़े हैं, फ़ेस्टिवलों से जुड़े युवक-युवतियाँ अच्छे दुभाषिया, कविता पाठक और गाइड के रूप में काम करते हैं, फ़ेस्टिवल संयोजकों ने हमें अकेले होटल से बाहर निकलने को मना कर दिया है, उन्हें क्या भय है, हम समझ सकते हैं, क्योंकि ड्रग माफ़ियों और गुरिल्लों का सबसे बड़ा निशाना बाहरी नगरिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होते हैं, जिन्हें वे बंधक बनाकर पैसा वसूल कर सकते हैं, लेकिन मुझे आश्चर्य होता है, जब ये नाज़ुक लड़कियाँ हमें एस्कोर्ट करती हैं, क्या इन्हें किसी से भय नहीं है? लेकिन पूरा शहर ही नाज़ुक-नाज़ुक ख़ूबसूरत लड़कियों से अटा पड़ा है।

कल केतलिना ने बताया ही था कि पास के गाँवों के लोग ड्रग माफ़ियों और गुरिल्लों के भय से पहाड़ों पर आकर टिन के मकान बना कर रहते हैं। आज इस हैंगिंग ट्रेन के सफ़र ने दिखा भी दिया। हम लोग डाउन टाउन में हैं, जो मुख्यतया धनवानों का रिहाइशी इलाका है और शॉपिंग मॉल से अटा है, लेकिन शहर की ग़रीबी, भय और आतंक पहाड़ों की तलहटियों में रहती है। अब तक मेरे दो कविता पाठ आम जगहों यानी कि पार्क और दूर के कस्बाई कल्चर सेंटर में हुए हैं, जहाँ श्रोतागण आम जन हैं, वे कविता को सुनकर सीटी बजाने लगते हैं, चिल्लाने लगते हैं। कल मेटिन और मय्यसर का पाठ साइंस यूनिवर्सिटी में हुआ था, जहाँ डेंटल मेडिकल और अन्य साइंस विषयों की पढ़ाई होती है, लेकिन वहाँ श्रोताओं का रिएक्शन बेहद ठंडा था, शायद अभिजात्य कविता से दूर करता है।

हाँ, तो हम जब हैंगिंग ट्रेन में चढ़ते हैं, तो दिखाई देता है कि हम जैसे-जैसे ऊपर चढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे लोगों का अभिजात्य घटता जाता है, ख़ास पहाड़ों पर टिन या लकड़ी के बने बेहद कमज़ोर मकानों के गुच्छे से दिखायी देते हैं, वे मानों सिर से सिर भिड़ाये खड़े हैं, घरों की छतें और उनपर सूखते कपड़े घरों के भीतर की स्थितियों का बखान कर देते हैं। ये वे लोग हैं, जो गाँवों से भगाये गए हैं या ख़ुद भाग कर आ गए हैं। हैंगिंग ट्रेन उनके लिए वरदान है, जिस पर चढ़कर वे रोज़ाना शहर में आ पहुँचते हैं। छोटा-मोटा रोजगार करते हैं, रात को फिर वापिस पहाड़ पर। सामान्यतया बड़े शहरों में पहाड़ों पर रईस रहते हैं और डाउन टाउन में सामान्य, लेकिन यहाँ पर खाते-पीते लोग शहर के बीच में थे और ग़रीब-ग़ुरबा दूर ढकेल दिए गए थे।

पहाड़ों में ठंड होती है, ये मकान बस टिन के बने हैं, जिनमें सूराखें तक दिखाई दे रही हैं, कुछ कच्ची ईंटों के हैं... ये लोग रोज़ाना इस मेट्रो को पकड़ कर शहर जाते हैं और छोटी छोटी चीज़े बेचते हैं...।

कभी-कभी लगता है कि यह समय भविष्य में विस्थापन काल के रूप में याद किया जायेगा, यह भी तब, जब इन घड़ियों का इतिहास सही-सही लिखा जाये... और हम जानते हैं कि इतिहास काफ़ी कुछ अलग भाषा बोलता है, साहित्य को अपना दायित्व निभाना चाहिये। कभी-कभी साहित्य भी अपने सुर को इस तरह बदल देता है कि असलियत देखने के लिये भीतरी पर्तों को उधेड़ना पड़ता है। जैसे कि सूरदास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को पढ़ते वक़्त तत्कालीन शासकीय शोषण की जानकारी नहीं मिलती, जिसे अमृतलाल नागर सूर के नाम पर ले आये।

ख़ैर, अब हम इस वक़्त की बात कर रहे हैं, लोग विस्थापित हो रहे हैं, ताकि वे औरों के मुकाबले ज़्यादा धन कमा सकें, वे उन देशों की ओर भाग रहे हैं, जहाँ ज़्यादा सुविधा और धन है, इससे नुकसान तो किसी का नहीं, बस इतना ही है कि वे अन्य युवकों के हिस्से को मार कर सिर्फ़ ख़ुद को आगे बढ़ा रहे हैं। लोग विस्थापित हो रहे हैं, भूख की मार से बचने को, वे अपने ही देश में अपने ही हालातों के शिकार हो भाग रहे हैं कि घर-परिवार को दो रोटी जुगाड़ दें, यहाँ पर हमारी ग्रामीण नीति और सोच मात खाती है। कभी-कभी विस्थापन का विचित्र कारण होता है, देश के भीतर गुज़रता घमासान है, जैसा कि मुझे कोलंबिया, दक्षिण अमेरिका में देखने को मिला। कारण बड़ा विचित्र है, कोलंबिया को नशे की तस्करी ने वैश्विक नक्शे में जो जगह दी, वह उसके लिये अपमान की बात है, लेकिन यह अपमान उन करोड़ों लोगों के अपमान से बहुत कम है, जो इसे लगातार झेल रहे हैं। कोलंबिया का मेडेलिन शहर पहाड़ियों से घिरा है। यहाँ बेहद सर्दी होने पर भी लोग किस तरह से टिन के घरों में रहते हैं, सोचने की बात है। रात होती है, तो ये काली पहाड़ियाँ असंख्य दीयों से टिमटिमा उठती हैं, जो इन टिनों के घरों मे जलते हैं, दरिद्रता दूर से कितना सौंदर्य जगा देती है, देखने लायक है।

गृहयुद्ध के विस्थापितों का दुख तो न जाने कब से शुरू हुआ, वियतनाम, कोरिया, अफ़गानिस्तान, इराक, सीरिया... ये सब अभी तक जारी है, और ना जाने कब तक रहेगा, विस्थापन इस सदी का सबसे बड़ा दाग है।

कविता के विरोध में

बाज़ार में मुझे कमसिन लड़कियों की कमर पर बच्चे लटके दिखाई देते हैं, तो मैं एक स्थानीय अनुवादक से पूछती हूँ, मालूम पड़ता है कि मातृत्व यहाँ सबसे महत्वपूर्ण है, ख़ासतौर से निम्न आर्थिक वर्ग की लड़कियाँ बेहद कम उम्र में माँ बनना पसन्द कर लेती हैं, माँ बनने के लिये विवाह की आवश्यकता नहीं है, और इन युवा माँओं को प्रौढ़ा माँएँ बड़े प्यार से अपना लेती हैं, एक घर में कई जनरेशन के बच्चे साथ खेलते-बढ़ते हैं, हाँ अभिजात्य वर्ग की स्थिति दूसरी है, वे भी भारतीय युवाओं की तरह पढ़-लिख कर अमेरिका या यूरोप जाने का सपना देखते हैं, और ज़िंदगी को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सालसा क्लबों में एन्जॉय करते हैं।

किस तरह से शहरों का वर्गीकरण हो जाता है, कविता को ज़िंदा रखने में ज़मीन से जुड़े दिलों की ज़रूरत होती है, चाहे आप उन्हें पहाड़ों में क्यों ना ढकेल दें। मैं वापिस लौटकर कुछ पंक्तियों में बोझ हल्का करती हूँ...

मेरे देश में कोई गाजा लाइन नहीं है
न ही सड़कों पर जहरीले धुएँ
लेकिन बम के गोलों के खाली खोखों में
फिलिस्तानी स्त्रियाँ मेरे
देश में बम की महक भेजती हैं

मेरे देश के बच्चे कनफोड़ धमाकों में
आँख नहीं खोलते
लेकिन जब एक फिलिस्तानी बच्ची
अपनी गुड़िया की आँखें मींचते हुए फफकती है
हत्या का तांडव उसकी आँखों से गुड़िया
के जेहन में ना उतर जाये
तो मेरे देश की हवा ना जाने क्यों नम हो जाती है
हालाँकि मानसून अभी दूर है

मेरे देश के इतिहास के कुछ पन्नों में
खून जमा है, लेकिन मेरे देश के शायरों ने
उन पन्नों पर कविता का इतर छिड़का है

युद्ध तुम चाहे कहीं भी हो,
पहाड़ों पर चढ़े टिन के घरों में
नालियों में बहते नशे में
या फिर
दो देशों के बीच
मेरी कविता के विरोध में ही खड़े लगते हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीन गाँठें

कल शाम को मारिया के साथ यूँ ही टहलने निकली, यह एक प्रमुख सड़क थी, जैसा कि आमतौर से होता है, सड़क के किनारे फुटपाथ पर कुछ स्थानीय आदीवासी जन हाथ से बने मोतियों के आभूषण आदि बेच रहे थे, एक जगह मैं रुकी, जहाँ पेड़ की छालों और पत्तियों से बने आभूषण थे, बेहद ख़ूबसूरत... मेरे रुकते ही उस आदिवासी महिला ने अपना व्यापारिक कौशल दिखाना शुरू कर दिया... उसने मारिया के ज़रिये मुझसे संवाद करना शुरू कर दिया। उसने कहा कि वह हमें एक भेंट देना चाहती है, और फिर कलावे जैसे धागों के गुच्छे को सामने रख धागा चुनने को कहा। मैंने और मारिया ने एक एक धागा चुना, उसने पहले मारिया की बाईं कलाई पर एक धागा बाँधना शुरू किया... पहली गाँठ बाँधते हुए उसने कहा- एक प्रेमपूर्ण कामना करो..., फिर उसने गाँठ बाँध ली, फिर कहा कि एक पारिवारिक सुख की कामना करो, फिर गाँठ बाँध दी, फिर कहा कि एक आध्यात्मिक कामना करो, तीन गाँठ के बाद उसने धागे का सिरा काट दिया, यही क्रिया मेरे साथ दुहराई...।

फिर कहा, आप चाहे तो एक सिक्का दे दें या फिर कुछ ख़रीद लें, आपकी इच्छा के अनुसार। इस आचार के बाद कौन मूर्ख होगा, जो कुछ ना कुछ नहीं ख़रीदेगा!

इस बार जब उससे मिलूँगी तो कहूँगी
एक वैश्विक प्रेम के लिए
एक प्रकृति के लिए
एक मानवीय बौद्धिक विकास के लिए

कविता और भारतीयता

कल रात मारिया और बरनास, (फ्रांसीसी कवि) से बस यूँ ही गपशप हुई, अन्य की तरह मारिया भी कविता और भारत के संबंध से लगभग अनजान ही थी, मैंने उसे बताया कि कविता भारत में ज्ञान का माध्यम रही है। यहाँ भास्कराचार्य ने लीलावती नामक गणित की पुस्तक लिखी, जिसकी भाषा कविता थी, गणित के सवालों को सिखाती हुई यह पुस्तक कविता के लिये भी एक मापदंड थी, वैदिक ऋचाओं की तो बात छोड़ दो, जहाँ कवि वैद्य रोगोपचार के लिये औषध से सीधा कवितामय संवाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करता है। यदि श्रृंगार की कविता देखो तो भारतीय कविताओं से बढ़ कर क्या? तमिल संघम के काव्य विकास को तो देखना बेहद सुखद है।

कल मेरा कविता संवाद था एक छोटे से शाकाहारी रेस्तरां में, जिसका नाम था, 'एस्प्रितु लिब्रे' यानी फ्री सोल या फिर आज़ाद रूह। बेहद छोटी-सी जगह, लेकिन बला की ख़ूबसूरत। फुटपाथ पर ही नन्हा-सा शामियाना, कुर्सिया, और रेस्तरां के बाहर मंच भी। कार्यक्रम तीन बजे से था, मैं 2. 30 पर पहुँचा दी गई। देखा कि उन्होंने वीणावादिनी के साथ मेरे चित्र का पोस्टर बना दिया, फुटपाथ पर प्रेम, शान्ति और प्यार हिन्दी में लिखा था। जगह-जगह भारतीयता को लाने की कोशिश हुई थी। चिलचिलाती धूप में कोई सुनने को आएगा भी? मुझे संदेह था, लेकिन साहिब ठीक 3 बजे सारी कुर्सियाँ भरी थी, हालाँकि उनकी संख्या 25 के क़रीब ही होगी। माइक बेहद अच्छा था, जिससे सड़क पर चलती गाड़ियों का ज़्यादा प्रभाव नही पड़ पाया।

मैंने पहले अनुवाद पाठिका से कविता पढ़ने को कहा, फिर मैंने पढ़ना आरंभ किया, लेकिन उससे पहले अपने देश के व्यापक साहित्य और विज्ञान के कविता से अंतर्संबंध पर चर्चा भी की।

कविता पाठ शुरू हुआ तो लोग और सुनने की माँग करते रहे। एक घंटे की बैठक ढाई घंटे तक चली। बीच-बीच में गाड़ियों का शोर, कभी हवाई जहाज का गुज़रना, तो कभी गाड़ी में बैठे लोगों का गाड़ी धीमी कर सुनने की कोशिश करना, बड़ा रोचक लग रहा था। मैं लौटने लगी, तो उन लोगों ने कहा, आपकी कविताएँ बताती हैं कि आप फ्री सोल हैं, और हमारा रेस्तरां भी फ्री सोल है। आयोजकों के चुनाव को दाद देनी पड़ेगी।

शुक्रिया आजाद रूह जन !!

और आखिरी दिन आ गया, इस दिन सभी कवि एक साथ पाठ करते हैं, इस बार हमारी को-ऑर्डिनेटर्स की मीटिंग में वैश्विक शांति के लिए एक प्रस्ताव पारित हुआ। प्रस्ताव स्पेनिश और अंग्रेज़ी में लिखा गया। अब तक कॉर्डिनेटर्स कमेटी में मैं एकमात्र स्त्री बची थी, अन्य सभी पुरुष थे, इसलिये यह कहा गया कि अंग्रेज़ी में प्रस्ताव रति पढ़ेगी, स्पेनिश में फर्नान्डो, जो मेडेलिन फ़ेस्टिवल के डायरेक्टर भी हैं। अग्रज अमेरिकन कवि जैक अंग्रेज़ी में भूमिका बाँधेंगे। आख़िरी दिन लोगों की संख्या बहुत ज़्यादा थी, लोग दरख़्तों तक पर चढ़े हुए थे। पहले कविता पाठ शुरू किया, जब शाम गहराने लगी तो हम सब सदस्य एक साथ बैठे, और सबने अपनी-अपनी कविता पढ़ी। फिर फर्नान्डो ने मीटिंग के बारे में, और हमारे प्रस्ताव के बारे में बताया। फिर जैक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ने भूमिका बाँधी। फिर जैसे ही मैं अंग्रेज़ी में प्रस्ताव पढ़ने खड़ी हुई, सब लोग अपने हाथों में जलती मोमबत्ती लेकर खड़े हो गए। ऐसा लग रहा था हज़ारों तारे ज़मीन पर उतर आये हों, मै अभिभूत थी, और मैंने सहज आवाज़ में प्रस्ताव पढ़ दिया, इसके बाद फर्नान्डो ने स्पेनिश में प्रस्ताव पढ़ा, जन समूह में हर्ष का कोलाहल हुआ।

हम सब रोमांचित थे, आनंदित थे। नेटिव अमेरिकन जाय हार्जारो की कविता प्रस्तुति से कविता पाठ समाप्त हुआ। इसके उपरांत कोलंबियन संस्कृति खुल कर सामने आई, मैंने पहले ही कहा था कि कोलंबियन जन्मत: नर्तक होते हैं, सांबा उनका प्रिय नृत्य है, और अकसर सभी इसमें कुशल हैं, इस आख़िरी रात कक्ष ठसाठस जोड़ों से भर गया, जिन्हें देख कर ऐसा लग रहा था कि ये युगल, दो जिस्म होते हुए भी एक हैं, जिस्म और मन दोनों से, वह बात अलग है कि कितने साल वे एक रहेंगे, क्योंकि दो यात्राओं में ही कई जोड़ों को टूटते और नया बनते देख लिया है। मेडिलिन सच में कविता का कुंभ है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शायराना घरौंदे में एक पंछी...

(तुर्की के डेंजिली प्रांत से प्राचीन संस्कृति की ओर)

21 मार्च 2012

उसने एक बार भी मुड़ कर नहीं देखा
उसने एक बार भी जाते जाते विदा नहीं कहा
वह बस चुप हो गया
और अपने बाजे को भी नहीं उतारा
किसी ने फिर कोई ख़बर नहीं सुनी
वह किसी दिन अचानक नहीं चला आया
हालाँकि किसी को उसका इंतज़ार नहीं था
और ना ही उसके लिए रोया
–अहमत तैलि

खाने की लंबी मेज़ पर मंगोली नाक नक्शे वाले का दर्द केवल तुर्की नहीं, पूरी दुनिया, वे सब मुल्क़, जहाँ के लोक गायक विलुप्त होते जा रहे हैं, साझा कर सकते हैं। हम होटल शीर यानी की शायरी के घरौंदे में शायराना अंदाज़ में सजी लंबी सी मेज़ में तुर्क के ख़ास कवियों का वक्तव्य सुन रहे हैं। इस्लामिक देशों से बेहद अलग, अमेरिकन राजनीति से प्रभावित इस देश का दर्द देखने में संभवतया महसूस नहीं होता, लेकिन शायरों, लेखकों ने इस दर्द को बेहद होशियारी से थामा हुआ है, दरअसल यहाँ के शायरों, लेखकों और कलाकारों ने सरकार की नकेल बखूबी पकड़ रखी है, यह उनके वक्तव्यों से जाहिर होता है।

अहमत तैलि कह रहे हैं– हमें सरकार से कोई भय नहीं, वे हमें जेल में डाल कर देख ही चुके हैं, हमारी कलम रुकती नहीं, हद से हद वे हमारे सिर से छत उतार लेंगे, हमारी रोटी छीन लेंगे... जब तक यह होटल शायरी है, हमें उसकी भी चिंता नहीं।

अब यह शीर होटल क्या, एक जुनून है इसात बोजबियक का, जो इस होटल के मालिक हैं। शीर में इसात ने कविता को मिट्टी-गारे से रचा है, रंगों से सजाया है और फिर दिल से अपनाया है। शीर के सामने कलम-दवात को थामे दो हाथ हैं, होटल में घुसते ही तुर्की कवियों की मूर्तियाँ दिखाई देंगी, दीवारों पर कवियों के चित्रों की बेहद ख़ूबसूरती से प्रस्तुति... सोफ़े के कपड़ों पर कविता की पंक्तियाँ और मेज़ों पर कविता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिखे काग़ज़ की कतरनें... शीर में कमरों के नाम तुर्क के बड़े कवियों के नाम पर रखे गए हैं। कुछ कमरे कवियों के लिए इस तरह से सुरक्षित हैं कि वे जब चाहें, यहाँ आकर रह सकते हैं। कमरों के भीतर श्वेत-सज्जा के साथ दीवार पर कवि और कविता की चित्रमय प्रस्तुति... शीर के चर्चा कक्ष में दुनिया के बड़े-बड़े कवियों के चित्र और उनकी कविताएँ ख़ूबसूरती से सज्जित हैं। भोजन कक्ष में कविता-वृक्ष है, जिसमें दुनिया के कवियों की कविता हाथ से लिख कर पत्तों की तरह टाँगी गई है। वातावरण में बेहद सादगी और शाइस्तगी...।

कहते हैं कि नसरुद्दीन होड्जा ने यहाँ की फ़ज़ा में कविता देखी थी। इसात ने उसे साकार किया, इसात के सपने में एक पाखी आई, प्यार के शब्दों को चुनने के लिए, उसने पहाड़ों, घाटियों, नदियों और नहरों में से प्यार के शब्दों को चुना और इसात को थमा गई... इसात ने फिर रेत के गारे और सीमेंट को कविता में मिलाया, इस्पात और कंक्रीट से कविता को मज़बूत किया, रंग रोशन में कविता के छींटे दिए और शीर होटल यानी कि शायरी का होटल बना दिया।

मैं नहीं जानती कि व्यावसायिकता के इस दौर में शायरी के घर का क्या हासिल!

मैं नहीं जानती कि युद्ध की विभीषिका में प्रेम का क्या हासिल !

मैं बस यह समझ रही हूँ कि कुछ भी नामुमकिन नहीं...

कल्पना का हक़ीक़त में बदलना या फिर हक़ीक़त का कल्पना में साकार होना।

21 मार्च 2012 की रात को जब मैं दिल्ली के हवाई अड्डे पहुँची, तो उतनी परेशानी नहीं हुई, जितनी कि मुंबई हवाईअड्डे में हुआ करती थी। चैकिंग आदि का काम काफ़ी ज़ल्दी ही हुआ, लेकिन सबसे अच्छा अनुभव वीज़ा काउंटर में हुआ... ऑफ़िसर ने पूछा-कहिए मैडम बच्चों से मिलने जा रही हैं?

मैंने कहा - नहीं कवितोत्सव में।

उसे इस जवाब की आशा नहीं थी, आजकल मेरी उम्र की अधिकतर महिलाएँ विदेशों की यात्रा अपने बच्चों के बच्चों की आयागिरी करने को ही जाया करती हैं। वह पूछने लगा-आप लिखती हैं? क्या किताब भी है?

मैंने कहा कि संभवतया लिखने के कारण ही बुलाया जा रहा है और अपना कार्ड उसे दे दिया। गूगल सर्च कर लीजिए।

वह कहने लगा- मैडम मुझे भी लिखने पढ़ने का शौक़ है, इसलिए पूछा था।

चलो शुरूआत एक पढ़े लिखे आदमी के दर्शन से हुई। मन ख़ुश था, लेकिन अब समस्या थी वक़्त काटने की... फ़्लाइट सुबह की थी और मैं रात के एक बजे ही चैकिंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर चुकी थी। सो नहीं सकती थी, क्योंकि साथ में एक बैग था और मैं अकेली थी।

अकेले सफ़र करने का सबसे बड़ा फ़ायदा यह होता है कि हम पूरे वक़्त आस-पास से परिचित होते रहते हैं। कोई साथ हो तो हम बतियाने में मशगूल हो जाते हैं। मैं कुछ वक़्त बैठती, तो कुछ वक़्त टहलती, किसी तरह से चार बजे, तो हमें आख़िरी पड़ाव में बैठने का मौका मिला। मुझे आश्चर्य हुआ कि यहाँ सुरक्षा जाँच बेहद सहज थी, कोई ख़ास बंधन नहीं, यह फ़्लाइट इस्तांबुल जा रही थी, लेकिन यूरोपियन देश के काफ़ी यात्री थे, जो वहाँ से आगे की उड़ान लेने वाले थे। मैं देख रही थी कि अनेक विदेशी गेरुआ वस्त्र पहने हुए ठेठ वृंदावन वाली वेशभूषा में थे। विकास सर्पोमुखी होता है, जहाँ से शुरूआत, वहीं पर अंत। ये युवक उन देशों के होंगे, जहाँ हमारे युवक जाने को लालायित रहते हैं और वहाँ के नवयुवक यहाँ शांति की खोज में, दोनों की खोज छद्म है, संभवतया वे ताउम्र जान भी नहीं पाते, लेकिन हर सिद्धार्थ के भाग्य में बुद्ध बनना थोड़े बदा होता है।

एक युवती केसरिया लहंगा और ओढ़नी पहने, गले में मालाएँ पहने मेरे पास आ बैठती है। मैं उसकी तरह देख कर मुस्कुराती हूँ, तो वह मुस्कुराहट में जवाब देती है। मैं उससे कुछ पूछना चाहती हूँ, लेकिन इस तरह कि उसे बुरा ना लगे।

'किसी आश्रम से लौट रही हैं आप?' -मैंने उस युवती से अंग्रेज़ी में पूछा।

'जी हाँ आश्रम से ही'- उसने किसी आश्रम का नाम लिया, जो मुझे याद भी नहीं।

'वहाँ क्या करती हैं?' मैंने हिचकते हुए पूछा।

'बस भजन गाना, मंदिर की सफ़ाई करना, माला जाप करना...', उसने जवाब दिया। मैं विस्मित थी, इतने भर से कोई आनंद कैसे पा लेता है? उस महिला के माथे पर चंदन की बिंदियों से लग रहा था कि वह राधावल्लभ जैसे किसी सम्प्रदाय वाले आश्रम में जाती रही होंगी।

'क्या आप अपने देश में भी ये वेशभूषा पहनती हैं?' मेरा अगला सवाल था।

'नहीं, मैं छह महीने नौकरी करती हूँ, और फिर छह महीने भारत आती हूँ।', उस पैसे से छह महीने काम चला लेती हूँ।

'क्या नौकरी?' मैंने पूछा।

'हर बार नई खोजनी पड़ती है, क्योंकि लग कर काम नहीं कर पाती।' उनका जवाब था।

मुझे वे पंछी याद आए, जो वर्ष के छह महीने उड़कर दूरस्थ देशों में जाते हैं और फिर लौट कर अपने डेरे में लौट आते हैं। पीढ़ी दर पीढ़ी, उनका मार्ग नहीं बदलता,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनकी यात्रा का प्रयोजन भी नहीं...। मुझे वह युवती प्रवासी पंछी लगी, जिसकी यात्रा का गंतव्य मुझे तो समझ नहीं आया।

इस्तांबुल में मेरे पास काफ़ी वक़्त था, डेंजिली के लिए मेरा जहाज शाम को था, मुझे अन्तरराष्ट्रीय हवाईअड्डे से अंतरदेशीय अड्डे की ओर जाना था। इस देश में आते ही मुझे यही लगने लगा कि मैं भाषा नामक वस्तु से पूर्णतया अपरिचित हूँ। सब कुछ तुर्की भाषा में था। इशारों के साथ में जब घरेलू हवाईअड्डे पहुँची, तो मेरे लिए वक्त मानो थम-सा गया। मैंने अपने साथ कोई पुस्तक रखी नहीं थी। हवाईअड्डे में अंग्रेज़ी के नाम पर अख़बार तक नहीं था। मैं घूम-घूम कर दूकानों के चक्कर लगाती रही। फिर थक कर बैठ जाती, लेकिन वक़्त बिताना बेहद मुश्किल होता जा रहा था। पुस्तकों की दूकानों पर अंग्रेज़ी में एक भी किताब नहीं।

किसी तरह शाम के चार बजे, तो मुझे रकेल और अतौल दिखाई दिए, वे भी इसी फ़्लाइट से डेंजिली जा रहे थे। मुझे देख कर वे दोनों खुश हुए। मुझे पता चला कि रकेल पूरे दो दिनों से इस्तांबुल में है। खूब घूम रही है... काश मैं भी घूम पाती।

जब हम डेंजिली पहुँचे तो अन्य कवि नील हैव (डेनमार्क) दिखाई दिए। वातावरण में खुनक थी, लेकिन हवा बेहद तेज़ चल रही थी। मुझे कस कर ठंड लगने लगी। रकेल ने अपना लेदर का जैकेट मुझे दिया, मैं तो स्वेटर लेकर आई थी, लेकिन ऐसी हवा में स्वेटर काम ही नहीं कर सकता था।

जब हम लोग होटल शीर पहुँचे, तो रात हो चुकी थी, लेकिन अनेक लोग हमारा इंतज़ार कर रहे थे। सारी बातें या तो तुर्की में हो रही थी, या फिर फ्रेंच में। मैं सब चेहरों को दिमाग में दर्ज करने की कोशिश कर रही थी।

कहा गया कि हमें थोड़ी देर में नीचे डिनर के लिए पहुँचना है। मैं जब कमरे में पहुँची, तो विश्वास ही नहीं कर सकती थी कि कोई कमरा इतना काव्यात्मक हो सकता है। कमरे की दीवारों पर कविताएँ जड़ी थीं। हर जगह कविताओं के पर्चे रखे थे।

मुझे घर से निकले पूरे 30 घंटे बीत गए, इसलिए अच्छा-सा शावर लेना चाहती थी, निसंदेह भोज आरंभ हो चुका था, लेकिन मेरे लिए कुर्सी खाली रखी थी...

यहीं पर मुझे होटल शीर की कहानी सुनने को मिली, यहीं पर तुर्क के समकालीन कवियों से परिचय हुआ।

रेशम में बुने सपने

इतना आरामदायक कमरा और मेरी आँखों में नींद ही नहीं... ना वक़्त का भान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था। ना ही वक़्त कट पा रहा था, एकदम सन्नाटा, थोड़ी बहुत सोई तो फिर नींद खुल गई, अब मैंने नहा-धोकर तैयार होने की ठान ली, मेरी कलाई में बंधी घड़ी भारतीय वक़्त दिखा रही थी। नहा-धोकर नीचे आई, तो भोजन कक्ष में सन्नाटा पसरा था। एक-दो बैरे थे, लेकिन वे अंग्रेज़ी नहीं जानते थे, इसलिए कुछ कह नहीं पाए। मैं वापिस अपने कमरे में आ गई। नई जगह जाकर पढ़ना-लिखना मुझसे सम्भव नहीं हो पाता है। फिर मैंने अभी नेट एक्टिव भी नहीं किया था। मेरा फोन यहाँ काम नहीं कर रहा था।

वक़्त जैसे खिंचता जा रहा था, इस बार नीचे गई तो बढ़िया नाश्ता लगा था, लेकिन कवियों में से कोई दिखाई नहीं दिया। मैंने नाश्ता किया और कैमरा लेकर होटल में घूमने लगी। होटल में तुर्क के नामी कवियों की मूर्तियाँ लगी हुई थीं। एक छोटा-सा पुस्तकालय था, जिसमें कविता की पुस्तकें शीर की आकृति में बने शेल्फों में सजी थी। इसके उपरांत सभागार था, जिसमें तुर्क के ही नहीं विश्व के बड़े-बड़े कवियों के चित्र और उनकी कविताएँ थीं। जब बड़े कवियों का नाम हो तो टैगोर की उपस्थिति तो लाज़मी है। क्योंकि मुझे इस कवितोत्सव में आमंत्रित किया गया था, इसलिए मेरी कविताएँ और चित्र भी वहाँ था, निसंदेह मुझे ख़ुशी होती, लेकिन थोड़ा अटपटा ज़रूर लगा कि मेरे साथ यानीस रित्से का चित्र था, मुझे अपने बौनेपन का भान शिद्दत से होने लगा।

दोपहर के ग्यारह बजे तक हम सब तैयार थे, वेन में बैठ कर चलने को। हमारे साथ अंग्रेज़ी में बोलने वाला गाइड था, जो ख़ासतौर पर हम चार कवियों के लिए था। डेंजिली प्राचीन अन्तोलिया का एक हिस्सा है, जो तीन चीज़ों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। मुर्गा, सूती कपड़े और ख़ूबसूरत औरतें। हमारी बस सबसे पहले एक पहाड़ी पर चढ़ी, यह ख़ूबसूरत पहाड़ी बेतरतीब हरियाली से ढँकी हुई थी। नए नाम और नए उच्चारण दिमाग में आसानी से नहीं चढ़ते, इसलिए मुझे उस पहाड़ी का नाम तो याद नहीं है, लेकिन हमें बताया गया कि यहाँ से निकलने वाली नदी में बेहद उम्दा खनिज होते हैं। हमें बताया गया कि एक बार इस पहाड़ी सोते से खनिज युक्त मिट्टी उठाने के लिए कोई कंपनी आगे आई, लेकिन यहाँ की जनता ने उसके विरूद्ध मुहिम छेड़ दी। हज़ारों लोग इस सोते को घेर कर खड़े हो गए और कई दिन तक अपना घेरा नहीं तोड़ा। अन्ततः उस नदी का खनिज यहाँ के प्रवासी पक्षियों के लिए बच गया। हम सबने उतरकर उस सोते के सामने फोटो खिंचवाई और जनता के विश्वास को प्रणाम किया। मुझे केरल की खारी झीलें याद आ गईं, जहाँ से दिन दहाड़े रेत निकाली जाती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है और यह रेत इन खाड़ियों के चारों तरफ़ के मकानों, पेड़ों को नष्ट करती है।

इसके उपरांत हमें कारपेट विलेज जाना था। बाहर से बेहद साधारण-सी इमारत के भीतर कदम रखते ही ख़ूबसूरत कालीन बनाती महिलाएँ दिखाई दीं। बेहद तल्लीनता से कालीन बुनती ये स्त्रियाँ बिलकुल कश्मीरी स्त्रियों-सी ख़ूबसूरत लग रही थीं। हमें बताया गया कि एक रेशम के कालीन बनाने के लिए दो स्त्रियाँ कम से कम तीन वर्ष काम करती हैं। दो स्त्रियाँ इसलिए कि एक स्त्री को तीन घंटे से ज़्यादा काम नहीं करने दिया जाता है। अगले कक्ष में रेशम के कीड़े बनाने की प्रक्रिया दिखाई गई थी।

रेशम के कीड़ों को देखकर रेशम पहनने की इच्छा मर जाती है। लाखों कीड़े बस इसलिए जान खो बैठे कि एक इंसान उनके तन से कुछ वक़्त के लिए अपना तन ढँक ले... यहाँ एक नई बात मालूम पड़ी कि रेशम के कीड़ों की खोल को स्त्रियों के मेकअप के सामान जैसे लिपस्टिक आदि बनाने के लिए भेज दिया जाता है।

उससे अगले कक्ष में रेशम के धागों को रंगने का काम होता था। ये सारे रंग प्राकृतिक होते हैं। कालीन विलेज का संचालन केवल एक परिवार के लोग करते हैं, यह परिवार बहुत बड़ा है, हर सदस्य अपने-अपने हिस्से का काम कर लेता है और कारखाना आसानी से चल जाता है।

खाना बेहद लज़ीज़ था, शायद उनके घर में बना था। मुझे बिलकुल भूख नहीं थी, लेकिन इतना लज़ीज़ खाना हो तो कौन नहीं खाएगा।

भोजन के बाद हमे डेंजिली सिटी घूमने जाना था, लेकिन अतौल ने कार्यक्रम बदल दिया। उन्हें यूनिवर्सिटी में आमंत्रित किया गया था, तो उन्होंने मुझसे और रकेल से उनके साथ यूनिवर्सिटी चलने को कहा। निसंदेह हम सहर्ष तैयार थे।

डेंजिली के विश्वविद्यालय में

वह लगभग ऐसे हांफ रहा था, जैसे कि मीलों से दौड़ कर चलता आया हो, जबकि हम जानते थे कि वह इसी ठसाठस भरे सभागार के किसी कोने में बैठा होगा, हो सकता है कि काफ़ी वक़्त से कुछ कहने की हिम्मत भी जुटा रहा होगा। हो सकता है कि वह मन ही मन उन सब बातों को दोहरा रहा होगा, जिन्हें कहने की कोशिश में वह भागा चला आया था।

अतौल, तुर्की के लोकप्रिय कवि छात्रों की भीड़ से घिरे हुए थे। घनघोर राजतंत्रीय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जीवनशैली वाले इस राज्य में, जो अपने उदारवादी विचारधारा के कारण पश्चिम में ही नहीं, पूर्व में भी ख़ासा लोकप्रिय है, अतौल वामपंथी विचारधारा के कवि हैं, जो राजनीतिज्ञों के आँख की किरकिरी होते हुए भी युवा वर्ग और जनता में बेहद लोकप्रिय हैं। डेंजिली में पहुँचने के दूसरे दिन सुबह अतौल ने हम लोगों को यह बताया तो था कि उन्हें शाम को शीर होटल (शायरी होटल - डेंजिली) के कविता समारोह से पूर्व पमुक्कले विश्वविद्यालय में छात्रों को संबोधित करने जाना है। यह वह वक़्त था, जिसे शहर भ्रमण के लिए रखा गया था, लेकिन मुझे और रकेल दोनों को लगा कि शहर तो फिर घूमा जा सकता है, छात्रों से मिलने का इससे अच्छा अवसर मिलना नामुमकिन है। तुर्क में प्रवेश करते ही भाषा की समस्या का अनुभव लगातार हो रहा था। होटल मालिक इजत बोजबियिक के बेटे आनिल को छोड़कर कोई भी अंग्रेज़ी नहीं बोल पा रहा था। आनिल स्विटज़रलैंड में पढ़ाई कर रहा है, इसलिए मित्रों की संगत में थोड़ी बहुत अंग्रेज़ी बोल लेता है। अन्यथा यहाँ तुर्की के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा का चलन नहीं के बराबर लगा। अतौल भी अंग्रेज़ी की अपेक्षा फ्रेंच भाषा का बेहतर ज्ञान रखते हैं। पिछली शाम को सहभोज के वक़्त हम आनिल का उपयोग दुभाषिये के रूप में कर रहे थे। भाषा का न आना भी एक अजीब-सा मज़ा दे जाता है, पहली बार आप मूल भाषा को केवल आंगिक प्रतिक्रिया के रूप में देख पाते हैं। शब्द कानों से टकरा-टकरा कर बिखर जाते हैं। फिर दुभाषिये की जुबान में भाषा का अजीब-सा अर्थ प्रस्तुत हो जाता है। मैं सोच रही थी कि यूनिवर्सिटी के छात्रों के सम्मुख संभवतया भाषाई समस्या नहीं होगी, क्योंकि तुर्की जैसे विकसित देश में युवाओं में अंग्रेज़ी का ज्ञान अवश्य होगा।

जब हम विश्वविद्यालय पहुँचे तो गेट पर छात्रसंघ के अध्यक्ष और सांस्कृतिक प्रतिनिधि ने हम लोगों का स्वागत किया था। ये दोनों प्रतिनिधि बेहद चुस्त-दुरस्त और स्मार्ट लग रहे थे। ये दोनों प्रतिनिधि हमें लेकर सभागार पहुँचे, जहाँ हज़ारों की संख्या में छात्रों ने तालियों के साथ अतौल का स्वागत किया। हम लोगों के पहुँचते ही तालियों की गड़गड़ाहट शुरू हो गई, इसके उपरांत सभी छात्र त्वरित गति से उठे और राष्ट्रीय गीत गाने लगे। मैंने ऐसा दृश्य अपने देश में तो कभी नहीं देखा था। रकेल जो स्पेनिश कवि हैं, वे भी इस प्रथा से ख़ासी प्रभावित लग रही थीं। मंच पर अतातुर्क का बड़ा-सा चित्र लगा हुआ था। सभागार ठसाठस भरा था। निसंदेह वे सब भाषा के छात्र मात्र नहीं थे, इसका अर्थ तो यही था कि कविता विषय से अलग भी महत्व रखती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देश के प्रति इस तरह का जज्बा अनायस ही मन को भावविभोर कर देता है। यहाँ भी हम कार्य मात्र तुर्की भाषा में हो रहा था। अत: अतौल ने ही दुभाषिये का जिम्मा उठाया। उन्होंने अतिथि सत्कार को ध्यान देते हुए, सबसे पहले मुझे और रकेल को मंच पर आमंत्रित किया। फिर तुर्की में परिचय करवाते हुए कविता पढ़ने को आमंत्रित किया। अनुवाद अतौल ने पढ़ा।

मैं देख रही थी कि अतौल में एक लोकप्रिय नेता होने के सारे गुण मौजूद हैं। वे कभी भी काग़ज़ का सहारा नहीं लेते। मंच पर मज़े से चलते हुए कविताएँ पढ़ते जाते हैं। उनकी दृष्टि हमेशा दर्शकों पर टिकी रहती है, जिससे कविता संवाद का रूप ले लेती है। मैंने यह भी देखा कि जैसे ही वे एक ग़ज़ल पढ़ते, किसी अन्य का नाम छात्रों की जुबान पर आ जाता और वे बिना हिचके दूसरी ग़ज़ल पढ़ जाते। इसी बीच उनसे कुछ सवाल भी हुए, जिसका जवाब उन्होंने ग़ज़ल से दिया।

इसके उपरांत पुन: मुझे और रकेल को मंच पर बुलाया गया और हमसे भी सवाल किए गए। मैंने देखा कि भाषा की अज्ञानता के बावजूद अनेक छात्र और अध्यापक लगातार सवाल करते जा रहे हैं। एक दृष्टिहीन व्यक्ति का सवाल सबसे दिलचस्प था। उसने पूछा कि कविता अब श्रव्य रस क्यों खोती जा रही है। मैंने अतौल की ग़ज़लों पर ध्यान दिया था कि वे गायकी से काफ़ी दूर जाकर वैचारिक भावों को प्रधानता दे रही थीं। संभवतया उस व्यक्ति का इसी बात की ओर इशारा था।

मैंने उसे प्रतिपक्ष में सवाल किया– 'आपने मेरी और रकेल की कविताएँ सुनीं, हम दोनों ने अनजान भाषाओं कविता पढ़ी थीं, मैंने हिंदी और रकेल ने स्पेनिश में, आपको उन कविताओं को सुनकर क्या प्रतीत हुआ?'

उस व्यक्ति ने बेहद उम्दा जवाब दिया– 'मुझे आप लोगों की कविताएँ सुनकर ऐसा लगा कि आप जो कुछ कह रही हैं, उसमें एक पीड़ा का भाव तो है ही, साथ ही कुछ सवाल भी हैं...'

'फिर तो आप कविता को देख सकते हैं, जो सामान्यतया लोगों के बस में नहीं होता।', मैंने जवाब दिया।

सवालों का सेशन काफ़ी लंबा था, अब छात्र कुछ सवाल अतौल से करना चाहते थे, जो संभवतया देश की राजनीतिक समस्याओं को लेकर थे। हम लोग नीचे आकर बैठ गए।

मुझे यह तो मालूम था कि अतौल कम्युनिस्ट पार्टी के सक्रिय सदस्य हैं, जो सरकार पर ख़ासी लगाम कसते हैं। पिछली रात के सहभोज में एक बात बार-बार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उछल कर आ रही थी कि अधिकतर बुद्धिजीवी कभी ना कभी जेल भेजे गए थे। अतौल के बारे में तो मुझे मालूम ही था, लेकिन होटल के मालिक इसत के बारे में भी यह जानकारी मिली कि वे पहले तुर्की भाषा के अध्यापक थे। एक बार उन्होंने वे कविताएँ पढ़ीं, जिन पर सरकार ने प्रतिबंध लगा रखा था, तो उन्हें दो साल की जेल हो गई। ऐसे ही अन्य प्रतिष्ठित कवि अहमत तैली ने भी सरकार की कठोरता को लेकर कुछ बातें कही थीं।

विश्वविद्यालय के कार्यक्रम के उपरांत अतौल ने हमसे कहा कि हम दोनों होटल लौट जाएं, जिससे शाम के कविता पाठ के लिए तैयार हो सकें, वे वहीं रुक कर छात्रों से संवाद करेंगे। छात्रों की एक बड़ी भीड़ अतौल के हस्ताक्षर लेने के लिए इंतज़ार कर रही है...।

इसी वक़्त वह छात्र दौड़ा-दौड़ा आया था, उसने आते ही कहना शुरू किया कि वह हमसे बहुत ज़रूरी बात करना चाह रहा है। उसकी अंग्रेज़ी बहुत अच्छी तो नहीं, लेकिन वह अपनी बात प्रस्तुत कर सकता है।

यूनिवर्सिटी से होटल का रास्ता ज़्यादा नहीं था, इसलिए वह लगातार बोलने लगा।

'देखिए, मैं आप लोगों के द्वारा दुनिया को संदेश देना चाहता हूँ। आपको शायद मालूम ही नहीं होगा कि हमारे हज़ारों छात्र आज जेल में हैं।'

जेल में!! मैं आश्चर्यचकित थी। देखने में तुर्क बेहद संपन्न देश लगता है। इस्लाम धर्म होते हुए भी कट्टरता का नामो-निशान भी नहीं दिख रहा था। हालाँकि यूनिवर्सिटी के ऑडिटोरियम में दो तरह के तुर्क साफ़-साफ़ दिखाई दिए, एक बेहद मॉडर्न और दूसरा परंपरावादी, लेकिन कट्टरवाद कहीं नहीं महसूस हुआ।

वह युवा अपने छात्रों के संघर्ष के बारे में लगातार कुछ बताता जा रहा था। वह कह रहा था कि हज़ारों छात्र जेल में हैं, बस पुलिस आती है और छात्रों को पकड़ कर जेल में बंद कर देती है।

'ऐसा क्यों ? मैं आश्चर्यचकित थी, यहाँ तो सब कुछ इतना खुला-खुला लगता है, लगता ही नहीं कि हम किसी इस्लाम देश में रह रहे हैं।' मैंने कहा।

'हाँ, बाहर से सब कुछ अच्छा है, हमारी सरकार बेहद आधुनिक लगती है। पूरी अमेरिकन संस्कृति की अनुयायी, लेकिन भीतर ही भीतर बड़ा बवंडर मच रहा है। कट्टर ताकतें सिर उठा रही हैं। सरकार उन्हें भी खुश रखना चाहती हैं और ऐसे नियम बनाती हैं, जो देखने में सामान्य लगते हैं, लेकिन उनके भीतर कट्टरवाद है। उदाहरण के लिए पहले यहाँ आठ तक शिक्षा मुफ़्त थी, लेकिन अब उसे घटा कर केवल चार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तक कर दिया गया। इसका परिणाम शहरों पर तो नहीं, लेकिन गाँवों में पड़ेगा। ग्रामीण अभी भी शिक्षा पर ज़्यादा धन खर्च नहीं करना चाहेंगे, जिससे वे मुफ़्त में चलने वाले मदरसों में अपने बच्चों को भेजने लगेंगे। ये मदरसे सरकारी शह पर कट्टरता को बढ़ावा दे रहे हैं। यह अधिकतर पूर्वी तुर्क में ज़्यादा हो रहा है। इसी तरह से सरकार एक अलग तरीके से कट्टरता को बढ़ावा दे रही है। पर्यटन के बहाने पुरातन विचारधारा को तश्तरी में परोसा जा रहा है। यह स्थिति तुर्क के लिए ठीक नहीं है। सूफी संगीत के नाम पर कट्टरता को बढ़ावा दिया जाता है। हम छात्र जानते हैं और अपनी पीढ़ी को बचाना चाहते हैं। अतातुर्क का सपना भंग नहीं होने देना चाहते हैं। सरकार हम पर नज़र रखती है और मौका देखकर अलग तरीके से हमारी आवाज़ बंद करना चाह रही है।

'यदि हम साधारण-सी बात, जैसे कि तकनीकी सुविधा आदि के लिए भी सवाल उठाए, जेल में बंद कर दिए जाते हैं। हमारे ना जाने कितने साथी जेल में बंद हैं, ना जाने कितने साथी गायब हो गए हैं। हमारा मनोबल कम नहीं हुआ है, लेकिन हम चाहते हैं कि दुनिया हमारी हक़ीक़त समझे। मैं आप लोगों से गुज़ारिश करने आया हूँ कि आप अपने देशों में, अपनी भाषा में, तुर्क की हक़ीक़त को सामने लाएं।' इसके उपरांत वह मुझसे कहने लगा कि हमने सुना है कि भारत में छात्र नक्सलवाद का सहारा ले रहे हैं। मैंने उसे बताया कि भारत में अधिकतर छात्रों और बुद्धिजीवियों की मानसिकता साम्यवाद से प्रेरित है और वे हर गलत चीज़ का पुरज़ोर विरोध करते हैं, लेकिन नक्सलवाद अलग मुद्दा है।

मुझे संदेह हुआ कि तुर्क की युवा शक्ति को ज़्यादा दबाया जाये, तो वह कुछ ऐसा कदम भी उठा सकती है, जो तुर्क की वर्तमान तस्वीर को बदल देगा। वैसे भी मैंने यह तो देखा था कि यहाँ के रईस लोग अपने बच्चों को पढ़ने के लिए अन्य यूरोपीय देशों में भेज रहे हैं।

'देखिए आप केवल संपन्न लोगों को देख रहे हैं, सुदूर गाँवों में स्थिति इतनी सरल नहीं है। वहाँ कट्टरता बढ़ती जा रही है। सरकार उनकी मदद भी कर रही है, छिपे तरीके से। धार्मिक मदरसे खोले जा रहे हैं और सरकारी कॉलेजों में शिक्षा महंगी होती जा रही है। अतौल जैसे कवि सरकार की नीतियों का विरोध कर रहे हैं। यही कारण है कि वे युवाओं में काफ़ी लोकप्रिय हैं।' - वह छात्र कुछ तल्ख़ हो उठा था।

'आप लोग देख रहे होंगे कि यूनिवर्सिटी में दो तरह की संस्कृतियाँ साफ़-साफ़ दिखाई दे रही हैं। बेहद मॉडर्न और थोड़ी परंपरावादी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे याद आया कि अतौल ने बताया था कि वे देश के प्रमुख पत्रों में लेख लिखते हैं, जिसमें सरकारी नीतियों की जमकर आलोचना होती है। मैं यह तो नहीं समझ पाई कि आलोचना का मुद्दा क्या होता है, लेकिन उनकी एक बात ने मुझे चकित ज़रूर किया कि उनके लेखों के कारण कई बार उनपर सरकारी मुक़दमा चलाया गया है। एक मज़ेदार बात यह थी कि उन्होंने अब लेख लिखने की बजाय कविता में सरकारी आलोचना करनी शुरू कर दी है। वे बता रहे थे कि उनके लेख के जवाब में कई सरकार प्रायोजित लेख आ जाते हैं, लेकिन अब जब वे अपनी बात कविता में कहेंगे, तो सरकार को जवाब देने में तकलीफ़ होगी और उनकी बात सरकार के पास आसानी से पहुँच जाएगी।

अतौल के कविता अस्त्र के बारे में जान कर मुझे बेहद अच्छा लगा, वे अच्छे कवि हैं, लेकिन अपने दायित्वों को बेहतर समझते हैं, कविता उनके लिए व्यक्तिगत शगल नहीं, बल्कि ज़िंदगी का शगल है।

मैं उन तुर्की छात्रों की आवाज़ अपने देश के बुद्धिजीवियों के सम्मुख लाना चाहती हूँ, मैं कविता की शक्ति से पहचान करवाना चाहती हूँ... संभवतया यही मंत्र था, जो मुझे तुर्क की यात्रा में मिला।

कविता साँझ

शाम को कविता पाठन था, जब मैं उतर कर नीचे हॉल में आई, तो मैंने देखा कि हॉल बेहद ख़ूबसूरत लग रहा है। कविता पाठ आरंभ होने में वक़्त था, इसलिए हमें टेबिल दे दी गई, जहाँ बैठ कर हमें लोगों की कविता पुस्तक में हस्ताक्षर करने थे। यह मेरे लिए बेहद नया अनुभव तो नहीं था, क्योंकि स्त्रुगा, मेडेलिन आदि सभी जगह यह प्रथा है। हम लोगों ने कृत्या में यह प्रथा आरंभ नहीं की, लेकिन अब लगता है कि ऐसा होना चाहिए। यूरोपीय देशों में कविता को संगत के साथ जोड़ने की प्रथा आज तक जारी है। दो कवियों की कविता के उपरांत एक गीत की प्रस्तुति होती थी, जो ख़ास कलाकार द्वारा कविताओं का गीतात्मक रूपांतर था। कविता पाठ के वक़्त शीर होटल का सभागार ठसाठस भर गया था। यह पहला कवितोत्सव था, इसलिए आयोजकों ने इतनी मात्रा में दर्शकों की आशा नहीं की थी। लोग खड़े भी थे। इसके उपरांत भोज था, जिसमें श्रोतागण पैसा देकर भोजन का लुत्फ़ उठा रहे थे। यहाँ भी संख्या अच्छी ख़ासी संख्या थी। नाचना-गाना तब तक चलता रहा, जब तक कि हम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोगों की आँखें ही नहीं मुंदने लगीं।

खंडहरों की संस्कृति

दूसरे दिन हमारी यात्रा कुछ जल्दी शुरू होनी वाली थी, क्योंकि हमें बुल्दान, पम्मुक्कले के दर्शनीय स्थान और प्राचीन नगरी हैरापोलिस की यात्रा करनी थी। सबसे पहले हमारा पड़ाव उमट थरमल होटल, क्लिनिक एंड स्पा नामक जगह पर था, जहाँ हमें नाश्ता करना था। उमट होटल, स्पा और प्राकृतिक उपचार के क्षेत्र में बड़ा नाम है। यहाँ इलाज करने के लिए पर्यटकों की संख्या हमेशा काफ़ी लम्बी रहती है।

हमें सीधे भोजन कक्ष में ले जाया गया, जहाँ एक बहुत लंबी मेज़ पर तरह-तरह के व्यंजन परोसे गए थे। कहा गया कि यह असल तुर्क भोजन है। बड़ी-बड़ी रोटियाँ, मधुमक्खी के छत्तों के शहद भरे टुकड़े, मक्खन और शहद के साथ ना जाने कितनी चीज़ें। यहाँ के मालिक, जिनका नाम मुझे आज याद नहीं है, बेहद हँसमुख कद्दावर तुर्क थे। वे बता रहे थे कि यह स्थान उन्हें पत्नी के हिस्से के रूप में मिला है। उन्होंने बड़ा मज़ेदार किस्सा बयान किया कि तुर्क में भी लड़के और लड़कियों में भेदभाव था, लेकिन शरीयत के अनुसार जायदाद का बँटवारा लड़के और लड़की में बराबर होना चाहिए। लोगों का मन लड़कों प्रति ज़्यादा होता है, इसलिए उन्होंने खेत बेटों को दे दिए, लेकिन समंदरी और पहाड़ी इलाका बेटियों को। जब तुर्क में पर्यटन बढ़ा, तो समंदर और पहाड़ सैलानियों के लिए जन्नत बन गया और बेटियों की जायदाद सोना उगलने लगी।

नाश्ता करते वक़्त वे बताने लगे कि पिछले जमाने में जब मर्द खेती करके घर लौटता, तो बीवी मक्खन, रोटी और छत्ते भरा शहद पेश करती। शहद की ताकत तो मर्द दूसरे दिन ही जान पाता...। खाने की मेज़ पर ठहाके लगते जा रहे थे और खाना होता जा रहा था।

हम लोग स्पा देखने के लिए बाहर आए तो कुछ स्त्रियाँ, जो स्पा करवाने आई थीं, अतौल को पहचान गईं, फिर तो अतौल के साथ फोटो सेशन शुरू हो गया। यहाँ हमें उपहार में शहद के छत्ते और स्पा की मिट्टी मिली।

इसके बाद हम बुल्दान के पुराने नगर गए, जहाँ कपास से धागे बनाने, धागों से कपड़ा बनाने के हथकरघे और कारखाने थे। हमें बताया गया कि प्राचीन काल में यहाँ के मेयर ने जेल को हथकरघा घर में परिवर्तित कर दिया, जिससे ना केवल कैदियों का जीवन सुधरा, बल्कि उनके बुल्दान को सूती कपड़ों का बाज़ार मिला। पुराने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बुल्दान के मकान क़रीब सौ साल पुराने हैं और यहाँ के इन मकानों को इसी रूप में रखने के लिए यूनेस्को से मदद ली जा रही है। एक जमाने में यह आबाद नगरी डाकुओं और लुटेरों से आक्रांत होकर सूनी हो गई थी, लोग घर छोड़-छोड़कर भाग गए थे। मुझे यह नगरी अपने देश की किसी भी पुरानी नगरी की तरह लगी। संकरी गलियाँ और सिर से सिर भिड़ाये मकान। मैं जब द्वारिका गई थी, तो वहाँ पुरानी इमारतों को तोड़कर नई इमारतें बनाई जा रही थीं। केरल की प्राचीन कला के नमूने नालकेट्ट, एट्टकेट्ट घर अब खत्म होते जा रहे हैं, गगनचुंबी इमारतें एक अजीब फ्लैट संस्कृति को बढ़ावा दे रही हैं।

इसके उपरांत हम बाज़ार गए, कुछ ख़रीदारी करने के लिए... निसंदेह यह पसंदीदा काम है, मैं पैसा देकर ख़रीदारी तो बहुत कम करती हूँ, क्योंकि इतना पैसा होता ही नहीं, लेकिन कैमरे से काफ़ी कुछ कैद कर लेती हूँ। दोपहर का खाना होटल में पित्ज़ा था, निसंदेह हमारे पित्ज़ा से भिन्न, लेकिन कुछ ख़ास भाया नहीं, संभवतया मेरा पेट ही गड़बड़ा गया।

अब हम ही हैरापोलिस (Hierapolis) की ओर चल पड़े थे। मेरे साथ सबसे बड़ी समस्या यह थी कि भाषा के कारण मुझे कुछ ज़्यादा समझ ही नहीं आ रहा था कि हमारा अगला पड़ाव क्या है? मैंने इतिहास तो पढ़ा, पर मात्र अपने देश का, इसलिए ये बातें दिमाग में दर्ज होने में वक़्त लग रहा था। अब मुझे समझ में आया कि क्यों विदेशी पर्यटक भारत में भ्रमण करते हुए भारत के बारे में मोटी-सी किताब साथ रखते हैं।

हैरोपोलिस का निर्मण ईसा से लगभग दो शताब्दी पूर्व हो गया था। कहा जाता है कि इस नगर का नाम टेलेफस (Telephus) की पत्नी हैरा (Hiera) के सम्मान में हैरोपोलिस पड़ा था। यह एक पवित्र नगरी मानी जाती है, क्योंकि यहाँ अनेक मन्दिर हैं। नगर का नक्शा बेहद सूझबूझ के साथ तैयार किया गया लगता है। विशाल मुख्यद्वार आज भी इतिहास की गाथा कहते हैं। भग्नावेशों में ग्रीक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ दिखाई पड़ती हैं। यहाँ का अपोलन (Appollon) नामक मंदिर प्राचीनतम मंदिरों में से एक माना जाता है। सबसे बड़ा आकर्षण है यहाँ का ग्रीक शैली का थियेटर। यह क़रीब 300 फीट गहरा है और बैठने की क़रीब पचास पंक्तियाँ है। नाट्य मंच, और पार्श्व गृह, सब कुछ बेहद कायदे से बनाया गगया। हम सब यहाँ पर काफ़ी वक़्त बैठते हैं, अतौल हमें कविता सुनाते हैं। साँझ के झुरमुटे में अतीत से कलाकार निकल मानो नाट्य शुरू कर देते हैं। इसके उपरांत हम विशाल हमाम के भग्नावेश देखते हैं, कहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाता है कि ये एक वक़्त सबसे ख़ूबसूरत हमाम रहा होगा। एक मान्यता यह भी है कि यहाँ पर स्थित प्राकृतिक जल प्रवाह के कारण इस नगरी का निर्माण हुआ होगा, जहाँ राज्यशाही लोग स्वास्थ्य लाभ के लिए जाया करते होंगे। विशाल नाट्यगृह का उद्देश्य भी यही रहा होगा।

जगह-जगह पर खड़े खंबे, भग्न इमारतें कुछ ना कुछ इतिहास अपने सीने में समेटे हैं। हम लगातार चल रहे हैं, इस नगरी के भीतर गाड़ी मना है, मेरी चलने की आदत ना के बराबर है। ऊपर से मेरे वेरिकोस वाले पैर कदमों को इतना भारी बना देते हैं कि मैं बार-बार पिछड़ जाती हूँ, लेकिन कोई ना कोई मुझे सहारा देने आ ही पहुँचता है।

अब हम पम्मुक्कले थरमल ट्रेवरटिन्स (Pamukkale Travertines) के पास आते हैं। मैं अपनी क्षमता जानती हूँ, इसलिए भीतर चट्टान तक ना जाकर एक सोते के क़रीब चुचाप बैठ जाती हूँ, सारी जगह फिसलन से भरी है, लेकिन हमारे साथ के सब लोग भीतरी सोते तक जाते हैं...।

जल के केल्शियम ने जल प्रवास सम आकृतियाँ बना दी हैं, जो अपने आप में बेहद ख़ूबसूरत हैं। इस केल्शियम के झरने वाली पहाड़ी से सूर्यास्त देखना अपने में ख़ूबसूरत एहसास है....

हम चुपचाप लौटने लगते हैं, सब लोग आगे बढ़ गए हैं, मैं पिछड़ती जा रही हूँ... रास्ते में कब्रगाह पड़ता है, साथी बताते हैं कि यहाँ कब्रें भी कई तरह की हैं। सामान्य आदमी यानी सैनिक की साधारण कब्रें और नायकों के लिए कमरेनुमा बंद कब्रें। रकेल एक कब्र कोठरी में बैठ कर मापती है और कहती है कि उस वक़्त आदमी की ऊँचाई कम रही होगी...।

रात का भोज एक बेहद ख़ूबसूरत होटल में तय किया गया है। काफ़ी लोग इकट्ठे हो जाते हैं। मेरे पेट ने अपना दरवाज़ा बंद कर दिया है, मैं चुपचाप बैठी सबको खाते देख रही हूँ, तभी ज्ञात होता है कि मेज़बान ने तीसरे दिन के भ्रमण का कार्यक्रम रद्द कर दिया है। अतौल इससे बेहद नाराज़ हो गए, यदि तुर्क कि तरह शुरू करो, तो तुर्क की तरह अंत करना चाहिए...। अतौल को बहुत जल्द ही गुस्सा आ जाता है। इसात मुस्कुराते हुए अतौल को समझाने की कोशिश करते हैं। दरअसल इसात का बड़ा बेटा, जो छुट्टियों में स्विटज़रलैंड से आया है, दूसरे दिन वापिस लौटने वाला है। पूरा परिवार उसे विदा करने जाना चाहता था। हम लोगों ने अतौल को समझाया कि अच्छा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ही है, हम लोग थोड़ा आराम कर लेंगे और डेंजिली सिटी देख लेंगे।

जब अर्तेमिस के सीने से टपका तो
एक अँगूर ने छत को चूमा
एफसेस की शराब को छूते हुए
- फरहाद गुलशन

अगले दिन हमारी यात्रा देर से आरंभ हुई, क्योंकि मेरी तबियत रात को काफ़ी बिगड़ गई थी। रात को उल्टियाँ शुरू हो गई थीं, शायद इतना गरिष्ठ भोजन पच नहीं पा रहा था, लेकिन दोपहर के उपरांत हम सब Ephesus की वाइनरी गए, यह जगह हमारे स्थान से काफ़ी दूर थी, लंबी बस यात्रा से मन खुश हो गया। इससे पहले में स्त्रुगा और गेलगेलिया में वाइनरी देख चुकी थीं, इसलिए कुछ विशेष उत्साह नहीं था, लेकिन यहाँ पर वाइन का इतिहास ही सामने आ गया। Ephesus का इतिहास ईसा से 2000 वर्ष पहले का माना जाता है। Ephesus नाम का संबंध देवी Kyble से माना जाता है। Ephesus में शराब के कला पक्ष के विकास में वाइन को चखने की कला से लेकर वाइन रखने की बोतलें तक आती हैं। मैनेजर हमें वाइन चखने का तरीका बयान कर रहे थे, कि किस तरह वाइन होंठों पर टिका कर हौले साँस खींच वाइन के बुलबुलों को ऑक्सीजन मिलने देना चाहिए, तभी वाइन का असली स्वाद मालूम पड़ता है। उनके यहाँ ना जाने कितने साल पुरानी वाइन सुरक्षित रखी थी। तुर्कियों के हाथ में वाइन का गिलास हो और सामने कबाब, तो बस वे शायरी को छोड़ नहीं पाते। अतौल और अहमत तैलि, दोनों को ना जाने कितने नग़मे मुँह ज़बानी याद थे। बस समां जम गया... ठंड की खुनक बढ़ती जा रही थी, मैं तबियत के रहते कुछ खा पी नहीं पाई थी, इसलिए शरीर कमज़ोर हो गया होगा... ठंड कुछ ज़्यादा ही लग रही थी। चलते वक़्त हमें वाइन की बोतलें भेंट में मिलीं, जिन पर हम कवियों की तस्वीर और कविता लगी थी।

वापसी की यात्रा ख़ूबसूरत नहीं होती है, कल हम में से कुछ लोग चले जाएँगे, मैं और नील रहेंगे, जो सिटी की यात्रा के लिए निकलेंगे। मैं अपने कमरे में ही इंतज़ार करती हुई चित्रों को फ़ेसबुक में संजोती रही, दोपहर को मुझे पता चला कि घूमने की लिस्ट में बस में ही बची हूँ। मैं आराम से बाहर निकल कर चित्र लेने लगी। क़रीब एक बजे हमें इसाक के मित्र परिवार के पास ले जाया गया। ये दोनों पति-पत्नी केवल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुर्की भाषा ही बोलते थे, लेकिन उन्होंने अपने यहाँ अंग्रेज़ी की एक अध्यापिका को दुभाषिया के रूप में बुला रख था। हम लोग पैदल ही बाज़ार की ओर चलने लगे। तुर्क के बाज़ार पुरानी दिल्ली की गलियों की याद दिलाते हैं, संकरी गलियाँ, जिनमें कार निकलने की कोई गुंजाइश नहीं। मैं दूकानों में रखे सामान को देख रही थी, कई पंसारियों की दूकानों में मुझे हिंदुस्तानी मेहंदी देखने को मिली। पीतल के बर्तन तो बेहद ख़ूबसूरत होते हैं, ख़ासतौर से कॉफी बनाने का गिलास जैसा बर्तन, जिसमें केवल एक कप चाय बन सकती थी।

रास्ते में शादी की पौशाक और जेवरात की दूकानें भी खूब दिखाई दीं। तुर्की महिलाएँ बेहद ख़ूबसूरत होती हैं और अपने को खूब सजा कर रखती हैं। मुझे यहाँ शादी की दो तरह की पौशाकें दिखाई दे रही थीं, एक तो ईसाई विवाहों में पहनने वाले सफेद गाउन, सफेद लेसदार पर्दे के साथ दूसरे लाल रंग की ड्रेस, जो सिर पर टोपी और नकाब के साथ शोकेस में सजी थी। मेरी अनुवादिका ने बताया कि शहरी महिलाएँ सफ़ेद गाउन का प्रयोग करती हैं, लेकिन गाँव की महिलाएँ पुरानी अरबी पौशाकों की ओर झुक रही हैं। विकसित तुर्क धीमे-धीमे परंपरा के नाम पर कट्टरता की ओर बढ़ रहा है।

रास्ते में कई मस्जिदें दिखाई दीं, जो गहरे नीले रंग की मीनारों से सजी हुई थीं। हमारा गंतव्य डेंजिली की कबाब वाली दूकान था, जहाँ पारंपरिक कबाब मिलते हैं।

कबाब की छोटी-सी दूकान थी। जब कबाब आए, तो मैं चकित रह गई, क्योंकि एक बड़ी-सी लंबी ट्रे जैसे बर्तन में माँस के छिले से टुकड़े प्याज और हरी मिर्चियों से सजे हुए रखे थे। यानी कबाब माँस की टिक्की नहीं, बल्कि नफ़ासत से पकाई माँस की छीलन-सी है, जो मुँह में रखते ही घुल जाती है।

मज़े की बात यह है कि ये बिना नमक के पकाये जाते हैं और खाने वाला अपनी रुचि के अनुसार नमक छिड़क लेता है। यहाँ अरबी संस्कृति के अनुरूप एक ही बर्तन में खाना परोसा गया था। खाते वक़्त एक तुर्की कहावत सुनी, जिसका अर्थ था कि कबाब- हौले छुओ, हौले से छुओ, हौले से छुओ औरत और कबाब को...

तुर्कियों में अरबियों के समान ही मज़ाक करने का अच्छा माद्दा होता है। इसके बाद हम आर्ट गैलरी गए, जहाँ Celal Gunaydin नामक कलाकार के शिष्य की कलाकृतियों का प्रदर्शन था। मैंने देखा की तुर्की कला मॉडर्न आर्ट से ज़्यादा प्रभावित नहीं, अधिकतर कलाकृतियाँ वाटर पेंट से बनाई गईं फूलों और स्त्रियों के चित्र थे। Celal Gunaydin ने हमें अपने स्टूडियो में आमंत्रित किया। उनके स्टूडियो में नग्न

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्त्रियों के चित्र बहुतायत से थे, लेकिन मैंने उनकी कलाकार पत्नी को देखा, वे सिर पर पर्दा लिए हुई थीं। एक कलाकार अपनी पत्नी से पर्दा क्यों करवाता है? मुझे कुछ समझ नहीं आया। मैंने पूछा कि तुर्क में कला की स्थिति क्या है? अभी भारत में मॉडर्न आर्ट के नाम पर कूड़ा-कचरा बिकते हुए मैंने देखा था। वे कहने लगे कि तुर्क में पेंटिंग के क्षेत्र ज़्यादा मॉडर्न नहीं हो पाया है, इसलिए यहाँ इस क्षेत्र में अन्य देशों के समान धन नहीं है।

मैं वहाँ से बाहर निकली थी कि मेरा पैर फुटपाथ से सरक गया और मैं दाहिनी कनपटी के बल धड़ाम से गिर पड़ी, तुरंत दूकानों से लोग निकल आये, मेरे लिए कुर्सी और बर्फ आया, पानी पिलाया गया। मैं उन्हें ठीक से शुक्रिया भी नहीं कह पाई... चोट को सहलाती अपने मेज़बान के साथ बाहर निकल पड़ी।

अब मेरी घूमने की हिम्मत पस्त हो गई थी, मैं होटल में आकर सो गई, दूसरे दिन सुबह छह बजे हमें निकलना जो था।

लौटने की यात्रा अवसाद भर ही देती है... कुछ छूटता जाता है, कुछ साथ चला आता है।

फिर फिर तुर्क

मेरा दूसरी बार तुर्क जाना 2015 में हुआ, वह भी एस्किशेर नामक ख़ूबसूरत से शहर में। यूरोपीय देशों में इस तरह के आयोजनों में म्यूनिसपलिटी की अहम भूमिका होती है। एस्किशेर के मेयर बहुत बड़े कल्पनाशील हैं, इसलिए वे तीन तरह का फ़ेस्टिवल करवाते हैं, एक विज्ञान का, दूसरा कलाकृति का और तीसरा कविता का। इंतज़ाम जरूर म्यूनिसपलिटी का होता था, लेकिन कवियों का चुनाव और कार्यक्रम की रूपरेखा कवियों द्वारा बनाई जाती थी। मुझे इस कार्यक्रम का आमंत्रण तब मिला, जब मैं अपनी टूटी कलाई के दर्द से जूझ रही थी, लेकिन तुर्क के इस नये रूप को देखने की इच्छा हुई, क्योंकि अंगोला तुर्की का बड़ा ख़ूबसूरत भूभाग है। और एस्किशेर तो युवाओं का मनभावन स्थल है। वैसे भी यहाँ पर अनेक विश्वविद्यालय हैं।

इस बार जब मैं जब इस्तांबुल पहुँची, तो कुछ बदला-बदला सा लगा। दरअसल इस बार आधा एयरोड्रम पर्दानशीं महिलाओं से भरा था। समझ में आ गया कि कट्टरता जड़ें जमाती जा रही हैं। पिछली यात्रा के छात्रों की बातें याद आने लगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाहर निकलने पर मेरे नाम की पट्टी लिए गाड़ी के ड्राइवर खड़े थे, जो दो-चार शब्द अंग्रेज़ी मुश्किल से बोल पाते थे। वे मुझे एक जगह बैठा कर चले गए, मालूम चला कि वे फिलिस्तानी कवि का इंतज़ार कर रहे थे। क़रीब आधे घंटे बाद वे एक और सज्जन के साथ आ गया, जिनका परिचय दिया गया कि वे तुर्की कवि हैं, लेकिन ये सज्जन भी अंग्रेज़ी नहीं जानते थे।

फिर ड्राइवर ने अटकते हुए बताया कि फिलिस्तानी कवि नहीं आयेंगे, क्योंकि उन्हें हवाईअड्डे से वापिस भेज दिया गया। इस्राइल का दबाव कवि कलाकारों पर ज़्यादा है। दुख हुआ, अब हम एस्किशेर की ओर जा रहे थे। लेकिन मज़े की बात की क़रीब तीन घंटे का रास्ता हमने एक शब्द भी बोले बिना बिता दिया। एक जगह जरूर रुके तुर्की चाय पीने, अन्यथा हम चलते ही रहे। मैंने सोचा कि होटल में सब ठीक होगा, लेकिन वहाँ पता चला कि उन लोगों को भी अंग्रेज़ी नहीं आती। ख़ैर कमरा बहुत आरामदायक था। मेरे लिए नहाकर सोना ही बड़ा काम था। बाथरूम में सब कुछ था, लेकिन ब्रश नहीं, मुझे कुछ अजीब-सा लगा, क्योंकि होटल बहुत अच्छा था और इस तरह के होटलों में सब कुछ होता है। मैंने नीचे जाकर काउंटर पर अपनी समस्या बताई, तो काफ़ी वक़्त तो उन्हें समझ नहीं आया कि मैं क्या बोल रही हूँ। अन्त में उन्होंने कहा कि हम ब्रश नहीं रखते हैं, आप ख़रीद सकती हैं। मुझे गुस्सा तो आया, लेकिन मैंने कहा कि आप कृपया ब्रश-टूथपेस्ट मेरे कमरे में भेज दें।

थोड़ा आराम करके जब मैं शाम को नीचे उतरी यह देखने के लिए कि रात के खाने की व्यवस्था क्या होगी, तो पता चला कि होटल से थोड़ी दूरी पर कल्चर सेंटर है, वहीं खाने की व्यवस्था है। बाहरी कवि अभी तक पहुँचे नहीं थे और तुर्की कवि भाषा से जूझ रहे थे। तभी एक थोड़ा नाटा, लेकिन शक्ल से मसखरा-सा लगने वाले एक व्यक्ति ने मुझे समझाया कि थोड़ी दूर पर ही खाने का इंतज़ाम है। ये सज्जन टूटी-फूटी अंग्रेज़ी बोल सकते थे। बाकी कवि भी खाने के लिए तैयार थे, मैं बाहर जाने के लिए तैयार होकर तो आई नहीं थी, लेकिन सोचा कि पास में ही खाना होगा, बिना स्वेटर के चल दी। लेकन बाहर बहुत सर्दी थी, बिलकुल यूरोपीय मौसम, रात को काफ़ी सर्द। ख़ैर, जब खाने की जगह पहुँची, तो पता चला कि यह कल्चर सेंटर है, जिसकी कैंटीन में हमारे खाने का आयोजन है। बड़ा आश्वासन यह था कि मैनेजर अंग्रेज़ी जानते थे और भारत आ चुके थे, इसलिए वे मेरे पास आकर पूछने लगे कि मैं शाकाहारी हूँ क्या? मैंने कहा कि मैं मछली और अंडे खा सकती हूँ। मैंने देखा कि यहाँ पर खाना काफ़ी कुछ यूरोपीय तरीके का था यानी कि सलाद और मांस की प्लेट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
और चाहने पर ब्रेड।

मैनेजर मुझसे भारत और उसकी स्प्रिचुएलिटी के बारे में बात करने लगे, मैंने उन्हें बस सुनना ही ठीक समझा। जो सज्जन थोड़ी अंग्रेज़ी बोल लेते थे, उन्होंने मुझे बताया कि उनका नाम Erol Büyükmeriç है और वे बाल साहित्य के मशहूर लेखक हैं। बच्चों के बारे में लिखते-लिखते शायद उनका व्यक्तित्व भी बच्चों-सा हो निर्मल हो गया था। इस उम्र में भी तेज़ी से चल रहे थे और सबसे मिल रहे थे। लौटते वक़्त उन्होंने अपना घर बताया, जो रास्ते में पड़ता था, वे बेटी के साथ रह रहे थे। बेटी का घर छोटा-सा था, तो उन्होंने उसके बगीचे में एक झोपड़ी खड़ी कर ली थी, जो बहुत सुंदर और किताबों से भरपूर थी। पता चला कि वे तलाकशुदा हैं और पत्नी का घर बेटी के घर के सामने ही है। उन्होंने बताया कि उनकी बेटी ने स्पष्ट कर दिया है कि उसे माँ और बाबा दोनों चाहिए, तो वे अपना घर पत्नी को देकर बेटी के साथ रहने को आ गए।

मुझे ठंड लग रही थी, तो मैंने एरोल से कहा कि मैं उनके घर अगले दिन आऊंगी। आज होटल लौटना चाहती हूँ।

दूसरे दिन मैं तैयार होकर नीचे पहुँची, तो पता चला कि बहुत से लोग आ गए हैं, कई परिचित चेहरे थे, जैसे अतौल, जिंगोनिया, फ्रांसिसो आदि। अब मुझे कुछ सुविधा हुई। मैं किसी से बात कर सकती थी। नाश्ते के बाद एरोल ने बताया कि कार्यक्रम लंच के बाद शुरू होगा, लंच कैंटीन में ही है, तो मैं चाहूं तो वे आस-पास की जगह दिखा सकते हैं। मैं तैयार तो थी, एरोल के साथ चल दी, जिस इलाके में हम रह रहे थे, शायद शहर का दिल था। पास में एक नहर-सी बहती थी, ऐसी नहरें और उन पर बने पुल यूरोपीय शहरों की शान होते हैं। नहर के पुल पर से पानी को दोपहर के बाद निहारना दुनिया का सबसे आनंददायक काम है। एरोल बता रहे थे कि यह शहर युवाओं को बहुत माफिक आता है, क्योंकि यहाँ उनके लिए बंधन कम है, हालाँकि पिछली गली में रातें गुलज़ार रहती हैं और सादी ड्रेस में पुलिस भी घूमती है कि युवा लोग ग़लत फ़ायदा तो नहीं उठा रहे हैं।

दोपहर हो गई तो हम कल्चर सेंटर लौट गए। सबके साथ खाना खाया। दोपहर के बाद कार्यक्रम का आरंभ हुआ। मेयर Yilmaz Büyükersen भी उपस्थित थे, लेकिन ना उन्होंने भाषण दिया, ना ही हस्तक्षेप किया, बल्कि अतिथियों के लिए जगह बनाने के लिए वे पीछे की सीट पर जाकर बैठ गए। वे एक कलाकार भी हैं, उन्होंने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने शहर को कलाकृति की तरह सजाया है।

पहला कविता पाठ शुरू हुआ, कविताओं का अनुवाद तुर्की में था, कवि अपनी मातृभाषा में पढ़ रहे थे, इसलिए समझ तो कोई भी कविता नहीं आई, हाँ संगति का आनंद था।

बाद में अतौल को पुस्तकें साइन करनी थीं और मैंने देखा कि उनके सामने अजगर-सी लाइन लगी थी, अनेक पाठकों ने किताबें ख़रीदीं, अतौल साइन करके देते गए।

दोपहर के खाने के वक़्त मैंने देखा था कि कुछ युवा बैरे थे, जो लोगों से ऑर्डर लेते, फिर एक-एक कर के प्लेट लेकर आते। उनके चेहरे इतने स्वाभाविक नहीं लग रहे थे। शाम को वे लोग नहीं थे, तभी किसी की बातचीत से पता चला कि यहाँ पर मेयर ने सभी कैंटीनों के लिए यह नियम बनाया है कि दिव्यांग युवाओं को रोजगार दिया जाना चाहिए, लेकिन बहुत ही सतर्कता के साथ। यानी कि उन पर ज़्यादा दवाब ना पड़े, इसलिए एक दिव्यांग युवा आधे घंटे के बाद कम से कम 15 मिनट विश्राम करता, उनके विश्राम के लिए अलग कुर्सियाँ थीं। ये बच्चे क़रीब चार घंटे काम कर लेते और इस तरह उनको स्वावलंबन का सुख मिल जाता। उन युवाओं को छोड़ने और लेने उनके अभिभावक आते थे। शाम को उनकी शिफ़्ट नहीं होती थी।

मैं मेयर की वैचारिकता से प्रभावित थी। दूसरे दिन कार्यक्रम बाहर था, इस बार म्यूज़िशियन भी थे, यूरोपीय देशों में कविता और संगीत को अलग नहीं किया जाता। यहाँ जो संगीत था, वह तुर्की भाषा में होते हुए भी पॉपुलर म्यूज़िक था। बाहर ठंडक भी ज़्यादा थी, लेकिन आज लोग पॉपुलर संगीत ज़्यादा पसंद करते हैं। फिर दोपहर का खाना था। आज एक ख़ास बात हुई, मुझे पता था कि अगले दिन करवा चौथ है, मैं पूरे साल में एक यह व्रत रखती हूँ, इसलिए नहीं कि इससे मेरे पति की आयु का संबंध है, बल्कि इसलिए कि इससे उनकी भावनाएँ जुड़ी हैं, मेरी विचारधारा मेरी है, वह मेरे साथी पर भारी नहीं पड़नी चाहिए, इसलिए मैं व्रत कर लेती हूँ। इसी वज़ह से मैंने कल ही कैंटीन के मैनेजर से कहा कि कल मैं खाना नहीं खाऊँगी, तो उन्होंने झट से पूछा, क्या आपका व्रत है?

मैंने हंस कर कहा- हाँ कुछ ऐसा ही।

तो वे फिर पूछने लगे कि क्या आप एक बार भी खाना नहीं खायेंगी? मेरा जवाब था कि मैं रात को खा सकती हूँ, लेकिन मांस से परहेज करना होगा। मैनेजर ने तपाक से कहा- उसकी चिंता ना करें। आपका खाना अलग रसोई में बनेगा और पूरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शाकाहारी होगा।

निसंदेह अगले दिन खाने मैं बढ़िया बैंगन का भुर्ता और चावल के साथ सलाद था। मेरा खाना अलग बना।

अब हमें शहर घुमाने ले जाया गया, क्या ख़ूबसूरत शहर, म्यूनिसपिलिटि के भीतर ही कला संग्राहलय था। मैंने इतना ख़ूबसूरत म्यूनिसपिलिटी दफ़्तर अपनी ज़िंदगी में कभी नही देखा। हमने प्रसिद्ध म्यूज़ियम ऑफ वर्ल्ड म्यूजियम भी देखा और वह म्यूज़ियम भी जहाँ देश-विदेश की महान हस्तियों की मूर्तियाँ बनी थीं। महात्मा गांधी और इंदिरा गांधी की मूर्तियों को देखकर मन जुड़ गया।

एरोन हमें शॉपिंग करवाने भी ले गये, तो देखा कि वे पूरे शहर में लोकप्रिय हैं, हर जगह उनके मित्र निकल जाते हैं। एरोन की बेटी नौकरी करती है, बाबा बेटी का तालमेल देखते बनता है, ऐसा लगता है कि वे दोनों दोस्त हैं।

हम लोगों ने नहर पर नौका यात्रा भी की, एरोन ने हम सब को तोहफ़े भी ख़रीद कर दिए और मेवे-मिठाई भी दिये।

अब हमें एस्किशेर से विदा लेना था। मुझे एस्किशेर से इस्तांबुल जाना था, जहाँ एक फ़ेस्टिवल में दो दिन बिता कर वापिस लौटना था। फिर वही टैक्सी से लौटना। इस बार कुछ लोग साथ थे, इसलिए यात्रा सहज रही।

इस्तांबुल में हमें टीचर्स होटल में ठहरना था, जो शहर के बीचोबीच था। कार्यक्रम शाम को था, इसलिए मैंने शहर घूमने का मन बनाया। एस्किशेर से जो पुर्तगाली कवि साथ आये थे, वे अकेले निकल गए, तो मैंने टैक्सी लेकर शहर जाना मुनासिब समझा और इस यात्रा को मैंने कविता में जिया।

तुर्क डायरी (इस्तांबुल से होते हुए)

देश कोई अपनी बोली तो नहीं कि सोते में भी
समझ आ जायें
उनकी जीभ से निकलने वाली ध्वनियाँ तालू से टकराती हुई
होंठों के बीच से सीटी निकालती हुई
छोड़ देती हैं निपट अकेला,
और देखते ही देखते एक शहर जंगल बन जाता है
और लोग दरख़्तों से पत्तियाँ झाड़ने लगते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोली कोई दासी तो नहीं कि तुम्हारे कानों में
मछली सी तैरने लगे
इतिहास है सदियों का, जो सिलबट्टे पर घिसा गया
चटनी सा महीन, रोटी के साथ चटपटाते हुए
कई महिनों से मैं अपनी बोली के बिना भी
रहती हुई डरती हूँ कि मेरे शब्द कहीं
कफन ओढ़ कर सो जायें
मैं रह जाऊं एक अदद भाषा के बिना

(प्रातः 10 बजे, 14 अक्टूबर, 2014)

इस शहर के नाखून बेहद लंबे हैं
जो शायद ख़ुदा के दरवाज़े पर भी कील ठोंक देते हैं

मैं इसकी गलियों से डरती हुई
काँच के शीशे के पार मछली खाती हुई
सीने पर गड़े नाखूनों को देखती हूँ
मेरी तश्तरी पर रखी मछली
जिंदा होकर बगल की मेज़ पर बैठ
शोरबा पीने लगती है

मैं उस कुत्ते को खोजने के लिये
सड़क पर निकल पड़ती हूँ जो मुर्दों की
कहानियाँ सुनायेगा
ये शहर बड़ी आंत सा शहर कभी नीचे उतरता है
तो कभी ऊपर चढ़ता है
तो कभी सीधा आसमान में पटक देता है

इस शहर के दाँत भी कुछ कम नहीं
सब कुछ चबा कर उगल देते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी बंद खिड़की के पीछे
अनजान शहर खुल रहा है
(असंख्य मीनारों और मस्जिदों को देखते हुए)

दोपहर 12: 07, 14 अक्टूबर 2014

दुनिया के सबसे पुराने शहर में

इस्तांबुल दुनिया का सबसे पुराना शहर है, क़रीब तीन सौ एडी में बसा माना जाता है, रोमन से लेकर ओट्टमन साम्राज्य का आधिपत्य रहा, इसलिये अगल-बगल अनेक खंडहर, अनेक इमारतें हैं। आज इस्तांबुल पहुँचते ही यहां आने का कार्यक्रम बनाया। कभी-कभी तो लगता है कि इस शहर का कोई भी इंसान अंग्रेज़ी नहीं बोलता है। सारे रास्ते टैक्सी ड्राइवर ना जाने क्या बड़बड़ाता रहा, जब उस पुरातन प्रदेश में पहुँचे, तो म्यूज़ियम बंद हो चुका था, बस महल खुला था, महल का टिकिट लेकर अंदर पहुँची, तो पुराना खंडहर इलाका बंद था, बाकी कमरों में 17 वीं- 18वीं शताब्दी के राजाओं का सामान सजा रखा था, कहीं खाना पकाना तो, कहीं हीरे जवाहरात, तो कहीं तीर-तलवार, मैं यही सोच रही थी कि रोमन से पहले का इतिहास कहाँ गया? चलो, उस वक़्त का नहीं, तो इस्लाम से पहले और रोमन के बाद का?

संग्रहालयों में मेरा विश्वास नहीं है, ख़ासतौर से राजशाही से जुड़े, क्योंकि राजा की तलवार तो दिखाई देती है, उसमें लगा खून नहीं। तीर-भाले तो होते हैं, लेकिन उनको चलाने वालों के भूखे पेट नहीं। बस एक चक्कर लगा लो और बाहर निकल कर यूँ ही भटक लो तो बेहतर है।

क्या हुआ जो तुमने मेरी
आस्था की दीवार पर
अपनी दीवार चढ़ा ली,

क्या हुआ जो तुमने मेरी तस्वीर पर
अपनी लकीरें खींच दी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अच्छा ही हुआ कि
मेरे और तुम्हारे आका को
गुफ़्तगू करने का
बहाना ही मिलेगा

मिलेंगे दो आका तो
शहर का तनाव कुछ कम होगा

(Hagia Sophia म्यूज़ियम देखते हुए)

....

आख़िर में इस शहर के दाँत
मुझे छोड़ कर बढ़ गये आगे

अल्लाह, ये कोई शहर हुआ
गलियों से सूरज सफा हुआ
बुलंदियों को ढहा कर
जमाना जी भी लिया तो क्या
अपना सा कोई यहाँ हुआ ?
शहर तो बस इस्किशेर
जहाँ प्यार घुलता है हवा में
और चाँद टंगता है पुल के ऊपर

....

उन्होंने एक कील उगाई सिर पर
अपने को गुलाम मानते हुए

दूसरी कील उनके विश्वास को मज़बूत बनाती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चार कीलों से वे नगर सेठ
बन गये
गाढ़ी छ्ह कीले तो बैठ ये ख़ुदा के क़रीब

क्या खूब, अल्लाह, तेरी नीली छतरी
इनके सिरों पर तनी हुई
....

इस शहर की आँतों में
काफ़ी कुछ अब भी बाकी है
पचने पचाने को
अजगर की तरह लीलता रहे जो
आदमीयत और आदम को

इन्होंने उनकी इमारत की खोह पर
बीज बो दिया, उगा दरख़्त
तो अपना कह दिया

ये तेरा और उसका साझा
आसमान जो ठहरा
....

एक शहर छोड़ने के साथ
कुछ खोने का एहसास ज़रूरी है
और मैं खो बैठी हूँ काग़ज़ी लकीरें
तुम्हारे कैनवास की
अब मैं तुम्हें याद करूँगी
कुछ खोने के एहसास के साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तुर्क की अब तक दो और यात्राएँ हो चुकी हैं, लेकिन उनके बारे में फिर कभी...।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अस्मिता की लड़ाई और भाषाई भूमिका, वैल्श से ज़्यादा कौन सिखा सकता है

12 मार्च 2013, मैं लंदन होते हुए कार्डिफ आ पहुँची हूँ, कार्डिफ जो कि वैल्श की राजधानी है और वैल्श वह एक मात्र राज्य, जो आज के युग में भी अंग्रेज़ी के एकदम क़रीब होते हुए भी अपनी भाषा को दृढ़ता से संभाले हुए है। यह यात्रा कुछ पारिवारिक और कुछ अकेले भ्रमण करने की ख़्वाहिश से बनी थी। छोटी बेटी वैल्श में थी और नन्ही नातिन का पहला जन्मदिन था।

यूरोपीय प्रांत वैसे भी ख़ूबसूरत होते हैं, लेकिन मुझ भीड़-भड़क्के के आदी को सोये-सोये लगते हैं। लेकिन यूरोप की बस और रेल सर्विस बेहतरीन है, इसलिए हवाईअड्डे से निकल कर कार्डिफ की बस ली गई। बेटी मुझे लेने आ गई थी।

कार्डिफ कुछ अलग-सा लगता है, यहाँ लोगों के चेहरों पर मुस्कान दिखाई देती है। हवाईअड्डे से बस की यात्रा बेहद आरामदायक रही। बस बेहद आरामदायक है और हवाई यात्रा की तरह सुरक्षा आदि के प्रति सजग है। बिना बेल्ट लगाये बस में बैठना मना है। बस के भीतर ही हवाईजहाज की तर्ज पर शौचालय भी है।

हम कार्डिफ शहर में रात के वक़्त प्रवेश करते हैं, यह यूरोप है अमेरिका नहीं। दूकानें छह बजे ही बंद हो जाती हैं। शाम का वक़्त मात्र उनका होता है, जो पबों में जाकर आनंद उठाना चाहते हों।

इस वर्ष पिछले 78 वर्षों का रिकॉर्ड टूट गया है सर्दी में। बस के भीतर या घर के भीतर सब ठीक है, लेकिन बाहर निकलते ही सर्द हवाएँ बर्छी-सी चुभती हैं। मैंने सालों से सर्दी का मज़ा ही नहीं लिया और अब सर्दी से वास्ता पड़ा तो इतना जबरदस्त। बेटी के घर आई हूँ, फिर भी मैं अकेले ही घर से बाहर निकलना चाहती हूँ और क़रीब से पहाड़ों को देखना चाहती हूँ। बेटी मेरा स्वभाव जानती है, इसलिए मेरी हर यात्रा से पहले नोट पकड़ा देती है कि कहाँ बस पकड़नी है, कहाँ बदलनी है, आदि आदि...।

मैं सबसे पहले पब्लिक लाइब्रेरी जाती हूँ, क्योंकि यही निकट है। मुझे पता नहीं कि कितने देशों में पब्लिक लाइब्रेरी लोगों के लिये मुफ़्त में किताबें देती हैं, मैंने पढ़ाई के दिनों में यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी में भी किताबों के बीच से पन्ने गायब देखे हैं, लेकिन यहाँ पब्लिक लाइब्रेरी है, बेहद साफ़ सुथरी और सुंदर, जिसमें बच्चों के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अलग विभाग है। मैं लाइब्रेरी में घूम घूम कर किताबें देखती हूँ। अधिकतर कहानी और उपन्यास हैं, लेकिन वैल्श के इतिहास और नगरों के इतिहास और संस्कृति की जानकारी वाली किताबों की भी कमी नहीं। पुस्तकालय का इंतज़ाम सरकार की जिम्मेदारी होती है और उसके नियमों का पालन जनता की। यह काम कार्डिफ में दिखाई दे रहा है। काश हमारे देश के सार्वजनिक पुस्तकालय भी इसी तरह देखे रखे जाते।

क़रीब ही जिम है, यह भी सरकारी है। बेहद मामूली-सी फ़ीस देकर इसका लाभ उठाया जा सकता है। मैं जिम के भीतर देखती हूँ, हमारे देश के पाँच सितारा जिम की तरह बेहद साफ सुथरी और सुंदर जिम है, जिसमें हर आयु वर्ग लोग व्यायाम कर रहे हैं। सेहत लोगों का ही नहीं, देश का भी धन है और इसके प्रति इतनी जागरूकता समझी जा सकती है। एक बात खलती है कि यहाँ भी अमेरिकन फूड एजेंसियों ने पाँव जमा लिये हैं, मैक्डोनल , सब वे, कोस्टा आदि पाँव जमाये बैठे हैं। हालाँकि वैल्श खाना कभी का खत्म हो गया है, फिर भी लोगों में अपने पारंपरिक भोजन को फिर से लोकप्रिय बनाने की कोशिश दिखाई दी।

मैं ठंडी हवाओं की चुभन बर्दाश्त नहीं कर पा रही हूँ। देश से लाये दो स्वेटर और और एक चेस्टर हवा को रोक नहीं पा रहे हैं, उंगलियाँ सुन्न हो रही हैं। मैं क़रीब के मॉल में घुसकर कुछ गरम कपड़े तलाशती हूँ, लेकिन वाह भाई वाह!! दूकानदारी के नियम के अनुसार बसंत आ गया गया है, तो सारे कपड़े बसंतकालीन हैं। ऐसे में बस एक ही तरीका है... बस का इंतज़ार कर सीधे घर जाऊँ...।

यूरोपीय बसें गर्म और आरामदायक हैं, छात्रों और वृद्धों के अलावा मैंने बस में किसी को देखा नहीं, बस में घुसते ही ड्राइवर हय्या यानी कि हैलो कहता है, कंडक्टर की ज़रूरत नहीं, घुसते ही पैसा दीजिये, टिकिट लीजिये और उतरते वक़्त ड्राइवर को धन्यवाद देना ना भूलें, नहीं तो बदतमीज़ी समझी जायेगी। इन साम्राज्यवादी देशों में श्रम की महत्ता जिस तरह से आंकी जाती है, साम्यवादियों के लिये सीखने की चीज़ है। लम्बी रूट की बसों में ड्राइवर ही सामान डिक्की के भीतर भी रखता है ।

लेकिन किराया, बाप रे! इतना ऊँचा कि यदि सर्दी कम होती, तो मैं पैदल चलना बेहतर समझती। सोचिये कि कुछ किलोमीटर के लिये चार पौंड यानी कि चार सौ रुपये देने पड़े, तो हम भारतीय बस में जायेंगे ना, यहाँ तो महिनेभर की गैस का सिलैंडर 400 से 800 हो जाये, तो हाय तौबा मच जाये।

मैं अपने दिमाग को समझाती हूँ, भई एक पौण्ड को एक रुपया ही समझो, यह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या झट से गुणा-भाग करके डरा देते हों। बस यह तरीका कुछ कामगार लगता है।

बस से दिखते घर, बाज़ार आदि, ना जाने कैसे एक स्ट्रीट के सभी घरों का चेहरा मोहरा एक-सा है!! लेकिन लगते कितने ख़ूबसूरत हैं...। गुड़िया के घरों जैसे छोटे-छोटे... इतना प्राकृतिक असंतुलन भी इनके चेहरों को क्यों नहीं बिगाड़ पाता। इसलिये कि इनके वासी अपने देहवाद के प्रति सजग हैं, किसी भी इमारत का पुरानापन यहाँ महत्वपूर्ण माना जाता है, घरों को बाहर और भीतर से सजाये रखना ज़िंदगी का चलन है।

कहा जाता है कि 54-55 ईसा पूर्व ने रोमनों ने ख़ासतौर से जूलियस सीजर ने एक ऐसे द्वीप का उल्लेख किया है, जो दूध और माँस पर निर्भर रहते हैं, खाल पहनते हैं और अपने चेहरे को नीले रंग से पोतते हैं। दरअसल रोमनों ने अपनी महानता जताने के लिये अन्य यूरोपीय आदिवासियों को किसी ना किसी तरह से निम्नतर बताने का काम किया था। रोमनों ने इन द्वीपों से लंबे समय तक लाभ उठाने के लिये यहाँ किले खड़े किये और छिपी प्राकृतिक संपदा को हड़पने की कोशिश की। वे आदिवासियों को जंगलों में खदेड़ते हुए यहाँ की संपदा को हथियाने का कार्यक्रम बनाने लगे। उस वक़्त इस द्वीप में प्रमुख रूप से तीन जनजातियाँ थीं, दक्षिण पूर्व में युद्ध प्रेमी Silures, दक्षिण पश्चिम में शांतिप्रिय Demetae और मध्य और उत्तर में Deceangli और cornovii। इनकी भाषाएँ केल्टिक परिवार की थीं। यहाँ भरपूर कोयला और लोहे की खदानें थीं। रोमनों ने सैनिक छावनियों के लिये किलों का निर्माण और लौह और कोयले आदि खनिजों को ढोकर अपने देश ले जाने के लिये सड़कें, पुल और बंदरगाह बनाने शुरू किये। ब्रिटनों में से अधिकतर रोमन सेना के हिस्से बन गये, कुछ ब्रिटन रोम में जाकर लैटिन आदि सीखकर अपने साथ ब्रिटन भाषा में लैटिन शब्द ले आये।

लेकिन वैल्श के आदिवासी अपनी केल्टिक भाषा से जुड़े रहे और अपनी जीवन शैली में शांतिप्रिय होने के कारण प्रकृति से जुड़े रहे। रोमनों का ध्यान मात्र प्राकृतिक सम्पदा ढोकर ले जाने में था, लेकिन जब रोमन का शासन सुस्त पड़ा, तो पुनः कबिलों के योद्धाओं ने बागडोर संभाली।

वैल्श की अपनी कोई प्राकृतिक सीमारेखा नहीं थी, अतः वे ब्रिटनी कबीलों के द्वारा शासित किये जाते रहे, जब जर्मन भाषी सेक्सन आक्रमणकारी ब्रिटनों पर राज्य करने आये तो उन्होंने इन शांतिप्रिय आदिवासियों को वैल्श नाम से पुकारा, वैल्श का मतलब है, अजीबोग़रीब। हालाँकि वैल्श के लोग अपने को ब्रिटन ही मानते रहे,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेकिन यह अजीबोगरीब नाम वैल्श लोगों के साथ चिपक कर रह गया। आज भी ब्रिटेनवासी वैल्श लोगों को मसखरा, मूर्ख और आलसी मानते हैं, संभवतया उनके लोक से जुड़े जीवन के कारण। किसी वैल्श से बात करना आसान है, बनिस्बत कि अंग्रेज़ के। ये भारतीयों की तरह अपरिचितों को देखकर मुस्कुराते हैं, बातें भी करते हैं और गले मिलना, सार्वजनिक चुम्बन आदि से परहेज करते हैं।

यूरोपीय देश भारतीय राज्यों की तरह हैं, जिनका आपस में कोई ना कोई संबंध है, इसलिये इन्हें पूरी तरह से अलग करना कठिन ही है। आपसी युद्ध और धार्मिक प्रभाव यूरोपीय देशों की गाथाओं में है, ब्रिटेन के क्षेत्र से ईसाई धर्म के प्रसार में भी लोकधर्मिता का प्रभाव पड़ा, जिससे एक ही धर्म में विविधता और स्थानीयता आ गई। वैल्श के चर्चों में अन्य यूरोपीय चर्चों से भिन्न आचार प्रचलित हुए। इसी जद्दोजहद के उपरांत, जो भाषाएँ निकल कर आईं वे थीं- Welsh cornish और Breton। वैल्श भाषा अपने मूल के काफ़ी निकट थी। वैल्श लोगों ने अपने लिये अपना नया नामकरण किया, Cymry यानी की एक स्थान के लोग।

वैल्श राज्य के अपने राजा थे, लेकिन अधिकतर उन्हें इंग्लिश राजाओं के अधीन रहना पड़ा। वैल्श भाषा को आज यूरोप की प्राचीनतम जीवित भाषा का दर्जा दिया जाता है, हालाँकि समयानुसार इसमें अन्य यूरोपीय भाषाओं का प्रभाव पड़ता रहा। वैल्श का राजकीय इतिहास उठापटक का इतिहास रहा। कहा जाता है कि वैल्श अंग्रेज़ों की पहली कॉलोनी थी, लेकिन आज भी वैल्श भाषा विश्व की उन गिनी-चुनी भाषाओं में मानी जाती है, जिनका उपयोग आधुनिक काल में बढ़ा है, घटा नहीं, जिसने अपनी अस्मिता की लड़ाई भाषा को मुद्दा बना कर लड़ी है, जिसने अंग्रेज़ी के बगल में रहते हुए उसे चुनौती दी है। आज वैल्श में सोलह साल की आयु तक अपनी भाषा पढ़ना आवश्यक है और आज वैल्श भाषा का साहित्य किसी भी भाषा के साहित्य से टक्कर लेने को तैयार है।

यूरोप का क़रीब-क़रीब पूरा युद्ध इतिहास लिखा गया है और युद्ध की यादगारें हैं किले। बचपन चितौड़गढ़ के किले के नीचे पनपा, लेकिन उस वक़्त यह किला स्वतंत्रता और गरिमा की मिसाल लगता था सैनिक छावनी नहीं। चित्तौड़गढ़ का किला, जहाँ महाराणा प्रताप के शौर्य का बखान करता था, तो वहीं पद्मिनी के सौंदर्य का भी। वहाँ मीरा के भजनों की लहरियाँ गूँजी, तो जौहर की राख भी उड़ी। संभवतया किसानों को छोड़कर सारा जनजीवन किले में समाहित लगा। लेकिन यहाँ के अधिकतर किले सैनिक छावनियों के प्रतिरूप रहे। जब रोमन आये, तो उन्होंने अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बची हुई सेना के लिये किले बनाये। पहले पहल किले लकड़ी के होते थे, लेकिन जब छुटपुट युद्धों के उपरांत उन्हें जलाया जाने लगा, तो पत्थर के बनाये जाने लगे। आरंभ में ये मात्र सैनिक चौकी का काम करते थे यानी कि जब किसी प्रदेश पर चढ़ाई की जाती, तो एक सैन्य अधिकारी के साथ सैनिकों को किले में छोड़ दिया जाता, जिससे वे लगान वसूली के साथ-साथ उस प्रदेश की संपदा को विजित शासक के पास पहुँचाते रहे। ये किले ही दमन के दर्शक होते थे, जहाँ अपने देश से बिछुड़े सैनिक अपनी दमित भावनाओं को दमन से जागृत करने की कोशिश करते रहते। जब कभी दमित जन भी इन किलों को जीतने की कोशिश में रहते। यानी कि ये किले भावनात्मक स्वतंत्रता के प्रतीक थे। लेकिन शनैः शनैः किले शासकीय शान के प्रतीक बनते गये और शासक स्वयं अपन प्रदेश में किले बनाने लगे। किलों का आरामगार के रूप में उपयोग इसके बाद की स्थिति है, जो आज तक जारी है। आज भी ब्रिटेन की महारानी वर्ष में दो महिने के लिये स्कॉटलैंड के किले में आराम करने जाती हैं।

19 मार्च 2013

मैं सबसे पहले कैफिली किले (Caerphilly Castle) की सैर करने अपनी बेटी के साथ जाती हूँ। नातिन के जन्मदिन का दूसरा दिन था, पिछ्ला तो पार्टी में चला गया, आज के दिन भ्रमण का कार्यक्रम बनाया गया था। अब तो इसे सैर ही कहना चाहिये, नहीं तो जिस तरह की कठोरता इस भग्नावेश में दिखाई देती है, वह सैरगाह शब्द के लिये उचित नहीं दिखता। कैफिली किला बूढ़े दैत्य की तरह है, जो अपने टूटे दाँतों के बावजूद अपनी शान को रखे रहना चाहता है। अजीब-सी ठंड है, सीलन भरी, कड़कड़ाती सूखी ठंड से तो निपटा जा सकता है, लेकिन ये बरसाती ठंड जान निकाल लेती है। टैक्सी हमें किले के पिछवाड़े छोड़कर चली जाती है। Rhymney Valley की तलहटी में Rhymney नदी के क़रीब बने इस किले में घुसने से पहले अपने आप को तैयार करना बेहद कठिन काम लगा। नदी पर ख़ूबसूरत बतखें तैर रही थीं, चित्र-लिखित सा दृश्य, लेकिन चित्र सर्दी को नहीं दिखा सकता और ठंड इतनी कि दाँत क्या हाड़ भी कंपकंपा उठे। ये बतखें जैसे जीव तो मानो किले के सैनिकों की आत्माएँ हैं, क्वैक-क्वैक करती चली आ रही हैं, लगता है कि अब चोंच मार कर हाथ का सामान छीन लेंगी, अपने मंदिरवासी बंदरों की तरह। किले की गुंबदों में से एक ऊपर से काफ़ी झुक गई है, जो अपने आप में अद्भुत नजारा पेश करती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब हम किलों की बात करते हैं, तो उन शासकों की बात करते हैं, जिन्होंने इन्हें खड़ा किया, उन विजेताओं को याद करते हैं, जिनके पास जीत का तमगा था। लेकिन उन मज़दूरों की बात नहीं करते, जिन्होंने पत्थर तराशे और मीनारों पर चढ़ाये। आम सैनिक और आमजन से तो दासों–सा व्यवहार होता रहा होगा। बाद में मैंने स्कॉटलैंड के एक म्यूज़ियम में नोट पढ़ा था कि स्कॉटिश सैनिकों को पौशाक बनाने के लिये सालाना एक पौंड मिला करता था, जिसे भी नगर सेठ दिया करते थे। इससे वर्ष में एक पौशाक मुश्किल से बन पाती, अधिकतर कोट फटने के बाद कोटी ब ।। ली जाती। स्थिति इतनी बदतर होती गई कि जब उनका अपना साथी युद्ध में धरा!शायी होता तो अपने ही सैनिक जल्द से जल्द उसके कपड़े उतार साथी की लाश नंगी छोड़ देते। तो सोचिये कि उन लोगों का क्या हाल होता होगा, जिनसे बेगार लिया जाता है? निसंदेह इन किलों को बनाने के लिये स्थानीय बंदी सैनिकों और आमजनों का सहयोग लिया जाता होगा, जो किले की किसी भी दीवार पर अंकित नहीं है।

हम लोग अपने को गर्माने के लिये सिटी सेंटर की ओर जाते हैं, जहाँ पर पर्यटक केन्द्र है। यहाँ कॉफी–चाय आदि के साथ पर्यटन संबंधी सूचनाएँ भी प्राप्त की जाती हैं। गर्मी आते ही हम किले के मुख्यद्वार की ओर बढ़ते हैं। यह किला भी Anglo-Norman शासक 1263, Gilbert de Clare, जिसे 'Red Gibert' भी कहा जाता है, द्वारा बनवाया गया। उसका प्रबल विरोधी अंतिम वैल्श शासक Llywelyn the Last जिसने वैल्श की स्वतंत्रता के लिये और बेहद मेहनत की। Llweyln को इंग्लैंड की सिविल वार का कारण भी माना जाता है।

30 एकड़ के भूभाग में फैले, अप्राकृतिक झील से घिरे किले की बाहरी दीवारें इतनी मज़बूत और ऊँची हैं कि यह सोचना भी कठिन लगता है कि तलवार भालों के युग में इस किले पर कोई चढ़ाई की बात भी सोच सकता है, लेकिन Llywelyn और बागी स्थानियों के कारण यह किला पूर्ण सुरक्षित कभी नहीं रह पाया। इसके निर्माण के दौरान ही इसकी प्रमुख भाग को Llywelyn और बागियों द्वारा जला दिया गया था। बाद की सर्दियों में भी किले पर आक्रमण होते रहे और आज यह जर्जर किला बूढ़े थके शेर की तरह दिखावटी वस्तु बन गया है, जिसकी खूनी दीवारों पर सौंदर्य और कला की बातें होती हैं।

किले के प्रमुख द्वार के बाहर कृत्रिम झील के ऊपर से दो पुल हैं, जो संभवतया युद्ध के वक़्त नष्ट कर दिये जाते होंगे। आयताकार किले की अभेद्य दीवारों को दोगुनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुरक्षा प्रदान करने के लिये पोल खड़े किये गये हैं, जो भीतरी सैन्य चौकी का काम करते हैं। तहदार दीवारें, सुरक्षा छिद्र, जिनमें से शत्रुओं पर गोले बरसाये जाते हैं, और रस्सी व चकरी का वैज्ञानिक उपयोग, जिससे किले के फाटक बंद किये या खोले जा सकें।

किले का प्रमुख कक्ष ग्रेट हॉल, जो कभी चैपल भी रहा था, आज भी आकर्षक है। इसमें बारहवीं सदी की भोज मेज और कुर्सियाँ लगी हैं और दीवारों पर आयुध लगे हैं, आज कल यह चैपल विवाह आदि के लिये किराये पर दिये जाता है। खूनी अक्षरों पर प्रेम के कितने आखर ख़ुद पाते हैं, पता नहीं, लेकिन व्यापारीकरण का अच्छा नमूना है। मैं पोली दीवारों के भीतर की सीढ़ियों पर चढ़ती हूँ, डर-सा लगता है, ना जाने कितनी आत्माएँ चुपकी पड़ी होंगी इन अँधेरी दीवारों में। ये सीढ़ियाँ पोल की ओर गुप्त मार्ग हैं, जो सैनिकों द्वारा उपयोग में लाये जाते होंगे। दूसरी तरफ की सीढ़ी घुमावदार रास्ते से पोल की छत पर चढ़ जाती हैं, मैं उस पर भी चलने का मन बनाती हूँ, आजकल मात्र यह पोल सुरक्षित माना जाता है। गोल-गोल घूमते जब मैं ऊपर पहुँचती हूँ, तो लगता है कि नगर की छत पर हूँ। पूरा नगर बेहद ख़ूबसूरत दिखाई दे रहा है, पोल के ऊपर की खपरेले पत्थर की बनी लग रही हैं, टेरेकोटा का प्रचलन शायद बाद में आया होगा। छत पर मात्र एक परिवार है, पिता बढ़िया कैमरे से फोटो में व्यस्त है, एक चार पाँच साल की लड़की लगातार रो रही है और माँ समझ नहीं पा रही कि नजारे देखे या बच्ची को बहलाये। संभवतया बच्ची ऊँचाई से डर रही होगी, लेकिन पिता की एकाग्रता देखते बनती है। मैं गुंबद की आख़िरी सीढ़ियों तक पहुँचती हूँ, लेकिन तुरंत उतरने का मन बना लेती हूँ। ये मोटी मोटी दीवारें मुझे शासकों के नहीं, दासों के दर्द से लिखी लकीरें लगती हैं, उनके दर्द को कितना सह सकती हूँ मैं?

एक पोल ऊपर से गिर कर एक तरफ झुक गया है, कहते हैं कि पीसा की इमारत से भी ज़्यादा झुकाव है इस खंडित पोल का। बाहर दालान में वे आयुध रखे हैं, जिनका यूरोपीयों ने उपयोग किया, सामान्य विज्ञान के सामान्य से नियम चकरी, गिल्ली आदि से चलने वाली तोपें और अन्य प्रक्षेपास्त्र हैं, जिनका उपयोग किले के भीतर से पत्थर और तीर बरसाकर शत्रुओं से बचाव करना होता होगा।

यह पर्यटकों के लिये प्रिय समय नहीं है, अतः किला ख़ासा भुतहा लग रहा है, दीवारें कितनी भी मोटी बना ली जाये, टूटती ही हैं, ऊँचाई कितनी भी उठा ली जाये, गिरती ज़रूर है, कलरव को सन्नाटे में बदलता वक़्त किले में थक कर आराम करता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सा जान पड़ रहा है, किला हवा को रोक जरूर रहा है, लेकिन सर्द स्मृतियों को नहीं।

किला अच्छा है, लेकिन उन यादों के लिये ख़ूबसूरत शब्द का प्रयोग कैसे करूँ, जो खूनी दास्तान कहती है, शाम के साथ सर्द हवाएँ तेज़ हो जाती हैं।

हम पास की मॉल में घुस कर टैक्सी का इंतज़ार करते हैं, क्योंकि सर्दी इतनी है कि सड़क पर खड़ा नहीं हुआ जा रहा है।

लौटते वक़्त मेरे झोली के सारे शब्द सन्नाये पड़े हैं...।

कमारथन और मैना एल्फिन

कविता की संगत-भाग दो

मेरे वैल्श आने की बात सुन कर प्रमुख वैल्श कवि मैना एल्फिन ने मुझे अपने विश्वविद्यालय में न्यौता दिया और मैं भी वहाँ जाने की ललक में थी। 20 मार्च, 2013 को तड़के ही कमारथन के लिये गाड़ी पकड़नी थी। कमारथन का विश्वविद्यालय वैल्श के प्रमुख विश्वविद्यालयों में से एक है और यहाँ मैना एल्फिन Menna Elfyn क्रिएटिव लिटरेचर विभाग की अध्यक्ष हैं। मैना वैल्श की नामीगिरामी कवि हैं जिनकी पहचान पूरे विश्व में है। मैं उन्हीं से मिलने निकली हूँ। ऐसे वक़्त भारत अच्छा लगता है, घर से निकले नहीं कि ऑटोरिक्शा आदि मिल जाता है और यात्रा अधिक महँगी भी नहीं होती। यहाँ यूरोप में बसों के किराये बेहद ज़्यादा हैं। टैक्सी के बारे में सोचना भी कठिन लगता है। बसों का फ़िक्स समय होता है, छुट्टी के दिनों में तो शाम छह बजे के बाद बस मिलना मुश्किल हो जाता है। अब यहाँ घर से यानी कि बेटी के घर जो कि कार्डिफ में है, बस लेकर रेलवे स्टेशन तक जाना था, फिर कहीं गाड़ी पकड़नी थी। रेलवे किराया यदि पहले से बुक ना हो तो बहुत ज़्यादा होता है, हमारे देश जैसे फ़िक्स नहीं होता। मैं घर से बस में स्टेशन पहुँची और कमारथन जाने वाली गाड़ी की सूचना के लिए नोटिस बोर्ड पर टकटकी लगा कर खड़ी हो गई। यहाँ रेलवे स्टेशन पर भीड़ नहीं होती, क्योंकि आप अपनी गाड़ी की सूचना आने पर अंदर प्रवेश कर सकते हैं। जब मैंने कमारथन जाने वाली गाड़ी देखी, तो भीतर आ गई, मात्र दो डिब्बे की रेलगाड़ी। यूरोप में मैंने अन्य जगहों पर भी रेल यात्रा की है, लेकिन इतनी छोटी रेल कभी नहीं देखी। निसंदेह साफ सुथरी थी, टिकिट चैकर भी बेहद तमीज़दा। शुक्रिया, कृपया के बिना कोई वाक्य नहीं...।

कार्डिफ से कमारथन की यात्रा क़रीब तीन घंटे की थी, चाय-चाय, समोसा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भजिया आदि सुने बिना रेलयात्रा हम भारतीयों को सूनी-सूनी-सी लगती है। पिछले सालों क़रीब हर सप्ताह दो बार यात्रा करनी पड़ी थी, त्रिवेन्द्रम से कालडि तक, सो रेल और स्टेशन की भीड़ भड़क्का ज़िंदगी से काफ़ी क़रीब से वाकिफ़ गई। इस यात्रा का सारा आनंद खिड़की के बाहर था। बिना रुकावट नज़ारों को देखते जाना, कहीं बर्फ़ तो कहीं धूप, कहीं लंबे-लंबे चारागाह, और ख़ूबसूरत घर, रेल का रुकना, चलना और हर स्टेशन के बारे में सूचना देना, सब कुछ इतना अनुशासन से चल रहा था कि विश्वास करना कठिन-सा लग रहा था।

अन्ततः कमारथन आ पहुँचा, गाड़ी समय से कुछ पहले ही थी। लेकिन मैना एल्फिन स्टेशन पर इंतज़ार कर रही थी। उनमें नन्ही बच्ची जैसी फुर्ती और सरलता है, हालाँकि वे उम्र में साठ ऊपर है। मैना कहती है कि हम सीधे विश्वविद्यालय चलते हैं, हालाँकि मेरा भाषण शाम को है, लेकिन दोपहर से पहले का वक़्त कैसे बिताना है, सोचेंगे। हम लोग सीधे विश्वविद्यालय जाते हैं, भव्य इमारत ख़ूबसूरत परिसर, लेकिन बेहद शांत, लगता है कि छात्र कहीं छिपे बैठे हैं। मैना का कमरा छोटा है, लेकिन किताबों से लदालद भरा। अहाते साफ़-सुथरे और पुस्तकालय आधुनिक है। मैना मुझे पुस्तकालय ले जाती है, मैं कई किताबें खोल कर देखती हूँ, पत्रिकाएँ आदि सजी हैं। पुस्तकालय में कुछ वक़्त बिताने के बाद हम यूनिवर्सिटी के कैंटीन में आते हैं। मैना मुझे बाहर रेस्तरां ले जाना चाहती है, लेकिन मेरी इच्छा विश्वविद्यालय परखने की है, इसलिये कैंटीन चलने की बात कहती हूँ। अभी-अभी ज़रा-सी धूप खिली है, मैं ख़ुश हो जाती हूँ, लेकिन साथ ही सोचती हूँ कि कुछ दिनों पहले मैं केरल की कड़कड़ाती धूप से परेशान थी और अब हालात ऐसे बदले कि अंजुरी भर धूप मन खिला रही है। कैंटीन में कुछ छात्र दिखाई देते हैं, बेहद आत्मलीन से, चहचहाहट से कोसों दूर, यह कैसा अनुशासन है? लेकिन तभी कुछ आवाज़ें आईं। छात्रों का एक समूह बाहर निकला, लेकिन रंग बता रहा था कि ये भारतीय हैं। एक छात्र के माथे पर लंबा वैष्णवी तिलक लगा था। मैना ने तुरंत उन्हें रोककर पूछा कि वे कहाँ से आये हैं? जैसा मेरा अनुमान था, वे पाकिस्तान, बांग्लादेश और भारत के छात्र थे। तिलकधारी गुजरात के थे। मैनेजमेंट के छात्र थे, और लंदन विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे। स्टडी टूर के तहत कमारथन विश्वविद्यालय आये थे।

कैंटीन में तकनीक का प्रयोग अच्छा था। धुली तश्तरियाँ ऑटोमेटिक चलन ट्रे के द्वारा बाहर आती जाती हैं और जूठी तश्तरियों को दूसरी चलन ट्रे पर रख दिया जाता है। मैना मुझसे खाने की सामग्री पसंद करने को कहती हैं। मैं लैंब करी और चावल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ले लेती हूँ। मैना ने बेहद अल्प भोजन लिया है। खाने के वक़्त हमारी कई लोगों से मुलाकात होती हैं, कुछ भारतीय और श्रीलंका मूल के अध्यापक भी मिलते हैं। वैल्श में अनेक भारतीय और श्रीलंकन महायुद्ध के वक़्त से हैं। युद्ध के वक़्त जांबाज सैनिकों को इंग्लैंड में रहने की छूट मिल गई थी, तो अनेक लोग वहीं बस गए थे। मैना बतलाती हैं कि पहले उनके पास सुविधाएँ कम थीं, लेकिन अब वे यूरोपीयों जैसे समृद्ध हो चुके हैं और सरकार से अपने हक़ की लड़ाई भी लड़ते हैं। मुझे एक महिला मिलती है, जो व्हीलचेयर पर हैं, जब उन्हें पता चलता है कि मैं केरल से हूँ, तो वे मिलना चाहती हैं, क्योंकि वे माँ अमृता की भक्त हैं। वे अमृता के बारे में बात करना चाहती हैं, लेकिन मेरे पास इस विषय पर कुछ ज़्यादा कहने को है नहीं है, ना मैं इस विषय में रुचि ले पाती हूँ।

यूँ तो कमारथन शहर वैल्श राज्य के प्राचीनतम शहरों में से एक है, लेकिन मुझे बेहद सूना लगता है, ना ही सड़कों पर मीलों तक बस या कार की आवाजाही दिखाई देती है, ना ही बसों की, मैना प्रस्ताव रखती हैं कि चलो शहर घूम कर आते हैं, मैं ख़ुशी-ख़ुशी तैयार हो जाती हूँ और उसे कहती हूँ कि मुझे यहाँ की भेड़ के ऊन से बना गरम कोट चाहिये, इंडियन कोट में मेरी सर्दी रुक ही नहीं पा रही है। मैना हँस कर कहती हैं- 'हाँ, तुम्हें देखते ही लगा कि तुम ठिठुर रही हो।' मैना मुझे शहर के केंद्र में ले जाती हैं। बाहर से सुनसान लगने वाला शहर यहाँ तो काफ़ी चहक रहा है। एक बेहद बड़े कंपाउंड के भीतर अनेक दूकानें थीं। इसे बड़ा मॉल ही कह सकते हैं, लेकिन दूकानें कुछ इस तरह थीं, जैसी हमारे यहाँ दिल्ली के लाजपत नगर आदि शॉपिंग कॉम्प्लेक्स में होती हैं। मेरी आदत है कि मैं बाज़ार एक ख़ास लक्ष्य लेकर ही जाती हूँ, व्यर्थ में मंडराना मुझे थका देता है। मैंने मैना से मॉल कल्चर के बारे में पूछा, तो कहने लगीं कि हाँ ये नया कल्चर लोगों की जेब पर ज़्यादा बोझ डाल रहा है। वैल्श के लोग स्वभाव से कम फैशन वाले होते हैं और बेहद शांत जीवन पसंद करते हैं। फ्रांसीसी और रोमन तो प्राचीनतम काल से वेशभूषा के प्रति सजग थे, अंग्रेज़ों ने रोमनों से यह कला सीखी, लेकिन वैल्श ज़्यादातर सरल लोग हैं, वैसे भी वैल्श में कोयला खान ज़्यादा होने के कारण लोग उसमें काम करते थे, तो जीवनशैली के बारे में सहज रहना आसान था, लेकिन मॉल संस्कृति लोगों की जेबें ढीली कर रही है। हम दूकान-दर-दूकान घूमते रहे, लेकिन जाड़े के कपड़े दूकानों से गायब थे, दूकानें देख कर लग रहा था कि गर्मी आ गई, जब कि कड़ाके की ठंड थी।

मैना कहती हैं कि शादी का सीज़न आ गया है, युवा लोग मौसम नहीं, फैशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
देखते हैं, तो कितनी भी ठंड हो, वे ऐसे ही कपड़े पहन कर जायेंगे।

वैसे भी आजकल कपड़े छरहरे लोगों के लिये ही बनते हैं, मेरे आकार के नहीं, मैं थोड़ी निराश होती हूँ तो मैना कहती है कि कोई बात नहीं, यहाँ कोट नहीं मिलेगा, तो हम पारंपरिक दूकानों में जायेंगे।

यह हमारी आख़िरी दूकान थी, जिसमें कुछ उम्मीद थी और यहाँ मुझे दूकान के आख़िरी छोर पर भेड़ की ऊन से बना एक काला कोट दिख ही जाता है, जिसका नाप भी सही था। मुझ से ज़्यादा मैना ख़ुश हो जाती है, क्योंकि इस कोट पर पचास प्रतिशत की छूट थी, पचास पौंड में मुझे बेहतरीन हाथ का बना कोट मिल रहा था।

मैना को भी एक स्वेटर मिल गया। अब हम लोग रात के खाने का कुछ सामान ख़रीद कर यूनिवर्सिटी वापिस आते हैं। मैं तुरंत अपने को काले कोट के हवाले कर देती हूँ। मैना के साथी मुझे वह पोस्टर लाकर देते हैं, जो उन्होंने विभाग के लिये बनाया था। मैना कहती हैं कि हम लोग भाषण में भीड़ पसंद नहीं करते, इसलिये पोस्टर केवल विभाग में लगाते हैं, मैं बस मुस्कुरा देती हूँ, क्योंकि हम तो भीड़ संस्कृति के लोग हैं, किसी भी कार्यक्रम की सफ़लता भीड़ से मापते हैं।

अब मीटिंग का वक़्त आ गया, अब तक मैंने यह निश्चित नहीं किया था कि बोलना क्या है। मेरे पास बोलने के लिये एक घंटे से ऊपर का वक़्त था। मेरे लिये वाचन क्रिया लेखन क्रिया की अपेक्षा सहज है।

मैंने तय किया कि मैं कुछ कला और कविता की वर्तमान वैश्विक स्थिति और कुछ अनुवाद पर बात करूँगी, क्योंकि मैं फ़िलहाल मैना की कविताओं का अनुवाद भी कर रही हूँ। अपनी कुछ कविताएँ तो पढ़नी ही थीं।

छोटे से कमरे में चलने वाली मीटिंग काफ़ी अच्छी चली, सवाल-जवाब भी हुए। ना कोई चाय आई, ना ही बिस्किट, बस एक फोटोग्राफर था, जो विश्वविद्यालय की तरफ़ से नियुक्त था। मुझे याद आया कि कृत्या उत्सव में हमने शाम को खाली चाय दी, तो एक बड़े कवि की शिकायत थी कि चाय के साथ बिस्किट तक नहीं थे, कविता कितनी थी, इससे उन्हें मतलब नहीं था।

मैंने कविताएँ हिंदी में पढ़ी और मैना ने अंग्रेज़ी अनुवाद पढ़ा, मुझे अच्छा लगा जब उन्होंने भारतीय कविता और उसके पाठन की विधि के बारे में सवाल किये। यूरोप में कविता के साथ संगीत का काफ़ी महत्व है, हमारे देश में भी मलयालम कविता में भी संगीत का महत्व था, लेकिन मुख्यधारा से जुड़ने के मोह ने गद्य का प्रवेश करवा दिया। निसंदेह विचारात्मकता तो रेखांकित हुई, लेकिन गेयता को धक्का लगा। यही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्थिति वैल्श की रही है, यहाँ संगीत और कविता का नाता रहा है, लेकिन यूरोप अपने भूत को कम ही नकारता है।

काफ़ी लंबा सैशन था, लेकिन अच्छा लगा, सवाल-जवाब भी हुए, हँसने का मौका भी मिला। सैशन के बाद कुछ पुस्तकें भी बिकीं, लेकिन अच्छा लगा जब फोटोग्राफर ने कहा कि वह अलग से कुछ फोटो लेना चाहता है... शाम गहराने लगी, और हम दोनों घर लौट आये, मैना बता रही थी कि वैल्श के लोगों के जीवन में परिवार की अहम भूमिका रहती है, वह सताह में दो दिन अपने नातियों की बेबी सिटिंग करती है, जिससे उनकी बेटी अपना काम कर सके, मैना की बेटी भी लेखिका और गायिका है, फिल्मों में भी काम करती है, जी हाँ, वैल्श भाषा में भी फिल्में बनती हैं और लोग देखते हैं। मैना के पति सरकारी अधिकारी और वकील हैं, जो राजधानी कार्डिफ में रहते हैं। इस वक़्त तीन मंजिला घर में मैना अकेले ही रहती है। मैंने हँस कर कहा कि मैना और मैं एक-सा जीवन जी रहे हैं, क्योंकि उस वक़्त मैं त्रिवेन्द्रम में बिलकुल अकेली थी, क्योंकि प्रदीप रिटायरमेंट के बाद कोयंबटूर में पढ़ रहे थे।

यूरोपीय अपने घरों को बहुत सजा कर रखते हैं, प्रकृति की कठोरता उन्हें घर के निकट करती है, मैना का घर भी काफ़ी अच्छी तरह से सजा था, लेकिन अपने व्यस्त कार्यक्रम के चलते वे उसे सहेज नहीं पा रही थीं। लाइब्रेरी, पठन कक्ष, बैठक, रसोई और बच्चों के कमरे, यूरोपीय मापदंड में इसे हवेली माना जा सकता है, मैना बताती हैं कि घर बनाते वक़्त बच्चे छोटे थे, तो घर भरा-भरा लगता था, लेकिन अब सब अपने घर जा चुके हैं, तो अब लगता है कि फ्लैट में जाना पड़ेगा। फ्लैट संस्कृति पूरी दुनिया में हावी हो रही है। मैना के घर में हर जगह चीनी मिट्टी की केतलियाँ सजावटी सामान की तरह रखी हुई थीं। मैना कुछ असहज है, वह बाहर खाना खिलाना चाहती हैं, लेकिन मैं घर में ही कुछ साधारण खाने के पक्ष में हूँ, हम लोग चाय पीते हुए बातें करते हैं, मैना वैल्श लोगों के भाषा आंदोलन से जुड़ी रही हैं, वे कहती हैं कि हमने भाषा को अपनी अस्मिता से जोड़ा। मैना की कई कविताएँ जेल के कैदियों के बारे में हैं। जिनसे वे अपने जेलवास के दौरान मिली थीं। मैना ने साहित्य के साथ-साथ समाज के अराजक माने जाने लोगों के अध्ययन से संबंधी शोध भी किया है। विशेष रूप से किशोर क्रिमिनल के बारे में लंबे शोध का हिस्सा रहीं। वे बताती हैं दुष्कर से दुष्कर व्यक्तित्व के भीतर कलाकार मन अवश्य रहता है। मैना ने शोध के सिलसिले में एक ऐसे किशोर के साथ काफ़ी वक़्त बिताया, जिसे होपलेस केस मान लिया गया था, लेकिन जब उस किशोर के सामने पियानो आता, तो वह पूरा देवदूत लगने लगता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
था। मैना अपने भाषा आंदोलन के बारे में बताती हैं कि आंदोलन गुरिल्ला रीति से शुरू किया गया था, जिससे युवाओं को खूब मज़ा आया था। हम लोग रात को चुपचाप सारे अंग्रेज़ी बोर्डों पर स्याही पोत आते और वैल्श भाषा में लिख आते। सुबह सरकारी कर्मचारी सफ़ाई कर अंग्रेज़ी में लिखते, जेल भरो आंदोलन हुआ, हम लोगों के लिये जेल जाना पिकनिक जाने जैसा था, लेकिन जेल ने मैना को अनेक पात्रों को नज़दीक से देखने का मौका दे दिया। मैना बताती हैं कि हमने गांधी के अहिंसा सिद्धांत का पालन किया था। निसंदेह इस अहिंसा आंदोलन का फायदा भी हुआ और वैल्श की भाषा को मान्यता मिल गई, अब वैल्श भाषा का अपना बीबीसी है, सरकारी कामकाज में यह भाषा प्रयोग में लायी जाती है और बच्चों को भी वैल्श भाषा की जानकारी दी जाती है। मैना की शिक्षा वैल्श माध्यम में हुई थी, लेकिन बच्चों को अंग्रेज़ी माध्यम में शिक्षा मिली, फिर भी उनकी बेटी और बेटा वैल्श भाषा में लिखते हैं। मैना के पिता चैपल में मिनिस्टर यानी कि पादरी थे और माँ पारंपरिक गृहिणी, इसलिये मैना के जीवन में सामाजिक अच्छाइयों के प्रति जागरूकता स्वभाव से है।

वैल्श समाज के बारे में बात करते हुए वे बताती हैं कि स्वभाव से वैल्श लोग हँसमुख और सामाजिक होते हैं, लेकिन उनकी बाडी लैंग्वेज पारंपरिक है यानी कि चुम्बन या गले मिलने की बजाय वे बस हय्या कहना पसन्द करते हैं, जबकि इंग्लिश लोग बात कम करते हैं, मुस्कुराते भी काम भर का, लेकिन चुम्बन और गले मिलना आवश्यक समझते हैं, मैं अधिकतर दौरे पर रहती हूँ, तो कभी-कभी भूल जाती हूँ, किसी से अनायास गले मिलती हूँ, तो वे पूछते हैं कि इंग्लैंड से लौटी हो क्या?

यहाँ वैवाहिक परंपरा आज भी जीवित है और तलाक समाज में पसंद नहीं किया जाता। जीवनभर विवाह निभाना सामाजिक आचार है, लेकिन अब यह आचार टूट रहा है। विवाह लड़के, लड़की की पसंद से होते हैं, लेकिन नौकरी पेशे को ख़ास महत्व नहीं दिया जाता। कई कम पढ़े-लिखे युवकों की शिक्षित लड़कियों से शादी हुई है, लेकिन गाँवों और खदान इलाकों में पत्नियों को मारा-पीटा भी जाता है, कभी -कभार महिलाएँ भागकर किसी हेल्पलाइन का सहारा लेती हैं, लेकिन जब पति रोता-गिड़गिड़ाता है, बच्चों का वास्ता देता है, तो वापिस पुरानी ज़िंदगी में लौट जाती हैं, लेकिन ये ही महिलाएँ वैल्श की स्वतंत्रता का अहम हिस्सा रही हैं, वैल्श में स्वास्थ्य सहायता, सर्वशिक्षा अभियान में स्त्रियों ने विशेष योगदान दिया। शिक्षा के क्षेत्र में भी महिलाएँ आगे रही हैं। इतिहास में भी कई उदाहरण हैं, जैसे Frances Morgan ब्रिटेन की दूसरी महिला थीं, जिन्होंने 1870 में मेडिकल साइंस में ग्रेजुएट किया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Elizabeth Hughes कैम्ब्रिज ट्रेनिंग कॉलेज की पहली प्रिंसिपल थीं।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उन्नीसवीं सदी में वैल्श का कोयला उत्पादन फल-फूल रहा था, इसलिए दूसरे देशों से भी खदान मजदूरों का आगमन शुरू हो गया। कोयले और लोह के निर्यात के कारण रेल और जहाज सेवाओं का विस्तार हुआ, तो महिलाओं को कुछ ज़्यादा स्वतंत्रता मिली। लेकिन वैल्श राज्य को अपनी मूलभूत सेवा के लिये काफ़ी संघर्ष करना पड़ा, आज यहाँ स्वास्थ्य सेवाएँ निशुल्क हैं और व्यायाम, शिक्षा आदि पर भी ख़ास ध्यान दिया जाता है। सरकारी स्कूलों में शिक्षा निशुल्क है, लेकिन नर्सरी के नाम पर जो प्राइवेट स्कूलों की खेप बढ़ी है, वह जम कर पैसा बनाती है। कोयला खदान समय में प्रिंटिंग-पब्लिशिंग आदि का चलन बढ़ा, लोगों ने बच्चों को वैल्श नाम देने शुरू कर दिये। वैल्श का राष्ट्रीय गीत और झंडा आदि भी इसी काल की देन है। वैल्श में रग्बी का प्रचलन भी बढ़ा और वैल्श टीम के लिये इंग्लैंड टीम को हराना गौरव की बात बन गई, लेकिन वैल्श चैपलों में कैथोलिक कट्टरता के स्थान पर लोकधर्मिता हावी थी, जो इंग्लैंड की चिंता का विषय बनी। जब प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हुआ, तो वैल्श फ्रंट लाइनर थे, इसलिए कई जानें गईं और जीवन में अस्त-व्यस्तता आई, तो स्त्रियाँ से बाहर निकलीं, पढ़ाई करके नर्स, ड्राइविंग, पोस्ट ऑफिस, यहाँ तक महिला सेना में काम करने लगीं। युद्ध के उपरांत दूसरी समस्या यह आई कि व्यापार क्षेत्र में मंदी छा गई, जिसका असर कोयले की खदानों पर भी पड़ा। वैश्विक मंदी ने कोयले की खदानों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया, धार्मिक हिंसा और महामारी भी खतरा बनी हुई थी। यह वक़्त वैल्श भाषा के लिये भी नुक्सानदायक साबित हुआ, क्योंकि मंदी की मार के कारण लोगों का पलायन बढ़ा और बाहर जाने के लिये अंग्रेज़ी की अनिवार्यता महसूस की जाने लगी। हालाँकि वैल्श साहित्य में नई कविता की शुरूआत 1900 से ही हो गई थी। दूसरे विश्वयुद्ध के वक़्त वैल्श लोगों के जीवन में और परेशानियाँ आईं। बच्चे स्कूल छोड़ कर गाँवों में पलायन कर गए औरत और मर्द दोनों को खदानों, ज़मीन ख़ुदाई और सेना में काम करना पड़ा। बच्चे ब्लूबैरी और रोजबैरी तोड़कर ब्रिटिश सेना के लिये जाम आदि बनाने में लग गए। युद्ध के उपरांत हज़ारों की संख्या में पॉलिश शरणार्थी आकर बस गए। 1945 में वैल्श में पुनःपरिवर्तन की आँधी आई, 1951 में कार्डिफ को सरकारी तौर पर वैल्श की राजधानी का दर्जा मिल गया। वैल्श राजनीतिक तौर पर भी सक्रिय हो गया। यहाँ से वैल्श भाषा को भी राजनैतिक तरीके से लड़ाई लड़नी पड़ी। 1978 में तो इंग्लैंड की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
महारानी ने वैल्श भाषा के लिये अलग बीबीसी चैनल बनाने की घोषणा कर दी, लेकिन मारग्रेट थैचर की सरकार इस बात को निबाहने को तैयार नहीं थी। तब वैल्श भाषा सोसायटी के सदस्यों ने सालों लड़ाई लड़ी। Gwynfor Evans ने माँग पूरी ना होने पर आमरण अनशन की ठानी। सरकार को माँग माननी पड़ी, क्योंकि उन्हें डर था कि भाषा का मसला वैल्श में विद्रोह को सुलगा देगा, तो 1982 में कुछ वैल्श चैनल शुरू कर दिये गये। 1984 में कोयला खदान के मज़दूरों की हड़ताल शुरू हुई, तो थैचर ने कई खदानें बंद करवा दीं, संभवतया उन्हें भय था कि इस तरह वैल्श लोग स्वतंत्र होते जायेंगे। वैल्श की कोयला खदानें सदियों पुरानी हैं, उनके बंद होने से हज़ारों लोगों की नौकरी चली गई। आज वैल्श के पास बस एक चालू खदान है, अरबों की संपत्ति ज़मीन में पुनः दफ़्न हो गई। मैना बता रही थीं कि कई मज़दूरों की पत्नियों ने घर चलाने के लिए पढ़ाई की और स्कूलों-कॉलेजों में नौकरियाँ कीं। क्योंकि उनके पति अवसाद के कारण नशे में डूब गये। आज भी कई घाटी के कस्बाई घरों में मर्द घर में बैठा है और पत्नी पढ़-लिख कर नौकरी कर रही है।

कोयला हड़ताल को क़रीब-क़रीब मुंबई कपड़ा मिल की हड़ताल की तरह दबा दिया गया था और जैसे कि इस विषय को हिंदी फ़िल्म का मुद्दा बनाया गया, उसी तरह वैल्श की कई फ़िल्मों की कहानी कोयला दमन पर आधारित है। मैंने भी कुछ अंग्रेज़ी फ़िल्में इस विषय पर देखी थीं। यही कारण है कि मारग्रेट थैचर को वैल्श लोग कभी पसंद नहीं कर पाये।

मैना के पास अनेक कहानियाँ हैं। वह बताती है कि किस तरह वह वियतनाम डॉक्यूमेंट्री बनाने गई और किस तरह गुरिल्ला युद्ध के लिये बनाई गई सुरंगों में फँस गई। मैना की ख़ासियत है कि वह जीवन जुड़ी हर कथा को कविता में अनूदित कर देती हैं।

हम दोनों देर रात तक बातें करते रहते हैं, दूसरे दिन मैं नाश्ते के बाद टीफ़ी झील के किनारे घूमने निकल जाती हूँ। मैना के घर के सामने यह ख़ूबसूरत वादी है। इस वादी की ख़ूबसूरती अनुपम है, इसे बस महसूस किया जा सकता है, एक पावन अनुभव, शब्द से परे वापिस लौट कर हम पुनः अनुवाद और कविता पर चर्चा करते हैं और दिन के भोजन के बाद लॉन्ग ड्राइव पर निकल जाते हैं। दोनों तरफ़ चारागाह और उनमें चरती भेड़ें, बतखें... कहीं-कहीं पर घोड़े भी दिखाई देते हैं, लेकिन सड़क पर भीड़ ना के बराबर है। मैना बताती हैं कि कमारथन यूनिवर्सिटी में अमेरिकन छात्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी काफ़ी संख्या में आते हैं, लेकिन मंदी के इस दौर में विदेशी छात्रों की संख्या कम हो गई है। बसों की आवाजाही ना के बराबर थी, छात्र कैसे काम चलाते होंगे, सबके लिये कार ख़रीदना संभव भी नहीं है। मैना कहती हैं कि हाँ यही समस्या है, यहाँ अपनी गाड़ी ना हो तो यातायात कठिन है, मैं सड़कों पर बेहद बूढ़ों को भी कार चलाते देखती हूँ।

हम पुनः कमारथन विश्वविद्यालय के दूसरे खंड में आ पहुँचते हैं। यहाँ नई और पुरानी इमारतें साथ-साथ है, चर्च जैसी भव्य इमारत देखने योग्य है।

वैल्श भाषा के लेखक, जिनका नाम मैं भूल रही हूँ, लेखन वर्कशॉप चला रहे हैं, वे पहले अपनी बाल कथा साहित्य की किताब पढ़ते हैं, फिर सबको एक-एक चिट देकर चिट पर लिखे वाक्य को आधार बनाकर कुछ लिखने को कहते हैं। दरअसल यह क्रिया अंग्रेज़ी के छात्रों को वैल्श भाषा के साहित्य से जोड़ने का उपक्रम है। मेरी लौटने का वक़्त क़रीब आता है...।

मैना और मैं दो दिनों से इतना साथ है कि छूटने का दुख होता है....

मैं पुनः कार्डिफ की ओर चल पड़ती हूँ...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'अलविदा एडिनबरा! जीते जागते म्यूजियम!

युद्ध, रोमांच, द्वेष, प्रेम, विछोह के लावे पर खड़े एडिनबरा,

तुम खूबसूरत हो, ब्यूटीपार्लर में सजे बालों की तरह। लेकिन हवा के साथ लहराना तुम्हें अभी तक आया नहीं। लगता है कि तुम्हारी धड़कनों को बहना नहीं आया!

तुम इठला रहे हो राजकीय मुकुट में मोती की आब में! वह मोती, जिसका नाता लहरों में खिलखिलाती सीपी से कब का टूट गया, लेकिन तुम अपनी आब को कब तक अपना कह पाओगे...!'

एडिनबरा के हवाई अड्डे में मेरी कलम नन्ही-सी डायरी पर यह उकेरती जा रही है, एडिनबरा को प्रत्यक्ष से स्मृति में बदलने में अब ज़्यादा वक़्त बाकी नहीं, मेरी लौटने की यात्रा की शुरूआत हो चुकी है। अभी सोमवार 25 मार्च को ही तो स्कॉटलैण्ड के लिये रवाना हुई थी, तमाम जद्दोजहद के साथ, निकलने से एक दिन पहले तबियत नासाज थी। एसिडिटी और गजब की थकावट, लेकिन मन में ठान लिया था कि कैसे भी हो जाना है...मत चूक चौहान, एक बार मौका गया तो...।

वही लंबा रूट, घर से बस स्टैंड तक, बस स्टैंड से ब्रिस्टल बस अड्डे फिर वहाँ से ब्रिस्टल हवाई अड्डे और फिर एडिनबरा हवाई अड्डे से एडिनबरा सिटी सेंटर एयरपोर्ट बस से फिर सिटी सेंटर से अरामुडा गेस्ट हाउस... मेरे पास सारे पते लिखे हुए थे और ना जाने क्यों मन में विश्वास था कि कुछ अनहोनी नहीं होगी...।

टैक्सी ड्राइवर ने सही जगह उतारा, सामान ज़्यादा नहीं था, जो कुछ भारी था यानी कि कोट, स्वेटर आदि, वह तन पर था। हाथ में हवाई नियमों के अनुरूप एक छोटा-सा सूटकेस, और कुछ नहीं... कम सामान होना कितना सुविधाजनक होता है, मुझे महसूस हो रहा था।

आरमुडा गेस्ट हाउस में एक वृद्ध महिला स्वागत करती हैं, मुझे देखते ही कहती हैं कि आपका इंतज़ार ही कर रही थी। फिर दूसरी मंजिल में कमरा दिखाने ले चलती हैं, ना कुछ लिखा-पढ़ी, ना पूछताछ। बेटी ने नेट से रिजर्वेशन करवा दिया था और फोन पर बात कर ली थी, उनके लिये इतना काफ़ी था।

यूरोपीय होटलों में भी सामान उठाने के सहायक नहीं होते, तो यह तो गेस्ट हाउस है, अपना बैग लेकर मैं उनके साथ चली, तो चक्करदार सीढ़ी से चढ़ने में वक़्त लगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमरा छोटा-सा था, लेकिन आरामदायक दिखा। गेस्टहाउस मालकिन ने मुझे नाश्ते की लिस्ट दिखाकर पसंद का नाश्ता सलेक्ट करने को कहा, मैं एसिडिटी से त्रस्त थी, तो बस दूध और फ्लैक्स वाले नाश्ते पर टिक कर देती हूँ। वे गुड नाइट कह कर चली जाती हैं।

मैं सुबह चार बजे की उठी थी और लगातार चल रही थी, सिवाय हवाई जहाज में तीन घंटे बैठने के, कपड़े बदलकर बिस्तर पर लेटी और एडिनबरा के पेंफलेट देखने लगी। मेरी आदत है कि मैं अपने पैरों को रास्ता खोजने को छोड़ देती हूँ, ज़्यादा प्लानिंग पर विश्वास नहीं करती, जबकि मेरी बेटी ने मैनेजमेंट किया है, तो वह हर बात की प्लानिंग पर विश्वास करती है। उसने मुझे तमाम निर्देश लिख कर दिये हैं, लेकिन मैं उन पर ज़्यादा गौर नहीं कर रही थी। भटकने का अपना मज़ा होता है।

दूसरे दिन सुबह उठ कर स्नान आदि करके मैं तैयार हो नीचे नाश्ते के लिये आती हूँ, तो देखती हूँ कि मेज़े सजी हैं, कप, प्लेट आदि से, हालाँकि कोई और दिखाई नहीं दे रहा है। अलमारी में फ्लेक्स के छोटे-छोटे डिब्बे हैं, वे महिला मुझे एक डिब्बा लेने को कहती हैं और जग में दूध रख देती हैं, साथ ही चार टोस्ट सेंक लाती हैं, पूछती हैं कि मेरा क्या प्लान है... क्या-क्या देखना चाहूँगी।

खिड़की के बाहर हल्की-सी धूप दिखाई देती है, तो कहती हैं- आज दिन बेहतर है तुम लकी हो...। जब मैं बाहर निकलती हूँ तो हवा का झोंका-सा आता है और उसके साथ रुई के नन्हे-नन्हे टुकड़े भी, लगता है कि शायद कुछ गंदगी है, जो उड़ कर आ रही है। सड़क बेहद ठंडी है, सूरज का नामोनिशान नहीं...। दो स्वेटर, लॉन्ग कोट, दस्ताने, टोपी... बाप रे इतने कपड़े तो कभी पहने नहीं, फिर भी ठंड मिट नहीं रही...। मुझे मालूम है कि यूरोपीय देशों में सिटी सेंटर होता है, जो शहर की धड़कन होती है, पर्यटकों को सारी जानकारी यहीं मिलती है। मैं सिटी सेंटर कहाँ है, पूछती हुई चल देती हूँ, हालाँकि मेरे हाथ में नक्शा है, लेकिन इसे देख चलना मुझे अभी तक नहीं आया।

गेस्टहाउस मालकिन ने बताया था कि सिटी सेंटर जाने के लिये 15 मिनट लगेंगे, लेकिन मैं चालीस मिनट से चल रही हूँ, चलना अच्छा लग रहा है, देख रही हूँ कि यह शहर सीधी सड़कों से बनाया गया है, बीच में काटने वाली गलियाँ भी। हर गली का कोई ना कोई नाम है, जैसे कि ब्रेड स्ट्रीट आदि, मुझे पुराना जयपुर याद आया, जिसे चौसर के आकार में बनाया गया था और गलियों के नाम थे, ठठेरों की गली, रंगरेजों की गली, आदि...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चालीस मिनट होने पर मैं घबरा गई कि कहीं भटक तो नहीं गई? सामने टूर ऑपरेटर का ऑफ़िस दिखा, वहाँ से सही रास्ते का पता भी, सही चल रही थी, पर कुछ और चलना था। अन्ततः पर्यटक सहायता केंद्र पहुँच जाती हूँ और अपनी बारी की प्रतीक्षा करती हूँ। मैं उससे सीनियर सिटिजन के टिकिट के लिये पूछती हूँ, जिसमें बस सेवा के साथ-साथ तीन-चार स्थानों के टिकिट शामिल थे। यूरोप में एंट्री फ़ीस काफ़ी ज़्यादा होती है, नेट पर देखकर सुविधाओं का पता लगा लें, तो कुछ सस्ता पड़ जाता है। काउंटर पर खड़ा युवक मुझसे सीनियर सिटिजन होने का ना तो कोई प्रमाण माँगता है, ना ही कुछ पूछता है, बस टिकिट हाथ में देकर समझा देता है कि मुझे निकट के बस अड्डे पर जाना है, वहीं से बस मिलेगी। बस अड्डे पर खड़े ड्राइवर, कंडक्टर आदि बड़ी मित्रता से बात करते हैं और तुरंत मेरे टिकिट को दो दिन के पास में कन्वर्ट करते हैं, अब मैं पूरे दो दिन पर्यटन बसों में मुफ़्त में चढ़ सकती हूँ। रुक-रुक कर बर्फ़बारी हो रही है, फाये जैसी रुई रीढ़ तक कंपकंपा देती है, इसलिये बस में बैठना बेहद अच्छा लग रहा है, मैं मन को समझाती हूँ कि आराम के चक्कर में ना पड़े...। बस का पहला स्टॉप किला है और मैं वहीं उतर गई...।

एडिनबर्ग का किला सही मायने में किला है, सोई हुई ज्वालामुखी के मुहाने पर बैठे इस किले का राजनैतिक, सामरिक और सांस्कृतिक महत्व रहा है, जो किले के भीतर छोटे-छोटे म्यूज़ियमों में देखने को मिलता है। स्कॉटलैंड का इतिहास निश्छल आदिवासियों को छलने का इतिहास है। सीधे-साधे आदिवासी, जो कि सामुद्रिक जीवों और जंगलों पर निर्भर रहने वाले जन थे, किस तरह से नाथ लिये जाते हैं। हालाँकि आरंभ में स्कॉटलैंड के अपने राजा भी रहे, जैसे कि Alexander III of Scotland, जो अंतिम स्वतंत्र स्कॉटिश राजा माने जा सकते हैं, लेकिन उनकी पौत्री Margaret, Maid of Norway की असमय मृत्यु से स्कॉटिश राज्य अनाथ-सा हो गया, जिसका फायदा उसके ही पड़ोसी ब्रिटनों ने उठाया। एक समय जो शैली रोमनों की थी, वही ब्रिटनों ने अपने पड़ोसियों के लिये अपनाई। यही किलों के कील गाढ़ने का वक़्त था। ब्रिटन, नोर्मेन आदि जहाँ आक्रमण करते, वहीं किले बना देते, ये किले उनकी सैनिक छावनियाँ थे, आरंभ में ये छावनियाँ लकड़ी की बनी होती थीं, जिन्हें पहाड़ियों या ऊँचे स्थानों पर बनाया जाता था, लेकिन ज़्यादातर स्थानीय लोगों से मुठभेड़ के बाद इन्हें जला दिया जाता था, तो पत्थर की मज़बूत सीमा चौकी बना दी जाने लगी। सुरक्षा के लिये नए-नए इतज़ाम जैसे कि किले के आस-पास प्राकृतिक या कृत्रिम झील, विशाल दरवाज़ें, दुहरी दीवारें, गुप्त मार्ग आदि का उपयोग होने लगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
समय के साथ किला जीतना किसी राज्य को जीतने का प्रतीक बन गया।

एडिनबरा का किला भी बेहद मज़बूत किला माना जाता है, यह किला ज्वालामुखी के ठंडे होने पर बनी पहाड़ी के मुहाने पर बना है। यूरोपीय इतिहास के अनुरूप इस जगह के पहले पहल बाशिंदे रोमन ही रहे हैं, ऐसा माना जाता है, जिन्होंने ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में छावनी की नींव रखी थी, लेकिन यह भी संभव है कि इससे पहले यहाँ के आदिवासियों ने डेरा जमाया हो। जो भी हो, स्कॉटलैंड के स्वतंत्रता युद्ध में इस किले का उपयोग किया गया। स्कॉटलैंड के महान स्वतंत्रता सेनानी William Wallace की मूर्ति बड़े सम्मान के साथ आज तक लगी है। William Wallace के किस्से स्कॉटियों की ज़बान और जीवन से इतने जुड़े हैं कि वे इस गौरव पुरुष को भुला ही नहीं सकते। William Wallace ने सबसे पहले फ्रीडम का अर्थ बताया था। उन्होंने यह भी सिखाया कि युद्ध केवल बहादुरी से नहीं, बल्कि दिमाग से लड़ा जाता है। ऑस्कर जीतने वाली ब्रेवहार्ट फिल्म का महत्वपूर्ण वाक्य है, इतिहास उन्होंने लिखा है जो आतयायी रहे, इसलिये नए इतिहास की जरूरत है। William Wallace की स्वतंत्रता की चिंगारी काफ़ी वक़्त तक चली। ब्रिटेन राज ने उनके शरीर के चार टुकड़े किये और देश के चारों कोनों में टाँग दिये, सिर लंदन टावर पर लटकाया गया, लेकिन वे आज तक स्कॉटलैंड के सबसे बड़े हीरो हैं।

स्वतंत्रता के बाद किला स्कॉटिश राजाओं के कब्जे में आया, लेकिन राजमहल की राजनीति भी चालू रही। 15 वीं सदी में फिर से अंग्रेजों ने चढ़ाई की, लेकिन कामयाब नहीं हुए तो William Crichton को Keeper of Edinburgh Castle बनाया गया। लेकिन राजनयिक कूटनीतियाँ, यह किला उस घटना को भी याद करता है, जिसे ब्लैक डिनर कहा जाता है, दस साल आयु वाले James II की उपस्थिति में William Douglas, 6th Earl of Douglas, और उनके छोटे भाई David को भोजन पर आमन्त्रित किया गया। 15 वीं सदी में यह किला युद्ध के सामान निर्माण की फैक्ट्री का काम भी करता रहा

एडिनबर्ग में जो कहानी बार-बार सुनाई दी थी, वह रानी मैरी की थी, King James V (1513-1542)पाँच साल की आयु में ही किले में सुरक्षा की दृष्टि से रखे गये। 25 वर्ष की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई, उस वक्त उनकी बेटी Mary महज सात दिन की थी, जिसका राजतिलक कर दिया गया और फ्रांसिसी माँ के घर पेरिस भेज दिया गया। तब तक उनकी माँ मैरी का राजकाज संभालती रहीं। 16 साल की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उम्र में उनका विवाह Dauphin of France, Francis से हो गया दो साल बाद ही वे विधवा हो गईं.। इस बीच अंग्रेज आक्रमण करते रहे, और विरोधियों के सिर उठने शुरू हो गये। किशोर रानी मैरी का विवाह कैथोलिक धर्म से हुआ, तो स्कॉटलैंड के प्रोटेस्टेंट अनुयायी राजनयिकों में विरोध के स्वर उठे। वापिस आने पर उनका विवाह अपने रिश्तेदार Henry Stuart, Lord Darnley से किया गया, जो पूरी तरह से असफल रहा। जब मैं हॉलीरूड राजमहल देखने गई, तो वह कमरा दिखाया गया, जहाँ मैरी अपनी सहेलियों के साथ ताश खेल रही थीं, उनके साथ उनके बचपन का फ्रांसिसी मित्र भी था। मैरी के पति ने मैरी को बालों से पकड़ कर खींचा और बड़े कमरे तक ले आये, जहाँ उन्हें तब तक पीटा गया, जब तक कि वे बेहोश ना हो गईं। उस वक़्त मैरी गर्भवती थी और अपने पूरे समय से थी। रजनीति के घिनौने इतिहास में औरत को रानी होने पर भी नहीं छोड़ा जाता...।

कुछ वक़्त बाद राजभवन में आग लग गई और हेनरी मृत पाये गए। मैरी ने James Hepburn, 4th Earl-Bothwell से विवाह कर लिया तो राजनयिकों ने जेम्स को हेनरी का हत्यारा मानते हुए मैरी को मारना चाहा। मैरी का इंग्लैंड से भी नाता था, क्योंकि उस वक़्त अधिकतर राजघराने फ्रांस की राजयुवतियों से विवाह करना अच्छा मानते थे, फलस्वरूप हर देश की रानियों में कोई ना कोई रक्त संबंध होता था। अंतिम दिनों में मैरी इंग्लैंड की जेल में रहीं... कई राजनैतिक उठापटक के बाद उन्हें फाँसी की सजा दी गई।

एडिनबर्ग किले की खासियत यह है कि यहाँ हम ना केवल किला देखते हैं, बल्कि उस काल के इतिहास से भी परिचित होते हैं। यहाँ छोटे-छोटे म्यूज़ियम बना दिये गये हैं, जहाँ राजनैतिक कहानियों को मिट्टी के मॉडलों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

बेहद सर्दी थी, इसलिये लोग इन म्यूज़ियमों में घुसना पसंद भी कर रहे थे। पाइप संगीत स्कॉटियों की खासियत है, और एक पूरा कमरा इन बैगपाइपर कलाकारों की कहानी वीडियो और मॉडलों द्वारा बता रहा था। कथा की यह प्रस्तुति एक आम आदमी को इतिहास समझने में मदद करती है। बैगपाइपरों को बाद में ब्रिटिश सेना में बहुत महत्व दिया गया था, ये सेना के आगे-आगे चलते थे, मैं समझ नहीं पाती कि इतना मीठा संगीत आक्रोश कैसे जगाता होगा? जो भी हो, उनकी प्रस्तुति आज भी शानदार लगती है।

म्यूज़ियम के बाहर आते ही हवा तीर-सी लगती है, लेकिन स्कूली बच्चे पंक्तियों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
में खड़े दिखाई दे रहे हैं, इस नन्ही आयु से इतिहास को समझना अगली पौध के लिये आवश्यक भी है, जो हम नहीं जानते...।

एक म्यूज़ियम में वह खदान है, जहाँ स्काटिश मुकुट छिपाया गया था; किसी आक्रमण के वक़्त यह मुकुट कोयलों में दबा दिया गया, जिससे आक्रमणकारियों के हाथ ना लग जाये। एक पूरे म्यूज़ियम में राजा के कर्मचारियों, मुकुट निर्माताओं आदि की प्रस्तुति के लिये एक पूरा एक कक्ष है। राजकीय परंपरा देखने में जितनी भव्य लगती है, हकीकत में आमजन के लिये उतनी ही कठिन होती है। पूरा का पूरा समाज मक्खियों की तरह रानी मक्खी यानी कि राजनीति के लिये मधु सर्जन में रत हो जाता है।

सबसे भयानक जगह थी, वे कारागार, जिनमें दुर्दांत कैदी रखे जाते थे, सीलन भरी काल कोठरियों में चैन से बाँधकर जानवरों से बदतर स्थिति में। इसके बाद वे कारागार भी दिखाये जाते हैं, जहाँ राजनेतिक कैदी रखे गये, खास तौर से अमेरिकन नौसैनिक। यह कैद अमेरिका कों स्वतंत्र राज्य देने की स्थिति से पूर्व का था। इस कैद में कैदियों के सोने के लिये झूले से लटके थे, उनके मनोरंजन के लिये चौसर आदि भी बिछे रखे थे। उनकी खुराक का चार्ट दीवार पर टंगा था, और मजेदार बात यह थी कि कई काठ खण्डों पर कैदियों ने अपने जहाजों के चित्र बड़ी ख़ूबसूरती से खोद-खोद कर उकेरे हुए थे। क्रूरता और कला का भी नाता हो सकता है, कहा जाता था कि ये कैदी खूब हल्ला गुल्ला करते और समय बिताने के लिये शर्त रखते, कभी-कभी तो नाली से निकले चूहे पर भी शर्त लग जाती कि वह दाहिनी तरह मुड़ेगा या बाईं तरफ। सभी म्यूज़ियमों में साउंड लाइट और प्रजेंटेशन के माध्यम से बड़ी अच्छी प्रस्तुति है, जिससे रुचि खत्म नहीं होती। अंत में सिविल जेल भी थी, जिसमें कभी नागरिक तो कभी कर्मचारी रखे जाते थे, यहाँ क्रूरता की मात्रा कम थी। किले के सभी म्यूज़ियमों में घूमते चार बज गये थे, इसलिये सबसे ऊँची दीवार पर चढ़ने की जगह बाहर निकलना ठीक समझा। कुछ देर तक किले से शहर को निहार में किले से नीचे उतरने लगी और दूकानों आदि को देखती हुई ऊन के कारखाने में घुस गई। यह संग्रहालय भी लग रहा था। यहाँ ऊनी कपड़े की खरीददारी भी की जा सकती है। एडिनबर्ग वुलन मिल के लिये भी बड़ा प्रसिद्ध है। दुनिया के सबसे महंगे ऊन cashmere wool की यहाँ अनेक दूकाने हैं। स्कॉटिश ऊनी कपड़े काफी गरम भी होते हैं। किले से उतरते ही भव्य सिटी सेंटर आ जाता है, और लोगों का हुजूम, यह यात्रा का मौसम नहीं, फिर भी रेलमपेल है, सीजन में क्या होता होगा...!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं अतीत की क्रूरता की निशानी किले से नीचे उतर कर आती हूँ, तो बस अड्डे पर मुस्कुराते हुए स्कॉटिश चेहरे मिलते हैं। हर कोई सहायता के लिये तत्पर दिखता है। मेरे हाथ में गेस्ट हाउस का कार्ड है, जिसमें पता और नक्शा है, मैं सोच ही रही थी कि क्या करूँ, तभी बस कंडेक्टर ने पूछा कि क्या मैं सहायता कर सकता हूँ...। मैं कार्ड दिखा कर पूछती हूँ तो वे बताते है मैंक्स बस सर्विस की गाड़ी इस स्थान के करीब ब्रेड स्ट्रीट तक जायेगी, आखिरी गाड़ी पाँच बीस पर है, आप उससे चले जाए, वहाँ से पैदल जाया जा सकता हैं, मैंने घड़ी देखी पाँच बज गये हैं, हालाँकि मैं अपने टिकिट से शहर का टूर ले सकती हूँ, लेकिन फिर ठिकाने पर लौटने में समस्या होगी।

पाँच बीस की टूर गाड़ी पूरी खाली है, पर कंडेक्टर और गाइड दोनों महिलाएं हैं। जब मैं ब्रेड स्ट्रीट लौटने की बात कहती हूँ, तो गाइड निराशा से कहती है कि आज तो गाड़ी खाली ही जायेगी, आप चाहें तो आपका टूर करवा दें, लेकिन यह आखिरी गाड़ी है। मैं कोई रिस्क नहीं लेना चाहती, मैंना कहा कल टूर करवा देना। जब उन्हें मालूम पड़ता है कि मैं इंडिया से हूँ तो कंडेक्टर लड़की कहती है कि वह एक बार गोल्डन टूर ट्रैवल के साथ इंडिया गई थी। मैंने पूछा कि कैसा लगा, तो वह बताती है कि- बहुत अलग है, सपने जैसा लगता है... मैंने कहा की भीड़ भाड़ के कारण?

मुझे तो लंदन भी भीड़भाड़ वाला लगता है, तो इंडिया की बात अलग है, फिर भी काफी अलग है दुनिया से...।

आज की स्थिति में स्कॉटलैंड काफी महत्वपूर्ण है, चिकित्सा के क्षेत्र में एडिनबर्ग ने जो दुनिया को दिया वह अविस्मरणीय है, James Young Simpson द्वारा एनिस्थिसिया की जो देन है, वह आधुनिक मेडिकल साइंस को बहुत बड़ी देन मानी जाती है। Sir Ronald Ross ने मलेरिया को मच्छर से जोड़ा। इसके अतिरिक्त इन्सुलिन, पेनिसिलिन के आविष्कार को भी स्कॉटिश देन मानी जाती है। विश्व की नामी हस्तियाँ एडिनबर्ग में रह चुकी हैं।

किले को छोड़ दें, तो यह शहर सात पहाड़ियों पर बसा है। मध्यकाल में तो यह शहर बड़ा व्यवसायिक केन्द्र था, सामरिक शक्ति का केन्द्र भी था। Edinburgh International Book Festival, the Science Festival, Film Festival and Jazz and Blues Festival आदि विश्व प्रसिद्ध हैं। यूनेस्को ने इसे 2004 में सिटी ऑफ़ लिटरेचर घोषित कर दिया था।

1707 में Treaty of Union के अनुसार एडिनबर्ग ग्रेट ब्रिटेन का हिस्सा बन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गया था, 1997 में इसे पूर्ण स्वतंत्रता मिलनी थी, लेकिन इस वक़्त स्कॉटिश पार्लियामेंट तो है, लेकिन पूर्ण स्वतंत्रता नहीं है। हालाँकि लंदन के बाद यह सबसे महत्वपूर्ण शहर है। 2013 में जनमत के आधार पर स्वतंत्रता की स्थिति का निर्धारण होगा। मैं गाइड से इसके बाबत पूछती हूँ कि स्कॉटिश लोग क्या चाहते हैं। जवाब सुन आश्चर्य होता है कि जन सामान्य स्वतंत्रता के पक्ष में है ही नहीं। अधिकतर लोग विपक्ष में मत देंगे, क्योंकि उन्हें डर है कि स्कॉटलैंड का राजनैतिक नेतृत्व ठीक नहीं हुआ, तो जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जायेगा।

ब्रेड स्ट्रीट आने पर मैं उतर गई और पूछते-पूछते अपने डेरे पहुँच गई, अभी उजाला था, इसलिये देख पाई कि जहाँ मेरा गेस्ट हउस था, उस गली का नाम इंडिया लेन लिखा हुआ था, कई इंडियन स्टोर भी थे, पंजाबी वेषभूषा में एक-दो महिलाएं भी दिखाई दीं। दो दूकानों में पंजाबी कपड़े लटके दिखाई दिये, मैं रात को खाने के लिये कुछ फल लेने स्टोर में घुसी तो समोसे भी दिखे। कुछ कीवी खरीदकर डेरे पहुँची, तो कोई खटपट नहीं, लगा ही नहीं कि कोई भीतर है... मैं अपने कमरे जाकर बीबीसी खोल कर लेट गई...।

पहाड़ों पर जमकर बर्फ़बारी दिखाई जा रही थी, कई भेड़े बर्फ़बारी में दब गईं। लोग पारंपरिक रीति से बाँस खोद कर अपनी भेड़ों को खोज रहे थे।

एडिनबरा में दूसरा दिन

आज दूसरा दिन है, एक अजीब-सा आत्मविश्वास आ गया है। बहुत आत्मीय है यह शहर, हर कोई इतनी सहजता से मिलता है कि ना अकेले रहना खल रहा है, ना अकेले घूमना, रास्ते भी समझ आने लगे हैं, कितनी सीधी सड़कें होती हैं ना यहाँ, ना ज़्यादा मुड़ाव ना झुकाव... हर गली का कोई ना कोई नाम, मुझे जयपुर का पुराना शहर याद आया।

आज मुझे सबसे पहले राजमहल जाना था, जिसे पैलेस ऑफ़ हॉलीरूड के नाम से जाना जाता है, इसलिये वहाँ तक के रास्ते को गाइड की बातें सुनते हुए पार किया। बस डबल डेकर होती है, और गाइड अधिकतर ऊपर के हिस्से में बैठ कर माइक में बोलता है। सर्दी के मारे पर्यटक बेहद कम थे, और मेरे लिये अच्छा ही था, क्योंकि बेहद भीड़ वाले पर्यटन क्षेत्र मुझे परेशान करते हैं। हॉलीरूड पैलेस के दो हिस्से हैं,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
एक बहुत पुराना वाला, जो अभी भग्नावेश स्थिति में है और दूसरा हिस्सा जो आज भी चालू स्थिति में है, इंग्लैंड की महारानी अब भी गर्मियों की छुट्टियाँ बिताने कम से कम दो महिने के लिये आती हैं, तब यह हिस्सा पर्यटकों के लिये बंद कर दिया जाता है। पुराना हिस्सा Hollirood Abbey चर्च का बचा हुआ भग्नावेश माना जाता है। इस हिस्से को देख कर ही पता चल जाता है कि मूल रूप में यह इमारत कितनी विशाल और ख़ूबसूरत रही होगी। इसका निर्माण King David I ने 1128 में Augustinian Abby के रूप में किया था। सन 1500 तक ये स्कॉटलैंड की सबसे बड़ी Abby के रूप में मशहूर थी। डेविड ने कम से कम दर्जन से भी ज़्यादा mon-esteries का निर्माण किया था। हम लोग इस Abby के गर्भगृह में खड़े हो दीवारों की भव्यता को महसूस कर रहे थे। जब ये अपने असली शानशौकत में थी, तो कितनी ख़ूबसूरत रही होगी। इस वक़्त इसकी छतें टूटी हैं, कहा जाता है कि पहले जब छतें थीं, तब पानी की निकासी के लिये कुछ वैसे ही पशुमुख की आकृतियों से पानी की निकासी का इंतज़ाम था जैसा कि हमारे यहाँ मंदिरों में वराहमुखों से निकासी होती है।

राजकीयता और प्रतिबद्धता घुटन को जन्म देती है, लेकिन यही घुटन कला को विस्तार देती है। घुटन से उपजी कला और जीवन संघर्ष से उपजी कला में बेहद अंतर होता है। एक में प्रत्येक रेखा प्रत्येक बिन्दु वृत्त के भीतर कैद होती है, तो दूसरे में असीमित। मैं चाहते हुए भी राजमहल का आनंद नहीं उठा पा रही थी, लेकिन नियमानुसार हर कमरा पार करना जरूरी था, हर कमरे की कहानी थी, जिसे हम रिकार्डेड सुन सकते थे। जब वह कमरा आया जहाँ मैरी रानी अपने मित्रों के साथ ताश खेला करती, तो जो कहानी सुनाई गई उससे मन खिन्न हो गया। पति ने किस तरह रानी मैरी की पिटाई की। मैरी की कहानी सुन कर मेरा मन आगे जाने को बिलकुल नहीं था, मैरी की चीखें मेरा पीछा कर रही थीं, राजगद्दी बचाने के लिये सिंहासन पर बैठी एक युवती को भी अपमान और प्रताड़ना सहनी पड़ती है, तो सामान्य जन की क्या बिसात?

यात्रियों की संख्या काफी कम थी, क्योंकि ऐसी सर्दी बहुत वर्षों के बाद पड़ी है। राजमहल से बाहर निकलते ही ठिठुरन महसूस होने लगी। दो विकल्प थे, या तो किसी बस का सहारा लो, या फिर सामने की नई पार्लियामेंट बिल्डिंग में घुस जाओ। यूरोपीय देशों में प्रवेश फ़ीस बहुत ज़्यादा होती है और मेरा टिकिट तीन दिन के लिये रियायत वाला था। सड़क पर मरम्मत का काम चल रहा था, अक्सर बर्फ़बारी के बाद सड़कों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
की मरम्मत जरूरी हो जाती है। मैं असमंजस में थी कि एक दरबान ने मेरी समस्या हल की- आप पार्लियामेंट बिल्डिंग ज़रूर देखें, फ्री एंट्री है। सुनकर मैं तुरंत प्रवेश द्वार की ओर बढ़ी। अच्छी तरह से तलाशी ली जा रही थी। भीतर जाते ही बड़े-बड़े अहाते, बैठकें दिखाई देने लगीं। Garden Lobby तो बेहद ख़ूबसूरत थी, छत पर पत्तियों की आकृति के झरोखे थे। मैं सीधे पार्लियामेंट हाउस की ओर बढ़ी। हाउस खाली था, लेकिन विचित्र आकृतियाँ थी। Enric Miralles द्वारा बनाई ये इमारत आरंभ से विवाद का विषय रही है। एक तो इस बिल्डिंग में चीन का पत्थर लगवाया गया, जबकि स्कॉटलैंड का पत्थर भी अच्छा माना जाता है। ऊपर से इसे बनवाने में काफ़ी वक़्त लगा और लागत भी जबरदस्त आई £414 million।

मुझे दो बातों ने प्रभावित किया, पहली यह कि सारी कुर्सियाँ और खिड़कियाँ साइड में बंधे पर्दे के आकार की थीं, जो इस बात का द्योतक हैं कि राजनयिकों, विचारकों को नये विचारों की हवा भीतर लाने के लिए दिमाग की खिड़की के पर्दे खोल कर रखने चाहिये। दूसरी बात यह कि यह इमारत स्वतंत्र स्कॉटलैंड को कल्पना में रख कर बनाई गई थी, जैसा कि Enric Malles ने स्वयं कहा है।

"We don't want to forget that the Scottish Parliament will be in Edinburgh, but will belong to Scotland, to the Scottish land. The Parliament should be able to reflect the land it represents. The building should arise from the sloping base of Arthur's Seat and arrive into the city almost surging out of the rock." Enric Miralles, 1999

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे जनता के लिये खुला रखा गया है। यही लोकतंत्र की विजय है।

मेरी लिस्ट में अगला पड़ाव था, रायल याच, यानी की राजकीय जहाज, मेरा विचार था कि मुझे जहाज यात्रा करने का मौका मिलेगा, लेकिन यह भी लंदन के प्रिंस का व्यक्तिगत विशाल जहाज है, जिसे पर्यटन के लिये खोल दिया गया है। बाहर अभी भी बर्फ़ पड़ रही थी। मैं यूरोपीय लोगों की राजभक्ति को देखकर अचंभित हूँ, जहाँ राजकीयता आती है, वे बेहद संजीदा हो जाते हैं। जहाज में अधिकतर लोग बड़े आदर से हर चीज़ को देख रहे थे, जैसे कि राजकुमार की खाने की मेज़, खानसामों की वेशभूषा, राजकुमार की वेशभूषा, चांदी के बर्तन आदि आदि, एक कक्ष से दूसरे कक्ष तक यही सब दिखाई दिया। मुझे तो कपड़े इस्त्री करने की विशेष मेज़ के अलावा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मध्यम श्रेणियों में डॉक्टर, मजिस्ट्रेट, लेखक आदि सभ्य समझे जाने वाले लोग रहते थे और उनके ऊपर दूकानदार, नृत्य शिक्षक, क्लर्क आदि। सबसे ऊपर की बुखारी चौकीदार आदि को दी जाती थी, हालाँकि सबके लिए समान सीढ़ी का प्रयोग होता था। सामाजिक चेतना की दृष्टि से इसकी सराहना की जा सकती है, लेकिन यदि ध्यान दिया जाये तो सामाजिक असामनता को बड़ी चतुराई से उपयोग में बदल दिया गया था। हर ज़रूरत की मदद घर में या आस-पास मिल जाती, ऊपरी बुखारी से घर की रखवाली भी हो जाती। उन दिनों रात के दस बजे के बाद सड़क से निकलना मुश्किल था, दस बजते ही मकानों की खिड़कियाँ खुलतीं और लू कहते हुए घर का कूड़ा-करकट, गंदा पानी खिड़की से गिरा दिया जाता था। पुरानी फिल्मों में इस तरह के दृश्य दिखाई देते हैं। Lord Provost George Drummond. Elliot ने इस तरह के दृश्यों को दर्शाया है-

Placed upon a ridge of a hill, it admits but of one good street, running from east to west, and even this is tolerably accessible only from one quarter. The narrow lanes leading to the north and south, by reason of their steepness, narrowness and dirtiness, can only be considered as so many unavoidable nuances. Confined by the small compass of the walls, and the narrow limits of the royalty, which scarcely extends beyond the walls, the houses stand more crowded than in any other town in Europe, and are built to a height that is almost incredible

उसके उपरांत स्कॉटलैंड का नया टाउन बनना शुरू हो गया और नगर पूरी तरह दो भागों में विभाजित हो गया, पुराना टाउन मतलब ग़रीब लोग, नया टाउन मतलब अमीर सभ्य लोग।

मैंने बीच में रोक कर गाइड से वही सवाल किया, आप स्कॉटलैंड की स्वतंत्रता को वोट देंगे या फिर ब्रिटेन से जुड़े रहना पसन्द करेंगे। यह सवाल सुन वह कुछ अचकचा गया। फिर कहने लगा- 'देखो हम इंडिया-पाकिस्तान नहीं होना चाहते, उसका मतलब साफ़ था कि ब्रिटेन के छोड़ने पर पाक अविकसित ही रह गया। फिर कहने लगा कि फायदा क्या है स्वतंत्रता का? ये केवल रोमानटिज़्म है हम वैश्विक नागरिक हैं।' फिर अचानक उसने पूछा, 'आप कहाँ की हैं?' मैंने कहा कि इंडिया की, तो पूछने लगा, क्या आप स्वतंत्रता से खुश हैं? मेरा जवाब था कि सौ फीसदी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुश हूँ, तो कहने लगा कि क्या आप नहीं सोचतीं कि ब्रिटिश शासन रहता तो देश ज़्यादा तरक्की करता?

मैं उसे निराश नहीं करना चाहती थी, कि यदि ब्रिटिश शासन रहता तो हममे से अधिकतर आपके जैसे गाइड, बस ड्राइवर या क्लर्क रहते, जो इंजीनियरों की खेप हमने बोई है, तैयार नहीं होती।बातें करते हुए हम लोग नगर परिक्रमा पूरी कर चुके थे। आज के दिन मैं स्ट्रीट वॉक करना चाहती थी। सड़क पर चलना आसान नहीं था, साथ में कड़ाके की ठंड थी, बस में तो हवा से बचत हो जाती है, लेकिन सड़कें तो खाली होती हैं, तो हवा का कोई रुकाव नहीं।

मैंने एडिनबरा आर्किटेक्चर कॉलेज देखा, तो उसमें चली गई, लेकिन यूरोपीय देशों में शिक्षण संस्थानों में बहुत चौकसी होती है, अनजान व्यक्ति का प्रवेश वर्जित है, तो मैं अहाते की कलाकृतियों को देखकर लौट आई। बाहर निकली, तो एक ठेला देखा, जिस पर जर्मन के बर्गर का बोर्ड लगा था, एक हँसमुख नौजवान बकायदा बर्तन ठनठना कर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा था, जैसा कि हमारे यहाँ पाव रोटी बेचने वाले ठेलेवाले तवे कढ़ाई ठनठनाते हैं, मुझे देखकर उसने अंग्रेज़ी में कहा कि बहुत अच्छे बर्गर हैं, दाम भी ज़्यादा नहीं, खाकर देखें। मैं रुककर देखने लगी। अपने पेट की स्थिति देखकर मांसाहारी भोजन से बच रही थी। उसने मुझे असमंजस में देख कर कहा- एक ट्राई करो, अच्छा लगेगा। मैं लालायित हो गई, बड़ा लालच उसके बारे में जानने का भी था। मैंने पूछा कि स्कॉटी हो क्या? तो कहने लगा- नहीं जर्मन का हूँ।

तो फिर यहाँ क्या कर रहे हो?

वह बोला कि एमबीए किया है एडिनबरा से ही, अब दो उपाय है या तो पीएचडी करूँ या फिर अपना व्यापार शुरू करूँ, तो यह मेरा व्यापार...।

मैं दंग थी, वह कहने लगा- हाँ बहुत अच्छा है यह। ट्यूरिस्ट सीजन में पूरे साल की कमाई हो जाती है। मैं ये सॉस ख़ुद जर्मन तरीके से बनाता हूँ। सॉसेज जर्मनी से मँगवाता हूँ, लोगों को बेहद पसंद आते हैं। हो सकता है कि कुछ समय में मेरे पास अपनी दूकान हो, फिर अपनी फूड चेन हो... हू नोज़? उसने बड़े दार्शनिक होते हुए जवाब दिया।

हालाँकि मैंने पूरे शहर में भारतीय नौजवान देखे, जो मेक्डोनल्ड या सब वे में पढ़ाई के साथ नौकरी भी करते हैं, लेकिन एमबीए ठेले वाले को पहली दफ़े देखा। मैंने कहा एक पोज और वह बड़े शान से कमर पर हाथ रख कर खड़ा हो गया। मैंने उससे एक बर्गर पैक करवाया और आगे चल दी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब मैं एडिनबरा के म्यूज़ियम में घुस गई, दरअसल यहाँ आने की वजह ठंड से बचना था, इतने कपड़े लादने पर भी कंपकंपी नहीं रुक रही थी। भीतर आते ही लगा कि सही निर्णय था। यह जगह गहमागहमी से भरी, लगता है कि आधा शहर यहाँ है। ख़ासतौर से बच्चे वाले लोग, एक तो यहाँ कोई टिकिट नहीं, दूसरे बच्चों के लिये ख़ास इंतज़ाम, जैसे कि उनके लिये चित्र बनाने के लिए पेपर पेंसिल, क्राफ़्ट कक्ष और खेल के छोटे-छोटे खिलौने।

हर देश की कला और संस्कृति के नमूने यहाँ रखे गये थे। मैं बस एक के बाद एक कक्ष में घूमती हुई कलाकृतियों का जायज़ा लेती रही, विचित्र घ़ंटेघर, आकृतियाँ, मिस्र की ममी से लेकर विंटेज गाड़ियाँ... ओह! दिमाग में कितना रखा जा सकता है भई। मुझे और भी घूमना था, भूख भी लगने लगी थी, बेटी ने बताया था कि द पीपल्स स्टोरी नामक जगह ज़रूर देखना, मैं इसी जगह को खोजने बाहर निकली, अन्ततः इस म्यूज़ियम में आ पहुँची। यह भी अपने तरीके का संग्रहालय है, जो आम आदमी की कथा कहती है। यहाँ उस काल की कहानी है, जब बेहद ग़रीबी में आम आदमी रहते थे और जीविका के संघर्ष करते थे। एक-एक चित्र या प्रतिमा के साथ लिखी कथा पढ़ते-पढ़ते काफ़ी वक़्त बीत गया। कसकर भूख लगी, तो मुझे जर्मन बर्गर की याद आई, मैं म्यूज़ियम से बाहर निकल कर एक खाली बेंच में बैठ कर खाने लगी। भूख और ठंड में जंग छिड़ी थी, भूख कहती थी कि रुको मत, खाये जाओ, ठंड कहती बस करो, कहीं अंदर जाओ, वास्तव में बर्गर स्वादिष्ट था, और बड़ा भी। बगल में एक बालकनी दिखाई दे रही थी, कहा जाता है कि यहीं से स्कॉटलैंड की आज़ादी का आह्वान हुआ था।

सामने एक पीली इमारत थी, जिसका नाम था, म्यूज़ियम ऑफ़ एडिनबरा। म्यूज़ियम तो निःशुल्क था, लेकिन एडिनबरा के बारे में फिल्म के दाम देने होते थे। मैं म्यूज़ियम में घुस गई। यह स्कॉटलैंड की युद्ध की कहानी थी, कौन युद्ध का नायक? किस युद्ध में क्या जीता? आदि का विस्तार से वर्णन था। बैगपाइपर के लिये युद्ध की वेशभूषा का महत्व हुआ करता था, लेकिन स्कॉटी धनी केवल दो डॉलर सालाना मुहैया करवाते थे। कहा जाता है कि ड्रेस की मारामारी की वजह से सैनिक किसी ना किसी तरह से वेशभूषा हथियाना चाहते थे। कभी-कभी तो साथी सैनिक के मरने पर पहले उसकी पोशाक हथियाते फिर उसके शव के बारे में सोचते।

युद्ध हमेशा सैनिकों की सहायता से जीते जाते रहे हैं, लेकिन वे ही सबसे ज़्यादा उपेक्षित रहे हैं, युद्ध का इतिहास हर तरीके से कठोर है। शाम होने लगी थी... आज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरा सीजन टिकट खत्म हो चुका था, तो सरकारी बस पकड़नी थी, इसलिए लौटने की जल्दी नहीं थी, सब को विदा जो कहना था, कल फिर सुबह की फ़्लाइट से लौटना है। गेस्टहाउस मालकिन ने अगले दिन के लिये टैक्सी का इंतज़ाम कर दिया था, लेकिन मज़ेदार बात यह थी कि उन्होंने मुझसे कहा कि चाबी मेज़ पर रख कर दरवाज़ा बंद करके चली जाऊँ यानी कि विदा के वक़्त कोई नहीं होगा गेस्टहाउस में।

रात को सामान पैक करके लेट गई, लेकिन नींद लेना मुश्किल था, क्योंकि टैक्सी सुबह पाँच बजे आनी थी और यहाँ टैक्सी वाले इंतज़ार नहीं करते। सुबह मैं चार बजे से ही नीचे थी, और साढ़े चार बजते ही सड़क पर खड़ी हो गई, इतनी सुबह, इतनी ठंड में खड़े होना मेरे लिये चमत्कार से कम नहीं था...।

अंतत: टैक्सी ठीक पाँच बजे आ पहुँची...। टैक्सी ड्राइवर भी खूब बातूनी था। किसी छोटे गाँव का था और एडिनबरा में टैक्सी चलाता था। मैंने चलते-चलते उससे भी यही सवाल दागा, स्कॉटलैंड की स्वतंत्रता के लिये वोट करंगे या नहीं ? वह एक क्षण को चुप हुआ फिर बोला- मुझे राजतंत्र में विश्वास है।

हवाईअड्डा आ पहुँचा था, मैं चुपचाप दाम चुका कर उतर गई...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रति सक्सेना

रति सक्सेना कवि, आलोचक, अनुवादक और वेद शोधिका हैं। इनके हिन्दी में पाँच, अंग्रेजी में तीन और मलयालम में एक (अनूदित), एक द्विभाषी कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इतालवी भाषा में भी एक कविता संग्रह और अथर्ववेद की प्रेम कविता का अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। इसके अतिरिक्त इनकी कविताएं, पुस्तक रूप में वियतनामी, इतालवी, आइरिश, स्पेनिश, सरबेरियन और तुर्की आदि अनेक विदेशी भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। मलयालम की कवयित्री बालामणियम्मा को केन्द्र में रख कर लिखी आलोचनात्मक पुस्तक रति सक्सेना का सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। अथर्ववेद को आधार बना कर लिखी पुस्तक 'ए सीड आफ माइण्ड - ए फ्रेश अप्रोच टू अथर्ववेदिक स्टडी' के लिए उन्हें 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र' फेलोशिप मिली। उनके वेदों को आधार बना कर लिखे गए लेख अपने विशेष दृष्टिकोण के कारण पठनीय रहें हैं। हाल ही रति सक्सेना ने पोइट्री थेरोपी पर भी काम किया है, जो अभी प्रकाशाधीन है। देश-विदेश की करीब-करीब सभी भाषाओं में रति सक्सेना की कविताएँ अनूदित हुई हैं। ईरान की Golestaneh नामक पत्रिका में रति सक्सेना की कविताओं और जीवन को लेकर एक विशेष अंक निकाला गया है। रति सक्सेना ने कविता और गद्य की 12 पुस्तकों का मलयालम से हिन्दी में अनुवाद भी किया है जिसमें से अय्यप्पा पणिक्कर की पुस्तक के अनुवाद के लिये उन्हें वर्ष 2000 में केन्द्र साहित्य अकादमी का अवार्ड मिला। रति सक्सेना को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के तीस से अधिक विशिष्ट कवितोत्सवों में आमन्त्रित किया गया जिनमें उन्होंने भाग लिया। रति सक्सेना को अमेरिका के विश्वविद्यालयों में वैदिक पोइट्री पर संवाद करने और कविता पाठन के लिये आमन्त्रित किया गया। आप देश की पहली वेब पत्रिका www.kritya.in नामक द्विभाषी कविता पत्रिका की फाउण्डर और प्रमुख संपादिका हैं, जो पिछले 13 वर्षों से चली आ रही है। कृत्या नामक संस्था जिसकी रति सक्सेना फाउण्डर हैं, 2005 से देश में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के पोइट्री फेस्टीवल आयोजित करती है। वे वैश्विक संघटन वर्ल्ड पोइट्री मूवमेन्ट की फाउण्डर मेम्बर भी हैं। रति सक्सेना दो आर्टिस्ट रेजीडेन्सी वाल बिड्रा, म्यूनिख और चीन के छह सौ साल पुराने गांव ले जू, में भी प्रतिभागी रही हैं। हाल में कविता के लिए राजस्थान पत्रिका का 2019 का पहला पुरस्कार मिला है।

सम्पर्क :

के पी 9/624, वैजयन्त
चेट्टिकुन्नू, मेडिकल कालेज, पो.ऑ.
तिरुवनन्तपुरम, 695011
केरल

फ्लैट नं. 904, शाकम्भरी कोहिनूर रेजीडेन्सी,
रामपुरा रोड, दादा बाड़ी,
मानसरोवर फ्लाई ओवर के पास,
सांगानेर, जयपुर राजस्थान

फोन : +91 9497011105, 047124462434
ईमेल : saxena.rati@gmail.com

ISBN 978-81-944492-6-3
मूल्यः ₹150/-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant